@Qpatrika @qaumipatrika hindi instagram.com/qaumipatrika

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित
सोमवार, 29 सितंम्बर 2025

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 320 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

तमिल एटर विजय की रैली में भगदड़

● 40 की मौतः इनमें 16 महिलाएं, 10 बच्चे

तमिलनाडु के सीएम एमके स्टालिन ने रात को ही हाईलेवल मीटिंग ली

एजेंसी
कोलकाता। तमिलनाडु के करूर में एक्टर विजय की रैली में भगदड़ मच गई। CM स्टालिन के मुताबिक, हादसे में 40 लोगों की मौत हो गई। इनमें 16 महिलाएं और 10 बच्चे शामिल हैं। 51 लोग ICU में भर्ती हैं। मरने वालों की संख्या और बढ़ने की आशंका जताई जा रही है। तमिलनाडु पुलिस के मुताबिक, विजय की रैली के लिए 10 हजार लोगों की परमिशन थी। लेकिन, 1 लाख 20 हजार स्क्वायर फीट एरिया में 50 हजार से ज्यादा लोग जमा हो गए। इस दौरान एक्टर 6 घंटे की देरी से पहुंचे। विजय को बताया गया कि 9 साल की एक बच्ची गुम हो गई थी। उन्होंने मंच से उसे तलाशने की अपील की, जिसके बाद वहां भगदड़ के हालात बन गए। इधर, तमिलनाडु के सीएम एमके स्टालिन ने रात को ही हाईलेवल मीटिंग ली और देर रात को ही करूर पहुचें। स्टालिन ने हॉस्पिटल जाकर मृतकों को श्रद्धांजलि दी और घायलों से मुलाकात की है। उधर, गृह मंत्रालय ने राज्य सरकार से मामले को लेकर रिपोर्ट मांगी है। वहीं, घटना के बाद विजय घायलों से नहीं मिले।

एटर विजय ने मारे गए लोगों के परिवारों को 20 लाख रुपए देने का किया ऐलान

टीवीके के नेता और अभिनेता विजय ने तमिलनाडु के करूर जिले में रैली की थी। इस रैली में भगदड़ मचने से 39 लोगों की मौत हो गई, जिसमें 10 बच्चे और 16 महिलाएं शामिल हैं, जबकि कई लोग घायल हुए हैं। इनमें से कुछ की हालत गंभीर बनी हुई है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर घोषणा करते हुए बताया कि वह इस दुर्घटना में मारे गए लोगों के परिजनों को 20-20 लाख रुपए का मुआवजा देंगे। साथ ही घायलों को भी 2 लाख रुपए देने का ऐलान किया।

भारत ने पाकिस्तान को पांच विकेट से हराया

कौमी पत्रिका
सिम्मी कौर बब्बर

दुबई, 28 सितंबर। भारत ने पाकिस्तान को हराकर एशिया कप का खिताब अपने नाम कर लिया है। भारतीय टीम ने 2023 में वनडे प्रारूप के बाद 2025 में टी20 प्रारूप का एशिया कप जीत लिया है। भारत के लिए तिलक वर्मा ने शानदार प्रदर्शन किया और अंत तक टिके रहकर टीम को अभूतपूर्व जीत दिलाई। भारत ने इस मैच में टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला लिया। भारत ने कुलदीप यादव की शानदार गेंदबाजी की मदद से पाकिस्तान की पारी 19.1 ओवर में 146 रन पर ढेर कर दी। लक्ष्य का पीछा करते हुए तिलक ने 53 गेंदों पर तीन चौकों और चार छक्कों की मदद से नाबाद 69 रन बनाए जिसके दम पर भारत ने 19.4 ओवर में पांच विकेट पर 150 रन बनाकर मैच अपने नाम किया। भारत के लिए जीत का चौका रिंकू सिंह ने लगाया। रिंकू के चौका लगाते ही ड्रेसिंग रूम में भारतीय सदस्य और मैदान पर दर्शक खुशी से झूम उठे। मुख्य कोच गौतम गंभीर भी अपना जोश नियंत्रण में नहीं रख सके। जूझारू पारी खेलने वाले तिलक ने खुशी में बल्ला लहराया और पाकिस्तान के खिलाड़ी एक बार फिर मुंह लटका कर खड़े रहे।

भारत को शिवम दुबे के रूप में पांचवां झटका लगा है। शिवम 22 गेंदों पर दो चौकों और दो छक्कों की मदद से 33 रन बनाकर आउट हुए। भारत को अब जीत के लिए छह गेंदों पर 10 रनों की जरूरत है। पाकिस्तान के खिलाफ एशिया कप के फाइनल में जीत के लिए भारत को 12 गेंदों पर 17 रन चाहिए। भारत ने लक्ष्य का पीछा करते हुए 130 रनों का आंकड़ा छू लिया है। तिलक और दुबे के बीच पांचवें विकेट के लिए अर्धशतकीय साझेदारी पूरी हो गई है। तिलक वर्मा ने 41 गेंद पर टी20 अंतरराष्ट्रीय करियर का चौथा अर्धशतक लगाया। भारत का स्कोर चार विकेट पर 111 रन है। टीम इंडिया को जीत के लिए अब 24 गेंद में 36 रन की जरूरत है। पाकिस्तान के खिलाफ लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत ने 100 रनों का आंकड़ा छू लिया है। तिलक वर्मा अर्धशतक लगाने के करीब हैं। पाकिस्तान को अब तक चार सफलता मिली है। अबरार अहमद ने संजू सैमसन को आउट कर भारत को चौथा झटका दिया है। सैमसन 21 गेंदों पर दो चौकों और एक छक्के की मदद से 24 रन बनाकर आउट हुए। इसके साथ ही सैमसन और तिलक के बीच हुई अर्धशतकीय साझेदारी का अंत हो गया। भारत ने 77 रन के स्कोर पर चौथा विकेट गंवाया है। तिलक वर्मा और संजू सैमसन के बीच चौथे विकेट के लिए अर्धशतकीय साझेदारी पूरी हो गई है। पाकिस्तान ने एशिया कप के फाइनल मुकाबले में भारत को शुरुआती झटके दिए थे, लेकिन तिलक और सैमसन ने मोर्चा संभाला और टीम को मुश्किल से उबारने की कोशिश की है। पाकिस्तान के खिलाफ लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत ने 50 रनों का आंकड़ा छू लिया है। भारत ने जल्द ही तीन विकेट गंवा दिए थे, लेकिन तिलक और सैमसन ने सधी हुई बल्लेबाजी कर टीम को संभालने की कोशिश की है। पाकिस्तान के खिलाफ लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत की पारी लड़खड़ा गई है। शुभमन गिल 10 गेंदों पर एक चौके की मदद से 12 रन बनाकर आउट हो गए हैं। भारत और पाकिस्तान के बीच एशिया कप का मुकाबला स्टेडियम की फ्लड लाइट्स में दिक्कत के कारण रुक गया।

दिल्ली में फिर बम धमाके की धमकी

● एयरपोर्ट और स्कूलों को भेजा गया मेल

एजेंसी
नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली एक बार फिर बम धमाके की धमकी से सहम गई। रविवार को दिल्ली एयरपोर्ट, स्कूलों और कई संस्थानों को ईमेल के जरिये बम रखने की धमकी दी गई।

बम निरोधक दस्ते (बीडीएस) और डॉग स्क्वॉड को मौके पर भेजा गया। एयरपोर्ट पर यात्रियों की आवाजाही पर नजर रखी गई। स्कूलों व संस्थानों से बच्चों और स्टाफ को सुरक्षित बाहर निकाला गया। हालांकि, अब तक की जांच में सुरक्षा एजेंसियों को कोई संदिग्ध वस्तु नहीं मिली है। दिल्ली पुलिस को अब तक की जांच में कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला। पुलिस अब यह जांच कर रही है कि मेल कहां से भेजा गया है।

बता दें कि पिछले कुछ महीनों में

दिल्ली में इस तरह के बम धमाके की झूठी धमकियों के कई मामले सामने आ चुके हैं। इससे पहले, 20 सितंबर को दिल्ली के कई स्कूलों को फिर से बम से उड़ाने की धमकी दी गई। धमकी मिलने वाले स्कूलों में नजफगढ़ का कृष्णा मॉडल पब्लिक स्कूल, कुतुब मीनार स्थित सर्वोदय सीनियर सेकेंडरी स्कूल, और द्वारका का डीपीएस स्कूल शामिल थे। धमकी मिलने के तुरंत बाद दिल्ली पुलिस और बम निरोधक दस्ते ने सभी स्कूलों को खाली कराया और परिसरों में गहन तलाशी अभियान चलाया। इस दौरान किसी भी स्कूल से कोई संदिग्ध वस्तु बरामद नहीं हुई।

● इसी तरह, 13 सितंबर को दिल्ली के शालीमार बाग, द्वारका और साकेत स्थित मैक्स के तीन अस्पतालों को बम से उड़ाने की धमकी मिली।

जम्मू-कश्मीर एलओसी पर घुसपैठ की कोशिश नाकाम, दो आतंकी ढेर

एजेंसी
श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में लाइन ऑफ कंट्रोल (एलओसी) पर रविवार को संयुक्त सुरक्षा बलों ने घुसपैठ की एक कोशिश को नाकाम करते हुए दो आतंकवादियों को मार गिराया। सूत्रों ने बताया कि इलाके में ऑपरेशन अभी भी जारी है। एलओसी पर संदिग्ध गतिविधि दिखने के बाद सतर्क सैनिकों ने एंटी-इनफिल्ट्रेशन ऑपरेशन शुरू किया। भारत की सैन्य कार्रवाई ऑपरेशन सिंदूर के बाद, सुरक्षा बल आतंकवादियों, उनके सहयोगियों और समर्थकों के खिलाफ लगातार बड़े पैमाने पर कार्रवाई कर रहे हैं।यह आतंकवाद विरोधी रणनीति में किए गए बदलाव का हिस्सा है ताकि सिर्फ बंदूकधारी आतंकवादियों पर ध्यान देने के बजाय, आतंकवाद के पूरे सिस्टम को खत्म किया जा सके। सुरक्षा बल आतंकियों, उनके समर्थकों और सहानुभूति रखने वालों के खिलाफ कार्रवाई कर रहे हैं। ड्रग तस्कर और हवाला रैकेट भी निशाने पर हैं, क्योंकि इनसे मिलने वाला पैसा आतंकवाद को बढ़ावा देने में इस्तेमाल होता है। भारतीय सेना और सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) इस बार एलओसी और अंतर्राष्ट्रीय सीमा (आईबी) पर

24/7 निगरानी रख रहे हैं, ताकि सर्दियों में बर्फबारी से पहले आतंकवादी सीमा पार कर भारतीय क्षेत्र में घुसने की कोशिश न कर सकें। जम्मू-कश्मीर में 740 किलोमीटर लंबी एलओसी है जिसकी सुरक्षा सेना करती है और 240 किलोमीटर लंबी अंतर्राष्ट्रीय सीमा है जिसकी सुरक्षा बीएसएफ करती है।

राज्य सरकार की प्रतिबद्धता से सांगानेर के विकास कार्यों को धरातल पर मिल रहा मूर्तरूप : भजनलाल शर्मा

● 29 सितंबर को सांगानेर को मिलेगी विकास कार्यों की सौगात

एजेंसी
जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कहते हैं कि समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान से ही देश-प्रदेश का विकास होगा। हमारी प्राथमिकता है कि कोई भी पात्र व्यक्ति केन्द्र व राज्य सरकार की योजनाओं के लाभ से वंचित नहीं रहे। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार सबका साथ-सबका विकास की भावना के साथ कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की प्रतिबद्धता से सांगानेर के विकास कार्यों को धरातल पर मूर्तरूप मिल रहा है। इसी क्रम में नवरात्र के अवसर पर 29 सितंबर को सांगानेर क्षेत्र के विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण-शिलान्यास किया जाएगा। साथ ही, सांगानेर के क्षेत्रवासियों के साथ भविष्य के विकास कार्यों की योजना पर चर्चा भी की जाएगी। इससे पहले मुख्यमंत्री निवास पर सांगानेर क्षेत्र के लोगों ने मन की बात कार्यक्रम के तहत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संबोधन को सुना। इस अवसर पर नगर निगम ग्रेटर महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर, उप महापौर पुनीत कर्णावट सहित जनप्रतिनिधिगण, अधिकारीगण एवं आमजन उपस्थित रहे।

'हम लोगों से गलती हुई, जो दो बार साथ ले लिया था'

● सीएम नीतीश कुमार का राजद पर हमला

20 सालों में बिहार ने विकास की नई ऊंचाइयों को छुआ है : सीएम

एजेंसी
गोपालगंज। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राजद पर हमला बोला है। पहले दो बार राजद के साथ सरकार बनाने पर नीतीश कुमार ने कहा कि उस समय हमसे गलती हो गई थी। अब इधर-उधर नहीं करेंगे।

उन्होंने राजद पर हमला बोलते हुए कहा, 'पहले कुछ नहीं था, चीजें गड़बड़ थीं। इसलिए इसे याद रखें। पहले यहां-वहां काम हो रहा था, और अब वे कई जगहों पर कुछ चीजें कर रहे हैं। आप जानते हैं कि गलती हुई थी, कुछ लोगों ने डेढ़ साल तक कुछ चीजों को हल्के में लिया, दो बार। बाद में मैंने उन्हें दोनों बार हटा दिया। उसके बाद, मैंने कहा कि अब से यहां-वहां कुछ नहीं किया जाएगा। जो शुरू से था, वह हमेशा रहेगा।' सीएम नीतीश कुमार ने जनसभा को

संबोधित करते हुए कहा कि 2005 से पहले बिहार की स्थिति बेहद खराब थी। लोग शाम को घर से निकलने में डरते थे, लेकिन पिछले 20 सालों में बिहार ने विकास की नई ऊंचाइयों को छुआ है। उन्होंने बताया कि शिक्षा के क्षेत्र में अब तक 5 लाख से अधिक शिक्षकों की नियुक्ति की गई। स्वास्थ्य के क्षेत्र में कई नए मेडिकल कॉलेज खोले गए। आम जनता को राहत देते हुए 125 यूनिट तक बिजली मुफ्त की गई। वहीं, वृद्धा पेंशन में बढ़ोतरी और महिलाओं को रोजगार देने पर भी सरकार ने जोर दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि बिहार पुलिस में जितनी महिलाओं की संख्या है, उतनी पूरे भारत के किसी भी राज्य में नहीं है।

'मन की बात' में बोले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी-

'छठ को यूनेस्को की धरोहर में शामिल कराने का प्रयास'

● प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' के 126वें एपिसोड में शहीद भगत सिंह और लता मंगेशकर को श्रद्धांजलि दी।

एजेंसी
नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' में कहा कि छठ महापर्व भारतीय संस्कृति की गहरी आस्था और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है। यह पर्व अब वैश्विक स्तर पर भी पहचान बना रहा है। उन्होंने बताया कि भारत सरकार इसे यूनेस्को की 'इनटेंजिबल कल्चरल हेरिटेज लिस्ट' में शामिल कराने का प्रयास कर रही है, जिससे इसकी गरिमा और बढ़ेगी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' के 126वें एपिसोड में आज शहीद भगत सिंह और लता मंगेशकर को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने देश में महिला सशक्तिकरण के उदाहरण दिए, सांस्कृतिक धरोहरों को वैश्विक पहचान दिलाने के प्रयासों का उल्लेख किया और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प पर जोर दिया। उन्होंने देशवासियों को आगामी त्योहारों की शुभकामनाएं दी और इस बात का विशेष उल्लेख किया कि संग अपने 100 वर्ष पूरे करने जा रहा है। प्रधानमंत्री ने रविवार को

आकाशवाणी के मासिक कार्यक्रम 'मन की बात' के 125 कड़ियों की यात्रा पार करने का जिक्र किया और कहा कि यह जनता से जुड़ने का प्रेरणादायी माध्यम बन चुका है। प्रधानमंत्री ने कहा कि 28 सितंबर को दो महान विभूतियों की जयंती है। शहीद भगत सिंह को उन्होंने युवाओं के लिए प्रेरणा बताया और उनके साहसिक पत्र का उल्लेख किया, जिसमें उन्होंने अंग्रेजों से अपने साथ युद्धबंदी जैसा व्यवहार करने का आग्रह किया था। उन्होंने कहा कि भगत सिंह की निर्भीकता और सेवा भावना हर भारतीय को मार्गदर्शन देती है। उन्होंने लता मंगेशकर को भारतीय संस्कृति का अमूल्य स्वर बताया। उन्होंने कहा कि उनके गीतों ने देशभक्ति और संवेदनाओं को जीवंत किया। उन्होंने बताया कि लता मंगेशकर से उनका व्यक्तिगत स्नेह रहा और वे हर वर्ष उन्हें राखी भेजती थीं। प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि लता मंगेशकर स्वातंत्र्य वीर सावरकर से प्रेरित रही है। उन्होंने कहा, 'लता दीदी जिन महान विभूतियों से प्रेरित थीं उनमें वीर सावरकर भी एक हैं, जिन्हें वो तात्या कहती थीं। उन्होंने वीर सावरकर जी के कई गीतों को भी अपने सुरों में पिरोया।'

प्रधानमंत्री ने नवरात्रि के अवसर पर नारी शक्ति की उपलब्धियों को रेखांकित किया। उन्होंने नौसेना की लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना और रूपा के साहसिक नाविका सागर परिक्रमा का उल्लेख किया। इन दोनों अधिकारियों ने 238 दिनों तक 47,500 किलोमीटर की समुद्री यात्रा पूरी की।

राहुल गांधी ने शहीद-ए-आजम भगत सिंह की जयंती पर दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने शहीद-ए-आजम भगत सिंह की जयंती पर उन्हें सादर नमन किया। राहुल गांधी ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर अपने पोस्ट में भगत सिंह के बलिदान और साहस को याद किया। उन्होंने लिखा, शहीद-ए-आजम भगत सिंह जी की जयंती पर उन्हें सादर नमन। मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने का उनका साहस, अटूट संकल्प और बलिदान हर भारतीय के लिए सदैव प्रेरणा का स्त्रोत रहेगा।

जीएसटी सुधारों से साकार होगा एक राष्ट्र- एक कर का सपना : नायब सैनी

● स्वदेशी अपनाने से बनेगा आत्मनिर्भर भारत

एजेंसी
चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री, नायब सिंह सैनी ने कहा कि प्रधानमंत्री, नरेंद्र मोदी ने आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम बढ़ाते हुए गत 22 सितंबर को जीएसटी सुधार लागू किए हैं। जीएसटी की इस नई प्रणाली से हरियाणा की जनता को लगभग चार हजार करोड़ रुपये का लाभ होगा। ये सुधार आत्मनिर्भर भारत-आत्मनिर्भर हरियाणा बनाने में मील का पत्थर साबित होंगे। उन्होंने कहा कि जी.एस.टी. में सुधार करने की घोषणा प्रधानमंत्री, नरेन्द्र मोदी ने इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर की थी और मात्र एक महीने के भीतर वह घोषणा पूरी हो चुकी है। इससे पता चलता है कि जो मोदी जी की गारंटी है, वह अवश्य पूरी होती है। उन्होंने कहा कि दशकों तक देश की जनता अलग-अलग टैक्स के जाल में उलझी हुई थी। हमारे देश में दर्जनों

टैक्स थे। इनसे देशवासियों और कंपनियों को कई परेशानियां होती थीं। प्रधानमंत्री, नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में देश दर्जनों करों के जाल से मुक्त हुआ। एक राष्ट्र -एक कर का सपना साकार हुआ। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री, नरेंद्र मोदी ने स्वदेशी का आह्वान किया है, आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना की है और अभी अपनी जापान यात्रा के दौरान मेक इन इंडिया फॉर द वर्ल्ड का विजन रखा है। उसे साकार करने में भी ये सुधार महत्वपूर्ण साबित होंगे। इनसे रोजमर्रा इस्तेमाल के उपभोक्ता सामान सस्ते हुए हैं। इसलिए मध्यम वर्ग की बचत बढ़ी है और आगामी त्योहारों के सीजन में खरीदारी से बाजार को बड़ा लाभ होगा। उन्होंने कहा कि हरियाणा में कर आधार का विस्तार हुआ है और जी.एस.टी. संग्रह में वृद्धि हुई है। हरियाणा का नेट एस.जी.एस.टी. संग्रह 2018-19 के 18,910 करोड़ रुपये से बढ़कर 2024-25 में 39,743 करोड़ रुपये हो गया। यह 110 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। मुख्यमंत्री ने जी.एस.टी. परिषद द्वारा लिये गये प्रमुख निर्णयों का जिक्र करते हुए कहा कि अब देश में जी.एस.टी. की सिर्फ दो ही मानक दरें रहेंगी। एक 5 प्रतिशत और दूसरी 18 प्रतिशत। इसके अलावा, अहितकारी वस्तुओं के लिए विशेष दर 40 प्रतिशत रखी गई है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2024-25 में, हरियाणा कुल सकल जी.एस.टी. संग्रह में देश के प्रमुख राज्यों में 5वें स्थान पर रहा। उन्होंने कहा कि नागरिकों द्वारा सामान्य रूप से उपयोग की जाने वाली वस्तुओं पर जी.एस.टी. दरों को कम कर दिया गया है और कुछ पर इसे बिल्कुल समाप्त कर दिया गया है। लोगों पर टैक्स का बोझ और कम करने के लिए सेस को भी खत्म कर दिया गया है। पंजीकरण प्रक्रिया को सरल बनाया गया है।

हिंदू जागरण वेदिके नेता के खिलाफ यौन उत्पीड़न का मामला दर्ज

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक के दक्षिण कन्नड़ जिले के हिंदू जागरण वेदिके नेता समित राज के खिलाफ यौन उत्पीड़न और आपराधिक धमकी का मामला दर्ज हुआ है। एक महिला ने शिकायत में बताया कि समित राज ने उसकी निजी तस्वीरें हासिल कर तस्वीरें वायरल करने की धमकी देकर कई बार उसका यौन उत्पीड़न और मारपीट की। इस मामले में दक्षिण कन्नड़ जिले के पुलिस स्टेशन में एफआईआर दर्ज की गई है। पुलिस के अनुसार, महिला ने आरोप लगाया कि राज पिछले 15 दिनों से परेशान कर रहा था। महिला को डराने के लिए तस्वीरों का इस्तेमाल कर रहा था और विरोध करने पर जान से मारने की धमकी दे रहा था। मामले की जांच जारी है। आरोपी को अभी तक गिरफ्तार नहीं किया गया है।

जम्मू एयरपोर्ट को मिली बम की धमकी, जांच में कुछ नहीं मिला

जम्मू (एजेंसी)। जम्मू एयरपोर्ट प्रशासन को रविवार सुबह एक निजी एयरलाइन को बम से उड़ाने की धमकी वाला ईमेल प्राप्त हुआ। धमकी के बाद तुरंत एयरपोर्ट पर सुरक्षा अलर्ट जारी कर दिया गया और सीआईएसएफ तथा पुलिस ने मिलकर गहन तलाशी अभियान चलाया। हालांकि, तलाशी के दौरान किसी भी प्रकार का संदिग्ध या विस्फोटक पदार्थ नहीं पाया गया। ईमेल में 'बम ब्लास्ट' और 'आई हैव रीच्ड' जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया गया था, जिसके बाद एयरपोर्ट प्रशासन सतर्क हो गया। एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया के एक अधिकारी ने बताया कि सुबह यह ईमेल मिला और सुरक्षा प्रक्रियाओं का पालन करते हुए एयरपोर्ट की पूरी जांच कराई गई। उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी भी विस्फोटक की मौजूदगी की पुष्टि नहीं हुई। हालांकि, इस धमकी ने यात्रियों और एयरपोर्ट स्टाफ में अस्थायी चिंता पैदा कर दी, लेकिन सुरक्षाबलों की तत्परता और गहन तलाशी के कारण स्थिति पूरी तरह नियंत्रित रही। अधिकारियों ने लोगों से शांति बनाए रखने और अफवाहों से बचने की अपील की है। यह मामला देश में बढ़ती साइबर और ईमेल के जरिए की जाने वाली धमकियों पर एक बार फिर ध्यान खींचा है। सुरक्षा एजेंसियां इस तरह की धमकियों की गंभीरता से जांच कर रही हैं और भविष्य में किसी भी तरह की संभावित घटनाओं को रोकने के लिए सतर्क रहने की हिदायत दी गई है।

समूची दुनिया की पनडुब्बी बचाव के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध भारत

नई दिल्ली (एजेंसी)। दक्षिणी चीन सागर में बढ़ती चीन की आक्रामकता के बीच भारतीय नौसेना ने एक्सपीआर-25 युद्धाभ्यास के समुद्री चरण के तहत विदेशी पनडुब्बी जहाजों के साथ अपनी पहली मुलाकात की अहम उपलब्धि हासिल की है। एक्स पर एक पोस्ट साझा करते हुए नौसेना ने इसकी जानकारी दी। जिसमें तीन पनडुब्बियां, तीन साथी और तीन दिन टाइटल देते हुए बताया कि भारतीय नौसेना ने हस्तक्षेप और बचाव कार्यों के पूर्ण स्पेक्ट्रम का संचालन करते हुए युद्धाभ्यास के दौरान दक्षिण चीन सागर में विदेशी पनडुब्बियों के साथ पहली मुलाकात सफल रही। इन तीन दिनों तक हम सभी आरओवी अभियान में शामिल थे। जो कि हमारी बढ़ती वैश्विक बचाव क्षमताओं को प्रदर्शित करती है। एक्स पोस्ट में नौसेना ने यह भी कहा कि यह उपलब्धि अंतरराष्ट्रीय पनडुब्बी बचाव के लिए हमारी तत्परता, अंतर-संचालन और प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। यह भारत को एक भरोसेमंद समुद्री साझेदार और समुद्र में क्षेत्रीय सुरक्षा व मानवीय प्रतिक्रिया में सक्रिय योगदानकर्ता के रूप में भी साबित करती है।

नूंह में भारी बवाल, चोर को पकड़ने गई पुलिस पर पथराव...गोली चलने की खबर

नूंह (एजेंसी)। हरियाणा के नूंह में रविवार को भारी बवाल देखने को मिला है। यहां चोर को पकड़ने गई पुलिस पर पथराव हुआ है। इस दौरान गोलियां चलने की खबर है। स्थिति को काबू करने के लिए भारी पुलिसबल तैनात कर दिया गया है। जानकारी के मुताबिक पथराव करने वाले आरोपी के समर्थक बताए जा रहे हैं, जिन्होंने पुलिस पर अवैध राइफल से गोलियां भी चलाईं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इस घटना में कई पुलिसवालों के घायल होने की खबर है। इस दौरान पुलिस की ओर से जवाबी कार्रवाई की जाने की भी खबर है। पुलिस ने करीब 7-8 राउंड फायरिंग की और 13 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। मामले में 90 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है, जिसमें से 30 नामजद हैं। घटना नूंह के बिछौरा गांव की है, जहां पुलिस एक चोर को पकड़ने के लिए पहुंची थी। बताया जा रहा है कि इस दौरान स्थानीय लोग घरों से बाहर निकले और पुलिस पर पथराव और गालीबारी शुरू कर दी। इस दौरान कई लोगों ने नकाब पहना हुआ था और ये अवैध हथियार से पुलिस पर गोली चलाते भी नजर आए। बताया जा रहा है कि जवाबी कार्रवाई में पुलिस को भी 7-8 राउंड फायरिंग करनी पड़ी। फिलहाल स्थिति नियंत्रण में है।

जब अमृतसर एक्सप्रेस के दो डिब्बे हो गए अलग

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई से 100 किलोमीटर दूर पश्चिम रेलवे के डहाणू रेलवे स्टेशन के पास मुंबई से अमृतसर जा रही अमृतसर एक्सप्रेस के दो डिब्बे अलग हो गए। मगर गनीमत ये रही कि कोई हादसा नहीं हुआ लेकिन इस घटना से यात्रियों के बीच भय का माहौल रहा और वे तुरंत एक्सप्रेस से नीचे उतर कर पटरियों के पास खड़े हो गए। उधर दोनों डिब्बे काफी दूरी पर थे। इसका एक वीडियो भी सामने आया है। इसमें दिखाई दे रहा है कि डिब्बे इंडिन से अलग हो गए हैं। इसके अलावा, यात्री पटरियों पर उतरते हुए दिखाई दे रहे हैं। वहीं इस घटना से डाउन रूट पर लंबी दूरी की ट्रेनों पर असर पड़ा। करीब 40 मिनट के लिए डाउन रूट पर यातायात रोक दिया गया था। कुछ अपने गंतव्य के लिए रवाना किया गया। तेज गति से चलती ट्रेन के डिब्बों के अलग होने से यात्रियों में कुछ देर के लिए भय और अफरा-तफरी का माहौल बन गया। हालांकि, रेल प्रशासन की त्वरित कार्रवाई और ट्रेन कर्मचारियों की सतर्कता से एक बड़ा हादसा टल गया। घटना के बाद डाउन रूट पर रेल यातायात करीब चालीस मिनट तक बाधित रहा। नतीजतन, लंबी दूरी की कई ट्रेनें देरी से चलीं। इससे यात्रियों को काफी परेशानी हुई। अचानक हुई इस घटना के बाद स्थानीय रेल प्रशासन ने तुरंत कर्मचारियों को मौके पर भेजकर स्थिति को नियंत्रण में किया। अलग हुए डिब्बों को ट्रेन से जोड़कर ट्रेन को गुजरात की ओर रवाना किया गया।

भारतीय सेना ड्रोन, रोबोट और मिसाइलों से चौंकाएगी सारे विश्व को

-2027 तक तैयार होगा डीआरडीओ का ह्यूमनॉइड रोबोट

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारतीय सेना आने वाले वर्षों में विश्व को अपनी अत्याधुनिक तकनीकी ताकत से चौंकाने वाली है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ऐसे ह्यूमनॉइड रोबोट तैयार कर रहा है, जो युद्धक्षेत्र में सैनिकों की तरह काम कर सकेंगे और खतरनाक मिशनों में उनकी जान को जोखिम से बचाएंगे। आधिकारिक जानकारी अनुसार इस परियोजना पर पुणे स्थित रिसर्च एंड डेवलपमेंट एस्टैब्लिशमेंट (इंजीनियर्स) प्रयोगशाला काम कर रही है। इसका लक्ष्य 2027 तक भारतीय सेना को इन उन्नत रोबोटिक सैनिकों से लैस करना है।

बताया जा रहा है कि ये रोबोट मानव जैसी बनावट और गतिविधियों से लैस होंगे। ये जंगल, पहाड़ और रेगिस्तान जैसे कठिन इलाकों में तैनात किए जा सकेंगे। इनकी खासियत यह होगी कि ये विस्फोटक और खतरनाक सामग्रियों को संभालने के साथ ही निष्क्रिय करने, बाधाएं पार करने, दरवाजे व वाल्व खोलने जैसे जटिल कार्य आसानी से कर सकेंगे। इसके अलावा, ये इंसानों की तरह चलने, संतुलन बनाने और वस्तुओं को पकड़ने व लाने-लेजाने में सक्षम होंगे। रोबोट में अत्याधुनिक सेंसर और डेटा फ्यूजन तकनीक होगी, जिससे यह अपने आसपास के माहौल को समझ सकेगा। इसमें 24 डिग्री ऑफफ्रीडम वाले हल्के हाथ लगाए जाएंगे, जिनसे यह खतरनाक सामग्रियों को सुरक्षित तरीके से नियंत्रित कर सकेगा। रोबोट में फॉल और पुश रिकवरी की क्षमता भी होगी, यानी गिरने या धक्का लगने पर यह खुद को संभाल सकेगा।

तकनीकी विशेषताएं

यह ह्यूमनॉइड रोबोट दिन और रात, घर के अंदर व बाहर दोनों परिस्थितियों में काम करेगा। इसमें ऑडियो-विजुअल धारणा प्रणाली होगी, जिससे यह देखने और सुनने की क्षमता रखेगा। इसके अलावा, सिमुल्टेनियस लोकलाइजेशन एंड मैपिंग (स्लम) तकनीक के जरिए यह स्वायत्त रूप से रास्ता तय कर सकेगा और वास्तविक समय में नक्शा तैयार कर सकेगा।

भविष्य की संभावनाएं

डीआरडीओ का यह महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट केवल रक्षा क्षेत्र तक सीमित नहीं है। वैज्ञानिकों का मानना है कि ऐसे ह्यूमनॉइड रोबोट स्वास्थ्य सेवा, अंतरिक्ष अन्वेषण और विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में भी अहम भूमिका निभा सकते हैं। इस तकनीक के सफल होने पर भारत न केवल अपनी सैन्य क्षमता को नए स्तर पर ले जाएगा बल्कि वैश्विक रक्षा प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भी अग्रणी स्थान हासिल करेगा। इस तरह भारतीय सेना के ड्रोन, मिसाइलों और ह्यूनॉइड रोबोट से विश्व चौंकेगा। स्पष्ट है कि 2027 तक भारतीय सेना का चेहरा बदलने जा रहा है और रोबोटिक सैनिकों की तैनाती के बाद देश की सीमाएं और अधिक सुरक्षित हो सकेंगी।

तेजस्वी का नीतीश और मोदी सरकार पर हमला, बिहार की समझदार जनता आपके झांस में नहीं आएगी

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने डबल इंजन सरकार पर हमला बोला है। उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार और केंद्र की भाजपा सरकार विधानसभा चुनाव से पहले योजनाओं की घोषणाएं कर जनता को भ्रमित करने में जुटी है, लेकिन बिहार की समझदार जनता इनके झांसे में नहीं आने वाली है।

उन्होंने सवाल उठाया कि अगर सरकार के पास राजस्व की कमी है, फिर वादे कैसे पूरे हो सकते है। तेजस्वी ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश और केंद्र सरकार से बिहार की जनता पूछ रही है कि आपके पास 1 लाख करोड़ रुपए नहीं हैं, फिर 7 लाख 8 हजार 729 करोड़ रुपए की घोषणाएं कैसे पूरी होगी, बिहार का राजस्व सृजन कितना है? यह पैसा कहां से आएगा? तेजस्वी ने भ्रष्टाचार पर नीतिश सरकार की घेराबंदी की। उन्होंने कहा कि भाजपा और जदयू से ज्यादा, भ्रष्ट अधिकारी डरे हुए हैं। उन्हें लगता है कि अगर तेजस्वी सत्ता में आए, तब उनका रैकेट खत्म हो जाएगा और भ्रष्टाचार को बर्दाश्त नहीं करने वाले है। उन्होंने दावा किया कि राजद के पास ठोस योजनाएं हैं, जबकि डबल इंजन सरकार केवल खोखले वादे कर रही है। तेजस्वी ने कहा कि यह डबल इंजन सरकार इस बार दोगुनी गति से हारने वाली है। ये घोषणाएं डर के मारे की जा रही हैं। बता दें कि हाल ही में पीएम मोदी ने बिहार में मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना का शुभारंभ किया। इस योजना के तहत 75 लाख महिलाओं के बैंक खाते में 10 हजार रुपए की सहायता राशि ट्रांसफर की गई है।

हर पात्र व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचाना सरकार की प्राथमिकता: भजनलाल शर्मा

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने रविवार को कहा कि हर पात्र व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचाना राज्य सरकार की प्राथमिकता है। शर्मा मुख्यमंत्री निवास पर सांगानेर विधानसभा क्षेत्र के लोगों को संबोधित कर रहे थे।

शर्मा ने कहा, ''प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कहते हैं कि समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान से ही देश-प्रदेश का विकास होगा। हमारी प्राथमिकता है कि कोई भी पात्र व्यक्ति केन्द्र व राज्य सरकार की योजनाओं के लाभ से वंचित नहीं रहे।''

आधिकारिक बयान के अनुसाार शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिवस के अवसर पर 17 सितंबर से सेवा पखवाड़ा का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा, ''हम सभी आस-पास के लोगों को चिन्हित करते हुए उन्हें योजनाओं से जोड़ें तथा सेवा पखवाड़ा में अपनी सक्रिय भूमिका निभाएं।''

मुख्यमंत्री शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार सबका साथ-सबका विकास की भावना के साथ काम कर रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की प्रतिबद्धता से सांगानेर के विकास कार्यों को धरातल पर मूर्तरूप मिल रहा है। उन्होंने कहा कि इसी क्रम में नवरात्र के अवसर पर 29 सितंबर को सांगानेर क्षेत्र के विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण-शिलान्यास किया जाएगा।

आपने वादा किया था सरकार में आने पर कोई कमीशन नहीं मांगेगा ये तो दोगुना हो गया

बेंगलुरु (एजेंसी)। सर, जब आप विपक्ष के नेता थे, तब आपने हमें आश्वासन दिया था कि आपकी सरकार बनने पर कोई कमीशन नहीं मांगा जाएगा, लेकिन हमें खेद है कि अब कमीशन की मांग दोगुनी हो गई है। सर, आपके इसी वादे पर भरोसा करके हमने कांग्रेस की सत्ता में आने में मदद की थी। लेकिन भ्रष्टाचार दोगुना हो गया है इससे अच्छी तो पहले की भाजपा सरकार थी। ये पीड़ा कर्नाटक उन ठेकेदारों की है जो अधिकारियों और नेताओं को कमीशन बांट बांटकर परेशान हो गए है। कर्नाटक में ठेकेदारों के संगठन कर्नाटक स्टेट कॉन्ट्रैक्टर्स एसोसिएशन (केएससीए) ने राज्य के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया को चिट्ठी लिखकर अपने वादे को पूरा करने की मांग की है।

एसोसिएशन के अध्यक्ष आर मंजीनाथ और महासचिव जीएम रविंद्र के हस्ताक्षर वाले इस पत्र में कहा गया है - जब आप विपक्ष के नेता थे, तब आपने हमें आश्वासन दिया था कि आपकी सरकार बनने पर कोई कमीशन नहीं मांगा जाएगा, लेकिन हमें खेद है कि अब कमीशन की मांग दोगुनी हो गई है। पत्र में यह भी लिखा गया है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ संगठन की लड़ाई ने कांग्रेस को सत्ता में आने में मदद की थी, लेकिन अब वही ठेकेदार भारी दबाव में हैं। कांग्रेस सरकार पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा है कि पिछली भाजपा सरकार की तुलना में मौजूदा शासन में भ्रष्टाचार दोगुना हो गया है। संगठन का दावा है कि सरकारी विभागों में परियोजनाओं के आवंटन से लेकर ठेकेदारों के बकाया भुगतान तक में व्यापक अनियमितताएं हो रही हैं। एसोसिएशन ने मुख्यमंत्री सिद्धारमैया को 25 सितंबर 2025 को भेजे एक पत्र में यह आरोप लगाया। इस पत्र में कहा गया है कि सरकार द्वारा ठेकेदारों के करीब 32,000 करोड़ रुपये के बकाये का भुगतान लंबित है और उसे निपटाने के नाम पर कमीशन मांगा जा रहा है। बता दें कि यह पहला मौका है जब केएससीए ने मौजूदा कांग्रेस सरकार पर लिखित रूप से बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया है। हालांकि, संगठन पहले भी कुछ मंत्रियों और अधिकारियों के खिलाफ भ्रष्टाचार की शिकायत कर चुका है। गौरतलब है कि भाजपा शासनकाल में भी यही संगठन सरकार पर आरोप लगाता रहा था। तब संगठन ने दावा किया था कि परियोजनाओं के लिए 40प्रतिशत तक कमीशन की मांग की जाती थी। अब उसने कांग्रेस सरकार के खिलाफ और गंभीर आरोप लगाए हैं। एसोसिएशन ने यह भी आरोप लगाया कि विभाग बकाया भुगतान में वरिष्ठता का सम्मान नहीं कर रहे हैं। चुनिंदा ठेकेदारों को ही प्राथमिकता दी जा रही है और विशेष क्रेडिट लाइन उपलब्ध कराई जा रही है। इसके अलावा हर तीन महीने में लंबित बिलों का केवल 15-20प्रतिशत ही चुकाया जा रहा है।

सब-कॉन्ट्रैक्ट सिस्टम ने बढ़ाई परेशानी

रिपोर्ट के अनुसार, केएससीए ने पत्र में निर्मिति केंद्र और कर्नाटक रूरल इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड (केआरआईडीएल) जैसी सरकारी संस्थाओं का नाम लेकर आरोप लगाया कि यहां परियोजनाएं कांग्रेस नेताओं के अनुयायियों को दी जा रही हैं। ये लोग बाद में बड़े ठेकेदारों को काम सौंप देते हैं और बीच में कमीशन लेते हैं। संगठन के अनुसार, इस तरह काम की गुणवत्ता पर असर पड़ रहा है, क्योंकि मूल ठेकेदार के बजाय सब-कॉन्ट्रैक्ट सिस्टम लागू हो रहा है।

मौसम विभाग का अलर्ट: दुर्गा पूजा और दशहरा उत्सव में आंधी बारिश बढ़ा सकते हैं मुश्किलें

नई दिल्ली (एजेंसी)। मौसम विभाग ने अलर्ट जारी करते हुए कहा है कि इस बार तेज हवाएं और बारिश से दुर्गा पूजा और दशहरा जैसे पर्व पर मुश्किलें बढ़ सकतीं हैं। बंगाल की खाड़ी के ऊपर कम दबाब का क्षेत्र बन रहा है, जिससे अगले सात दिनों तक प्रदेश के कई इलाकों में बारिश होगी। दक्षिण बंगाल के कुछ जिलों में अलग-अलग स्थानों पर भारी बारिश होने की संभावना है। मौसम विभाग के पूर्वानुमान के बाद राज्य में दुर्गा पूजा का उत्सव कुछ हद फीका पड़ सकता है। दुर्गा पूजा उत्सव 28 सितंबर से शुरू होकर 2 अक्तूबर को विजया दशमी पर समाप्त होगा। हालांकि, कई जगहों पर मूर्तियों का विसर्जन बाद में किया जाता है।

आईएमडी ने कहा कि कोलकाता में 1 अक्टूबर को भारी बारिश होने की संभावना है। राज्य के दक्षिणी हिस्से के कई जिलों में अगले दो दिनों में ऐसी ही बारिश होगी। 30 सितंबर को उत्तरी अंडमान सागर में ऊपरी हवा का चक्रवाती परिसंचरण बनने की संभावना है, जिसके प्रभाव से 1 अक्टूबर के आसपास बंगाल की खाड़ी में नया निम्न दबाव क्षेत्र बन सकता है। इस कारण पूर्वी और मध्य भारत में 28 सितंबर से 3 अक्टूबर तक कई स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होगी। पश्चिम और पूर्वोत्तर भारत में भी मौसम का असर देखने को मिलेगा। गोवा, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र और कच्छ में 3 अक्टूबर तक भारी बारिश की संभावना है। सौराष्ट्र और कच्छ में 29 सितंबर को बहुत भारी बारिश हो सकती है। पूर्वोत्तर भारत में असम, मेघालय, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा में 28 सितंबर से 3 अक्टूबर तक भारी बारिश की चेतावनी है, जिसमें 2 और 3 अक्टूबर को बहुत भारी बारिश हो सकती है। इसके साथ ही अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, सिक्किम और बिहार में 28 सितंबर से 1 अक्टूबर तक तूफानी हवाएं चलेंगी। ऐसे में लोगों से सतर्क रहने और मौसम विभाग की चेतावनियों का पालन करने की सलाह दी गई है। राजस्थान में कुछ जगहों पर अगले कुछ दिनों के दौरान हल्की बारिश हो सकती है। मौसम विभाग के अनुसार, पिछले 24 घंटों के दौरान राजस्थान में मौसम मुख्यतः शुष्क रहा और दक्षिण-पश्चिम मॉनसून शुक्रवार को राज्य से पूरी तरह से विदा हो गया। हालांकि, मॉनसून की वापसी रेखा शनिवार को वेरावल, भरूच, उज्जैन, झांसी, शाहजहांपुर से होकर गुजरी। इसके असर से आगामी दिनों में राजस्थान के उदयपुर और कोटा संभागों में कहीं-कहीं मेघगर्जन के साथ हल्की बारिश होने की प्रबल संभावना है।

भड़के थरूर ने दिया जवाब-सचिन तेंदुलकर की सेंचुरी और मकबूल हुसैन की पेंटिंग है इडली

नई दिल्ली (एजेंसी)। दक्षिण भारत का मशहूर डोसा और इडली को बेकार बताने पर कांग्रेस नेता शशि थरूर भड़क गए। उन्होंने इसे मानव सभ्यता का शानदार उपहार बताते हुए कहा कि इडली मकबूल हुसैन की पेंटिंग और सचिन तेंदुलकर की सेंचुरी से कम नहीं है। ये अहसास सिर्फ इसे खाने और इसके स्वाद चखने वाले ही जान सकते हैं।

दरअसल एक्स पर एक यूजर ने इडली को 'भाप से बनी पछतावा' और डोसा को बेहतर बताया था। इसी बात से थरूर नाराज हो गए। यह सारा मामला 26 सितंबर को एक पोस्ट से शुरू हुआ, जब अनघा ने एक पोस्ट में शिकायत की, 'क्यों हमेशा इडली और डोसा ही क्यों, क्या इस देश में कोई और नाश्ता नहीं है? इस पर जवाब देते हुए मोलुट्टी ने मजाकिया लहजे में कहा, डोसा? कोई शब्द नहीं बस सम्मान! इडली तो भाप से बनी पछतावा है। यह टिप्पणी सोशल मीडिया पर वायरल हो गई और यूजर्स ने इस पर अपनी-अपनी राय देनी शुरू कर दी। कुछ ने डोसा की तारीफ की, तो कुछ ने इडली को अपना पसंदीदा बताया। फिर शशि थरूर ने भी इडली-डोसा की इस बहस में कूदते हुए एक लंबी पोस्ट लिख डाली, जिसमें उन्होंने इडली के समर्थन में ढेर सारे तर्क दिए।

थरूर ने लिखा, साफ है कि इन्होंने कभी अच्छी इडली नहीं चखी। एक सच्ची शानदार इडली एक बादल की तरह, एक फुसफुसाहट की तरह, मानव सभ्यता की पूर्णता का एकदम सटीक सपना है। यह चावल और दाल का एक नाजुक, वजनहीन टुकड़ा है, जो भाप से इतना हल्का और फूलदार बनता है कि जीभ पर पिघल जाए। सही चटनी और सांभर के साथ, यह बीथोवेन की सिम्फनी, टैगोर के संगीत, मकबूल हुसैन की पेंटिंग और सचिन तेंदुलकर की सेंचुरी के समान है। इसे 'पछतावा' कहना आत्मा, स्वाद, और दक्षिण भारतीय संस्कृति के सबसे बड़े योगदानों की कद्र न करना है।

थरूर की इस पोस्ट के साथ उन्होंने एक तस्वीर भी शेयर की, जिसमें वे पारंपरिक वेशभूषा में एक रसोई में खड़े होकर इडली बनाने की प्रक्रिया में व्यस्त हैं। पोस्ट के बाद सोशल मीडिया पर प्रतिक्रियाओं की बाढ़ आ गई। मोलुट्टी ने जवाब देते हुए लिखा, 'सर, आपने इडली को एक दिव्य कला के रूप में ऊंचा कर दिया। इसे पढ़ने के बाद मुझे दोबारा इडली खानी पड़ेगी ताकि भावनात्मक रूप से इसे प्रोसेस कर सकूं।

टैरिफ से प्रभावित होता व्यापार प्रवाह, ब्रिक्स करे बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली की रक्षा: जयशंकर

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत इन दिनों अलग-अलग मामलों में अमेरिका द्वारा लगाई गई कड़ी पाबंदियों से एक साथ जूझ रहा है। जिसमें सबसे पहले रूस से कच्चे तेल खरीद पर लगाया गया 50 फीसदी टैरिफ (25 फीसदी जुर्माने के साथ), फिर ईरान के चाबहार बंदरगाह के विकास कार्य पर लगाई गई रोक, एक लाख डॉलर की एच1बी वीजा की फीस बढ़ोतरी और हाल ही में भारत की ब्रांडेड और पेटेंट दवाओं पर लगाया गया 100 फीसदी टैरिफ मुख्य हैं। विषयों की गंभीरता इतनी है कि शनिवार को भारत के विदेश मंत्री डॉ एस जयशंकर का अमेरिका का नाम लिए बिना उसे दिया गया करारा जवाब भी सामने आ गया है। जिसमें उन्होंने न्यूयॉर्क में बैठकर ब्राजील, रूस, भारत और दक्षिण-अफ्रीका जैसे देशों के समूह 'ब्रिक्स' के विदेश मंत्रियों की बैठक की मेजबानी करते हुए बड़ी ही स्पष्टता से कहा कि ऐसे दौर में जब टैरिफ अस्थिरता, संरक्षणवाद और गैर-टैरिफ बाधाएं व्यापार प्रवाह को प्रभावित करती हैं। तब ब्रिक्स को बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली की रक्षा करनी चाहिए। यह विदेश मंत्रालय ने एक बयान जारी कर दी है। साथ ही इस बैठक को लेकर जयशंकर ने एक्स पर एक पोस्ट भी साझा की।

मंत्रालय ने कहा कि ब्रिक्स देशों के विदेश मंत्रियों ने बैठक में क्षेत्रीय और वैश्विक महत्व के बड़े मुद्दों पर भी आपस में विचार साझा किए। जिसमें यूएन के एजेंडे के तहत आने वाले राजनीतिक, सुरक्षा, आर्थिक, वित्तीय और सतत विकास जैसे विषयों से जुड़े मामले, इंट्रा-ब्रिक्स सहयोग व गतिविधियां प्रमुख हैं। बैठक में समूह देशों ने अपने तीन आधार स्तंभों के तहत विस्तारित ब्रिक्स को लेकर अपने सहयोग को मजबूत बनाने की प्रतिबद्धता को दोहराया। इसके अलावा ब्रिक्स देश अपनी आम-जनता की भलाई के लिए सामरिक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए भी सामूहिक रूप से तैयार हैं।

पहली बार अमेरिका में हुई ब्रिक्स की बैठक

यह पहला मौका था जब अमेरिका में ब्रिक्स के विदेश मंत्रियों की बैठक हुई और उसमें एस।जयशंकर ने कहा कि जब बहुपक्षवाद दबाव में होता है। तो ब्रिक्स तर्क और रचनात्मक परिवर्तन की एक मजबूत आवाज के रूप में दृढ़ता से खड़ा होता है। अशांत दुनिया में समूह को शांति स्थापना, कूटनीति और अंतरराष्ट्रीय कानून के पालन के संदेश को सुदृढ़ करना चाहिए। हम सभी देशों को एकजुटता के साथ संयुक्त राष्ट्र (यूएन) के प्रमुख अंगों जैसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में व्यापक सुधार के लिए अपने सामूहिक आह्वान को बढ़ाना चाहिए। यहां बता दें कि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत के अलावा ब्रिक्स के ब्राजील पर भी 50 फीसदी टैरिफ लगाया है। जबकि चीन और दक्षिण-अफ्रीका पर उनके द्वारा 30 फीसदी टैरिफ थोपा गया है। यूक्रेन युद्ध की वजह से रूस पर व्यापक अमेरिकी पाबंदियां तो जगजाहिर हैं हीं। ट्रंप ब्रिक्स को अमेरिका के सबसे बड़े विरोधी यानी शत्रु के रूप में देखते हैं। उनका कहना है कि समूह देशों की मिलीभगत की वजह से अमेरिकी हितों पर आंच आती है।

जेएनयू में चूहों और खरगोश के लिए खरीदें जाएंगे पिंजरे

नई दिल्ली। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में शोध के लिए चूहे और खरगोश को पॉलीप्रोपाइलीन और स्टील के पिंजरों में रखा जाएगा। नए पिंजरों की खरीद को लेकर जेएनयू के सेंट्रल लेबोरेटरी एनिमल रिसोर्स ने कवायद शुरू कर दी है। चूहों के लिए 115 पॉलीप्रोपाइलीन पिंजरे और 18 स्टेनलेस स्टील पिंजरे खरगोश के लिए खरीद जाएंगे। इस संबंध में निविदा जारी कर दी गई है। एक अधिकारी ने बताया कि पिंजरों की खरीद इससे पहले भी होती रहती है। लेकिन यह पिंजरे सामान्य पिंजरों की तुलना में ज्यादा सुरक्षित होते है। साफ-सफाई आसानी से हो जाती है। पिंजरों में किसी प्रकार कोई कीटाणु और बैक्टीरिया नहीं पनपता है। एक स्वच्छ वातावरण सुनिश्चित होता है। शोध के चूहे और खरगोश को रखने के लिए ऐसे पिंजरों की जरूरत पड़ती है। जिससे शोध से जुड़ा कोई कार्य प्रभावित न हो।

अवैध पटाखे लेकर आए दंपती व बेटा गिरफ्तार

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट की पाबंदी के बावजूद लोग राजधानी में अवैध पटाखे बेचने से बाज नहीं आ रहे हैं। ऐसे ही एक मामले में पश्चिम जिला के स्पेशल स्टाफ ने राजौरी गार्डन इलाके में छापेमारी कर दंपती व उनके बेटे को भारी मात्रा में अवैध पटाखों के साथ गिरफ्तार किया है। इनके पास से पुलिस ने 3580 किग्रा से अधिक पटाखे बरामद किए हैं। पकड़े गए अरोपियों की पहचान सुशील कक्कड़ (53), पत्नी उपासना कक्कड़ (50) और शिवम ककक्कड़ (28) के रूप में हुई है। आरोपी मेरठ, गाजियाबाद और गुरुग्राम में अलग-अलग जगहों से पटाखे लाकर बेचने की तैयारी कर रहे थे। पटाखों की दोबारा से पेकिंग की जा रही थी। पश्चिम जिला के पुलिस उपायुक्त ने बताया 25 सितंबर को मिली सूचना के आधार पर टीम ने विशाल एंक्लेव स्थित मकान में छापा मारा। आरोपी परिवार घर में पटाखों की दोबारा से पैकिंग का काम कर रहा था। मकान की तलाशी दौरान हर कोने में पटाखे मौजूद थे।आरोपियों ने रसोई को भी नहीं छोड़ा था। पुलिस ने तीनों को गिरफ्तार कर पूछताछ की तो आरोपियों ने मेरठ, गाजियाबाद और गुरुग्राम से पटाखे लाने की बात की। पूछताछ के दौरान आरोपियों ने बताया है कि इनका आम दिनों में नमकीन और अन्य खाने पीने के सामान की दुकान है।

बंधक बनाया...कंक्रीट का मसाला मुंह में भरा, मिस्त्री और उसके दामाद ने महिला के साथ पार कीं दरिंदगी की हदें

कौमी पत्रिका

कन्नौज। उत्तर प्रदेश के कन्नौज जिले में सोमवार को दिनदहाड़े महिला और बेटी को बंधक बनाकर लाखों रुपये की लूट और हत्याकांड में चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। लूट का विरोध करने पर महिला की हत्या करने वाले टाइल्स मिस्त्री और उसके दामाद ने वारदात से पहले हैवानियत की सारी हदें पार कर दीं थीं। महिला सुनीता श्रीवास्तव के हाथ-पैर रस्सी ये बांधने के बाद उनके मुंह में सीमेंट-कंक्रीट का मसाला भर दिया। इसके बाद बसूली (हथौड़ा) से सिर पर प्रहार कर निर्ममता से हत्या कर दी। पोस्टमार्टम रिपोर्ट से खुलासा हुआ कि सुनीता के सिर पर वजनदार वस्तु से प्रहार किया गया। उनके शरीर पर 12 चोटों के निशान भी मिले हैं। इससे आशंका जताई जा रही है कि वह काफी देर तक हत्यारोपियों से भिड़ीं थीं। कन्नौज के मोहल्ला कुतलूपुर मकरंदनगर में दिनदहाड़े हत्या और लूट की घटना के बाद मोहल्ले के लोगों सहित पूरे शहर में आक्रोश है। मंगलवार को पोस्टमार्टम के बाद सुनीता के शव को घर पर लाया गया तो भीड़ लग गई। मां के शव को देख दोनों बेटियां बेसुध हो गईं। किसी तरह परिजनों और रिश्तेदारों ने उन्हें संभाला। पांच साल पहले पिता अर्जुन श्रीवास्तव की हादसे में मौत के बाद मां ही उनका सहारा थीं। दीपावली पर नए घर में शिफ्ट होने की योजना थी। दोपहर बाद सुनीता के शव का महादेवी घाट पर अंतिम संस्कार किया गया, जहां आर्य समाज की रीति के अनुसार मुखाग्नि दी गई। इससे पहले कानपुर रेंज के डीआईजी हरीश चंदर ने भी घटनास्थल का निरीक्षण किया और दोनों बेटियों से घटना के बारे में जानकारी ली। डीआईजी के आदेश पर एसपी विनोद कुमार ने हत्या व लूट के आरोपी जसवंत सिंह उर्फ पंकज चौहान व उसके दामाद सूरज कश्यप पर 25-25 हजार रुपये का इनाम घोषित किया है। डीआईजी ने बताया कि हत्यारोपियों की गिरफ्तारी के लिए पांच टीमों को लगाया गया है।

जल्द ही दोनों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। हत्यारोपी जसवंत सिंह व सूरज कश्यप की तलाश में एसओजी व सर्विलांस समेत पांच टीमें लगीं हैं। एक टीम पंजाब गई है, जहां दोनों लुधियाना समेत कई शहरों में रह चुके हैं। वहीं, यूपी में लखनऊ, उन्नाव, गोंडा, बलरामपुर समेत कई जिलों में पुलिस की टीमें संभावित स्थानों पर दबिश दे रहीं हैं। एसपी ने बताया कि दोनों के पास कोई स्थायी मोबाइल नंबर भी नहीं है। अक्सर वह नंबर बदलते रहते हैं। जिन लोगों के यहां काम कर चुके हैं, उन लोगों ने बताया कि दोनों व्हाट्सएप कॉल से बात अधिक करते थे। डीआईजी कानपुर रेंज के निर्देश पर एसपी ने सुनीता की छोटी बेटी दीया श्रीवास्तव को गनर दिया है। वह उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक ठठिया शाखा में कैशियर के पद पर तैनात है। वहीं, बड़ी बेटी की सुरक्षा के लिए घर पर भी महिला पुलिस कांस्टेबल तैनात रहेंगीं। एसपी ने बताया कि दोनों बेटियों की सुरक्षा के लिए महिला कांस्टेबलों को लगाया गया है। इसकी मॉनीटरिंग महिला थानाध्यक्ष सीमा पटेल करेंगीं। सुनीता श्रीवास्तव के मकान में पिछले तीन माह से टायल्स-पत्थर लगाने का काम कर रहे हत्यारोपी जसवंत सिंह उर्फ पंकज चौहान व सूरज कश्यप आपस में ससुर-दामाद हैं। सीओ सिटी अभिषेक प्रताप अजेय ने बताया कि जसवंत सिंह मूलरूप से बलरामपुर जिले के तुलसीपुर का रहने वाला है, जबकि उसका दामाद सूरज कश्यप उन्नाव जिले के फतेहपुर चौरासी थाना क्षेत्र के ग्राम पखरापुर का रहने वाला है। जसवंत पांच साल पहले जब पंजाब के लुधियाना में काम करता था, तभी उसकी जान पहचान सूरज से हुई थी। बाद में सूरज ने जसवंत की बेटी से प्रेम विवाह कर लिया था। पुलिस अधीक्षक विनोद कुमार ने बताया कि सूरज कश्यप शातिर चोर है। लखनऊ के अलग-अलग थानों में उसके ऊपर चोरी व लूट के 19 मुकदमे दर्ज हैं। तीन माह पहले ही सूरज लखनऊ जेल से छूटकर बाहर आया है। अन्य जिलों में भी उसका आपराधिक इतिहास खंगाला जा रहा है। उसके गांव पखरापुर में कोई नहीं रहता है। उसकी एक बहन है, जिसकी शादी हो चुकी है और पिता भी अपनी बेटी के यहां ही रहते हैं। उसके ससुर जसवंत का कोई आपराधिक इतिहास नहीं है। वह डेढ़ साल पहले कन्नौज आया था, जहां टायल्स की दुकानों से संपर्क कर काम करने लगा। दोनों तिर्वा कोतवाली क्षेत्र के फगुहा भट्ठा गांव में विनोद दुबे के मकान में किराये पर रहते थे। जसवंत की बेटी भी साथ थी।

पर्यटकों की सबसे पसंदीदा जगह कुतुबमीनार

पर्यटन मंत्रालय के पिछले साल के आंकड़ों के मुताबिक, घरेलू के साथ विदेशी सैलानी भी सल्तनत काल की इस इमारत का दीदार करने भारी संख्या में पहुंच

रहे हैं। राजधानी पहुंचने वाले पर्यटकों की सबसे पसंदीदा जगह कुतुबमीनार है। पर्यटन मंत्रालय के पिछले साल के आंकड़ों के मुताबिक, घरेलू के साथ विदेशी सैलानी भी सल्तनत काल की इस इमारत का दीदार करने भारी संख्या में पहुंच रहे हैं। दूसरे नंबर पर लाल किला देखने बड़ी संख्या में पर्यटक पहुंचते हैं। पिछले साल दिल्ली की आबादी के करीब 50 फीसदी के बराबर लोग बाहर से बतौर सैलानी राजधानी की सैर करने आए। आंकड़ों के मुताबिक, 2024-25 में दिल्ली पहुंचने वाले पर्यटकों की संख्या करीब 88.5 लाख रही। आंकड़े बताते हैं कि दिल्ली में सबसे अधिक 34.39 लाख पर्यटक कुतुब मीनार को देखने पहुंचे। इसके बाद करीब 29.63 लाख सैलानियों ने लालकिला और 11.63 लाख ने हुमायूं का मकबरा देखा। वहीं, सबसे कम 683 पर्यटक सुल्तानगढ़ी का मकबरे पर पहुंचे। विशेषज्ञ बताते हैं कि राजधानी की ऐतिहासिक धरोहरें सिर्फ अतीत की कहानी नहीं कहती, बल्कि आज की अर्थव्यवस्था को भी संजीवनी देती हैं। दिल्ली का जिक्र आते ही लालकिला और कुतुबमीनार सामने आ जाते हैं लेकिन राजधानी में कई ऐसी गुमनाम धरोहरें भी हैं। इनसे आम सैलानी अनजान रहते हैं। पर्यटन उद्योग के सामने चुनौतियां भी कम नहीं हैं स्मारकों पर बढ़ती भीड़, स्वच्छता की कमी और सुरक्षा को लेकर लापरवाही कई बार पर्यटकों की संख्या घटा देती है। ऐसे में गलियों के बीच या दूर बसे ऐतिहासिक धरोहरें तक पर्यटक नहीं पहुंच पाते हैं। रिक्शा चालक मनीष ने बताया कि इंडिया गेट, लाल किला और कुतुब मीनार जैसी जगहों पर आसानी से जाया जा सकता है लेकिन कुछ ऐसे इलाके हैं जहां जाना काफी मुश्किल हो जाता है। इसी कारण वहां के लिए सवारियों को थोड़ी तकलीफ उठानी पड़ती है। वहीं, कई स्थलों पर असुविधा भी है। इन सब कारणों से पर्यटकों की संख्या कम होती जा रही है। दिल्ली में सैलानियों को ऐतिहासिक स्थलों और इमारतों का इतिहास और भूगोल समझाने वाले गाइड रफीक बताते हैं कि पर्यटन सिर्फ रोजी-रोटी नहीं, बल्कि दोस्ती का पुल है। जब विदेशी पर्यटक हिंदी बोलने की कोशिश करते हैं तो हमें अपनापन लगता है। उन्होंने बताया कि सभी गाइड भी पूरी कोशिश करते हैं कि पर्यटक केवल घूमें नहीं बल्कि एक रिश्ता बनाकर लौटे।

ध्यानार्थ-टिहरी गढ़वाल के लिए उपयोगी आभूषण व नकदी लूट में घोषित बदमाश गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने सोने और हीरे के आभूषणों व नकदी की लूटपाट के मामले में घोषित बदमाश जावेद को 26 सितंबर को गिरफ्तार किया है। अदालत ने आरोपी को 24 फरवरी 2025 को घोषित अपराधी घोषित कर दिया था। सैयद नांगलोई दिल्ली निवासी जावेद उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल के चांदला गांव का रहने वाला है। अपराध शाखा के पुलिस उपायुक्त पंकज कुमार के अनुसार सात आरोपियों ने जनवरी 2020 में दिल्ली के अंबिका विहार स्थित घर में डकैती की साजिश रची। उनमें से आरोपी राजेश अंबिका विहार निवासी पीड़िता के यहां ड्राइवर के रूप में काम करता था। सीनियर सिटीजन महिला अकेली रहती हैं। उनके बच्चे ऑस्ट्रेलिया में रहते हैं। 29 जनवरी 2020 को दोपहर करीब 1 बजे आरिफ, अख्तर, विनीत और मूलचंद गैस मीटर चेक करने के बहाने घुस गए। जावेद, राजेश और घनश्याम तिवारी निगरानी रखने के लिए बाहर रहे। आरोपियों ने घर के अंदर मकान मालकिन और उसकी नौकरानी को रस्सी से बांध दिया। आरिफ ने उन दोनों को बेहोशी की दवा दे दी थी। इसके बाद घर से 20 लाख मूल्य के सोने और हीरे के आभूषण और 20,000 नकद लूट कर फरार हो गए थे।

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I Suraj Bhan S/O Ram Kishan, R/O 176, VILLAGE, Lad Pur, North West Delhi, Delhi-110081,declare that name of mine has been wrongly written as Suraj Bhan Dabas in my PPO no 601200502731.The actual name of mine is SURAJ BHAN ,respectively which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE

General Public is hereby informed that my Client Sh Surinder Singh Rana S/o Sarvjit Singh Rana and Smt Rama Rana W/o Surinder Singh Rana Both are Resident of U-20/2 Subhash Park Uttam Nagar West Delhi Delhi 110059 have disowned and debarred their son namely Arjun Rana from their movable and immovable properties and have also discard all kinds of relationship with them because they have become disobedient and are not under their control. My Client shall not be liable for any kind of civil or criminal loss, damage and consequences, if any suffers while dealing with him and he shall do as their own risk cost and consequences.

YAMINI SHARMA, Advocate
OFFICE AT:-WZ-32 BAL UDHYAAN ROAD UTTAM NAGAR NEW DELHI-110059
Mob:-8860087203

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I Sudhir Saxena S/O Babu Ram, R/O C-74, KAILASH VIHAR, KIRARI, SULEMAN NAGAR, SULTAN PURI MAJRA, North West Delhi, Delhi - 110086, declare that name of mine and my wife has been wrongly written as Sudhir and Sandhya in my minor daughter namely Nandini aged 13 years in her school records. The actual name of mine and my wife are SUDHIR SAXENA AND SANSHYA SAXENA,which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I Javed Qureshi , S/O Haji Freed Qureshi, R/O 6408, Quresh Nagar Sadar Bazar , Delhi G.P.O. DIST: North Delhi ,Delhi-110006. Declare that name of my Minor Daughter has been Wrongly written as Maryam Javed Qureshi in my Minor Daughter Namely Maryam Qureshi aged 15 years in her OBC Certificate no. 90500000184010, the actual name of my Minor Daughter is Maryam Qureshi.

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I, Mantosh Kumar Singh, S/O Bhagwan Singh , A-93, Khasra No. 39/14 , Gali No.-10 , Budh Bazar , Agar Nagar , Prem Nagar -3, Kirari Suleman Nagar, Po: Sultanpuri C Block , Dist: North West Delhi , Delhi-110086, declare that the name of mine and my father has been wrongly written as Mantosh Kr Singh And Bhagwan Pd Singh in my driving license DL04 20020188576. The actual name of mine and my father is Mantosh Kumar Singh And Bhagwan Singh .

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I, Prateek Jain S/O Arun Jain R/O 22/11,Third Floor, Ashok Nagar, Tihar-II, Ashok Nagar, PO: Tilak Nagar ,Dist: West Delhi-110018. declare that name of my minor son has been wrongly written as Ronit A Jain aged 15 years in his school record, The actual name of my minor son is RONIT JAIN. which may be amended accordingly .

PUBLIC NOTICE

NOTICE is hereby given to public at large on behalf of my client **Mohan singh,** Raj Kumar in respect of Plot No. 129, area measuring 108 Sq.Mtrs, Khasra no. 170, Village Dundaheda , Pargana Loni , Tehsil & Distt. Ghaziabad, U.P claiming to have undisputed ownership. Now my client intends to sell the property in which **Piramal Finance Limited** will provide the financial assistance If any person(s) has/have any objection(s) or claim(s) with respect to the right, title or interest in the said property may please contact us within Seven days from the date of this notice on the number & address mentioned herein below, failing which my client(s) shall not be held responsible in any manner whatsoever.

Khaitan & Khaitan
A-38 Kailash Colony,
New Delhi-110048,
Ph. No: 011-49774545

NAME CHANGE

I, hitherto known as Nasarudin S/O JAMIL AHMAD, R/O A-306, GALI NO-5, MEER VIHAR, Madan Pur Dabas, PO: Rani Khera, DIST: North West Delhi, Delhi - 110081,have changed my name and shall hereafter be known as ABDUL MUHEED.

NAME CHANGE

I PARVEZ S/O ZAHOOR AHMAD R/O E 125 A GALI NO 7 CHAND BAGH KARAWAL NAGAR NORTH EAST DELHI 110094 HAVE CHANGED MY NAME TO PARVEZ AHMED

NAME CHANGE

I FATMA BEGUM W/O ZAHOOR AHMAD R/O E 125 A GALI NO 7 CHAND BAGH KARAWAL NAGAR NORTH EAST DELHI 110094 HAVE CHANGED MY NAME TO FATIMA BEGUM

NAME CHANGE

I, INTEZAR KHAN S/O sharafat residing mohsin azam colony rampur have changed my name to AFSAR KHAN s/o nazakat for all future purpose.

NAME CHANGE

I, NAEEM BANO W/O intezar KHAN residing at mohsin azam colony rampur i have changed my name to NOOR BANO W/O AFSAR for all future purpose.

NAME CHANGE

I, IQRA KHANAM D/O AFSAR KHAN residing at KH NO 244/6 FRONT LEFT PORTION 4TH FLOOR STREET NO 4 AND 5 SANGAM VIHAR BURARI DELHI-110084 have changed my name to IQRA KHAN for all future purpose.

NAME CHANGE

I hitherto Known as PRIYA RUNGTA alias PRIYA JAIN D/o MAHAVIR PRASAD RUNGTA W/o SAMRAT JAIN residing at House Number 20/7, Rajpur Road, Civil Lines, North Delhi, Delhi - 110054 have changed my name and shall hereafter be known as PRIYA JAIN.

Lost & found

LOST Chain[GPA] of my house (Sarla Nagar to Jagdish Chander Nagar) C6/87 Yamuna Vihar DL-110053 If Found Call Rekha 9013464681

NAME CHANGE

I hitherto Known as SUBHASH CHAND alias SUBHASH KATARIA S/o ROOP CHAND residing at E-21/40, Sector-3, Rohini, North West Delh , Delhi - 110085 have changed my name and shall hereafter be known as SUBHASH KATARIA.

NAME CHANGE

It is for general information that I SANTOSH KUMAR MISHRA S/O KARUNA SHANKAR MISHRA R/O A-28, A, UG-2, New Defence Colony Bhopura, PO: Sahibabad, District Ghaziabad, Uttar Pradesh-201005, declare that name of my wife has been wrongly written as ARCHANA DEVI in my minor son RISHABH MISHRA aged 14 years in his school records. The actual name of my wife is ARCHANA PANDEY which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE

NOTICE is hereby given to public at large that my client **Smt. Deepika Hans** is the owner of Land Area measuring 1 kanal and 17 marla. i.e. 1120 sq.yds. out of Khewat/khaata no. 138/148 Mu No. 11 Killa No. 7/1/1(0-14) and Khewat/Khata no. 141 / 152, Mu No. 5 Killa No. 21 (2-11) and Khewat/Khata No. 142/153, Mu No. 11, Killa No. 5(6-8) and Khewat/Khata No. 143/154 Mu No. 11Killa no. 6 (4-5), waka mauja Naharpur Rupa, Tehsil and Distt. Gurgaon, Haryana; vide Transfer Deed (Blood Relation) dated 28/05/2018 which is registered as Document No. 3204, SR-Gurgaon and Intend to mortgage the said property with **Aditya Birla Capital Ltd.** If any person(s) has/have any objection(s) or claim(s) with respect to the right, title or interest in the said property may please contact us within 07 days from the date of this notice on the number & address mentioned herein below, failing which my client(s) shall not be held responsible in any manner whatsoever.

Khaitan & Khaitan
A-38 Kailash Colony,
New Delhi-110048,
Ph. No: 011-49774545

PUBLIC NOTICE

Information is given to general public at large that our client Mr. Tek Chand S/o Mr. Rampal is the owner of Freehold Residential Plot No. 31/1 (New No. 623), area measuring 80 sq. yds. (i.e., 66.88 sq. mtrs.), part of Khasra No. 343, situated at Sarvodaya Colony, Village Mawai, Pargana Loni, Tehsil & District Ghaziabad, U.P. by virtue of Sale Deed dated 01.09.2020 as Doc. No. 2391, in Book No. I, Vol. No. 8326, on pages 117-154, dated 01.09.2020 in S.R-V Ghaziabad.. till date and has lost/Misplace his Original Regd. GPA dated 20.10.2015 as Doc. No. 693, in Book No. IV, Vol. No. 162, on pages 287-296, dated 20.10.2015 in S.R-V Ghaziabad. it was executed in favour of Sh. Sher Singh S/o Sh. Amrit Singh, now our client is declaring that that any other Person does not have any right over the said property, and same property sold too be Smt. Priyanka Singh and same has been finance by AAVAS FINANCIERS LITIMED Branch: NSP, Delhi. If any person(s) have any objection(s) or claim(s) with respect to the` right, title or interest in the Said Property then contact us within 07 days from the date of Publication of this notice and or the same to the undersigned if found by anyone. Thereafter no claim shall be entertained

[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad
Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

NAME CHANGE

I, SHRUTI KUMARI D/o Gopal Jha R/o E-1/355, Gali No. 8, Laxmi Vihar, Avadh Public School, Prem Nagar-3, Kirari Suleman Nagar, Sultanpuri C Block, Delhi-110086, now have changed my name as Alisha and desire to be known for all purpose as Alisha in place of former name Shrui Kumari

NAME CHANGE

I, hitherto known Manorama Bharti alias Manorama D/O Mohan Singh W/O Sanjay Kumar, R/O 2/62 Ground Floor, Old Rajender Nagar, Rajender Nagar, Central Delhi, Delhi, 110060,have changed my name and shall hereafter be known as MANORAMA BHARTI

PUBLIC NOTICE

Information is given to general public at large that our client Mr. Ashish Kumar Mishra S/o Mr. Malik Ram Mishra is the owner of Freehold Residential Vacant Plot No.64 Area Measuring 100 Sq. Yds. i.e. 83.61 Sq. Mtrs. out of Khasra No.59 Situated at Block-Alpha Situated at Village Dargal Pargana Jalalabad Tehsil and District Ghaziabad, U.P. by virtue of Sale Deed dated 13.06.2025 Vide Doc No.6899, Book No.1, Volume No.22183, on Page Nos. 383-402, Registered on 13.06.2025, in S.R-I Ghaziabad. till date and has lost/Misplace his Original Sale Deed dated 22.03.2022 Vide Doc No.3672, Book No.1, Volume No.19055, on Page Nos.189-218, Registered on 22.03.2022, in S.R-II Ghaziabad. it was executed in favour of Mrs. Usha Malik W/o Mr. Harender Veer Malik, now our client is declaring that that any other Person does not have any right over the said property, and same has been finance by AAVAS FINANCIERS LITIMED Branch: Ghaziabad Uttar Pradesh. If any person(s) have any objection(s) or claim(s) with respect to the` right, title or interest in the Said Property then contact us within 07 days from the date of Publication of this notice and or the same to the undersigned if found by anyone. Thereafter no claim shall be entertained

[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad
Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

सार्वजनिक सूचना

यह कि, **श्रीमती बीना यादव पत्नी श्री प्रदीप कुमार मेसर्स कैन फिन होम्स लिमिटेड से 90 वर्ग गज क्षेत्रफल वाले प्लॉट के लिए ऋण चाहती हैं, जो खेवट/खाता संख्या 105 मुस्तकिल संख्या 125 किला संख्या 2(8-0), 3(8-0), 4/2(0-15), 7(6-1), 8(6-8), 9(6-18) में शामिल है, जो वाका सिवाना मौजा फारुख नगर, तहसील फारुख नगर और जिला गुड़गांव, (हरियाणा) में स्थित है; इसके बाद इसे उक्त संपत्ति कहा जाएगा;** यह कि श्रीमती बीना यादव ने हमें बताया है कि पिछली मालिक श्रीमती सरिता ने निम्नलिखित दस्तावेज **बिक्री विलेख 5574 दिनांक 29.03.2012 और 654 दिनांक 05.06.2018 एलआर नंबर 132270412501061** कहीं खो दिए हैं या गलत जगह रख दिए हैं, जो पता लगाने योग्य नहीं हैं या नहीं मिल सकते हैं। यदि किसी व्यक्ति या किसी व्यक्ति को कानूनी उत्तराधिकारियों, बंधक, उपहार, पट्टा, उत्तराधिकार, ग्रहणाधिकार या अन्य किसी माध्यम से उक्त दस्तावेजों पर कोई दावा प्राप्त हुआ है या है या उक्त दस्तावेजों पर कोई आपत्ति है तो वह प्रकाशन की तिथि से 7 दिनों के भीतर नीचे दिए गए दिल्ली कार्यालय के पते पर लिखित रूप में हस्ताक्षरकर्ता को सूचित करें, इन उपरोक्त दस्तावेजों को ऐसे दावों के लिए शून्य और अमान्य घोषित किया जाना चाहिए और यदि कोई हो तो उसे माफ कर दिया जाएगा और ऐसा न करने पर, वह उपरोक्त मालिकों के साथ बिक्री लेनदेन को पूरा करने के लिए आगे बढ़ेगा जैसे कि उक्त संपत्ति के संबंध में कोई तीसरे पक्ष का दावा/आपत्ति/विवाद नहीं है और उसके बाद कोई दावा/आपत्ति/विवाद स्वीकार नहीं किया जाएगा।

मेसर्स पास एंड एसोसिएट्स, एलएलपी
बी-132, मालवीय नगर,
नई दिल्ली-110017
मोबाइल - 09991116006

NAME CHANGE

It is for general information that I, SATYAWAN S/O KHEM CHAND R/O SIGRA, BUCHOLI (76), PO: BUCHOLI, DIST: MAHENDRA-GARH, HARYANA-123034 declare that name of mine has been wrongly written as SATYAWAN YADAV in my Son Prashant Yadav in his school 10th CBSE Certificate records. The actual name of mine is SATYAWAN, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE

I, Surendra S/O Kanhaiya Lal R/O Sara, Sara , Govindpuri, Ghaziabad, Uttar Pradesh -201201, have changed the name of my minor Son Puspendra aged 17 years and he shall hereafter be known as Prabhas

NAME CHANGE

I hitherto known as Milisha Sharma, D/o. Shri Parveen Sharma, residing at RZF222/8C, GALI NO.31-C, SADH NAGAR 2 PALAM COLONY,DIST: SOUTH WEST DELHI, DELHI-110045 , have changed my name and shall hereafter be known as MAHIMAA SHARMA.

PUBLIC NOTICE

I/We M/s 7 Seas Business Solution holding a Registration Certificate No. B- 0911/DEL/PART/100/5/9311/2018 under the Emigration Act, 1983 for export of manpower, have closed our business with effect from 04-03-2023. In the event if there is any claim against company or Proprietor/ Managing Partner/ Managing Director, the same may be referred within 30 days of publication of this Notice, Copies of the complaint may also be sent to Protector General of Emigrants, Ministry of External Affairs, Sushma Swaraj Bhawan, Chankyapuri, New Delhi.

Mohd. Zahid Partner

NAME CHANGE

I, NEERAJ SHARMA son of SH RAJESH SHARMA resident of HOUSE NO 108, UGF, GALI NO 3, NEAR HANUMAN DHARAM KANTA, SAIDULAJAB VILLAGE, NEW DELHI-110030 have changed my name from NEERAJ SHARMA to NEERAJ VATS for all future purposes.That my name NEERAJ SHARMA and NEERAJ VATS is same and one. person.

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I, Sudhisht jha S/O Prem Chnad Jha R/O VP-54, Inder Enclave-II, Nithari, North West Delhi, Delhi, 110086, declare that name of my wife has been wrongly written as Preeti in my minor Son namely Alok Jha aged 15 years in his school records. The actual name of my wife is Sangeeta, which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I, Shankar Kumar Mandal S/o Mukh Lal Mandal R/o A-25/1, 2nd Floor, Swam Singh Road, Adarsh Nagar, North West Delhi, Delhi-110033 declare that name of my minor son has been wrongly written as Aarav in my minor son Aarav Kumar aged 14 years in his School Records. The actual name of my minor son is Aarav Kumar.

सार्वजनिक सूचना

यह जनसामान्य को सूचित किया जाता है कि जगवती देवी शिक्षा समिति अपने निदेशक श्री प्रमोद कुमार पुत्र श्री चंद्रपाल उर्फ चंद्र सिंह के माध्यम से, एक गैर-कृषि भूमि की स्वामित्वधारी है, जिसका क्षेत्रफल 0.2030 हेक्टेयर है, जो कि खसरा संख्या 159/1 एवं 159/2 से संबंधित है। यह भूमि गांव - बंजरपुर, परगना - ढकौर, तहसील एवं जनपद - गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश के क्षेत्र में स्थित है। उपरोक्त भूमि का स्वामित्व बिक्री विलेख (सेल डीड) के माध्यम से स्थापित हुआ है, जिसका विवरण निम्नलिखित है-
दस्तावेज संख्या - 16918, पुस्तक संख्या - 01, वॉल्यूम संख्या - 20943, पृष्ठ संख्या - 341 से 398 तक, दिनांक - 21.06.2016, पंजीकरण कार्यालय - सदर ग्रेटर नोएडा। इसके अतिरिक्त, जगवती देवी शिक्षा समिति अपने निदेशक श्री प्रमोद कुमार पुत्र श्री चंद्रपाल उर्फ चंद्र सिंह के माध्यम से, उपरोक्त वर्णित संपत्ति को यूनिटी स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड, जिसका पता है- 1201, 12वीं मंजलि, अंसल भवन, 16 कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110001, के पक्ष में ऋण/क्रेडिट सुविधा के एवज में बंधक रखा रहा है।यदि किसी व्यक्ति को संबंधित संपत्ति के संबंध में कोई आपत्ति हो, तो कृपया नोटिस की तिथि से 07 दिनों के भीतर अपनी आपत्ति लिखित रूप में प्रस्तुत करें। उक्त आपत्ति को पंजीकृत डाक के माध्यम से निम्नलिखित पते पर और ई-मेल के माध्यम से भेजा जा सकता है। यदि ऐसा नहीं किया जाता है, तो उपर्युक्त के अनुसार दावा को संबंधित संपत्ति के संबंध में शून्य और अमान्य माना जाएगा।

[ASHWANI KUMAR] Advocate
Chamber No. 122,
Tehsil Compound, Ghaziabad, U.P.

NAME CHANGE

It is for general information that I, Aas Mohammad S/o Aashique Ali R/o B-127 GALI NO 4, B-BLOCK BRIJPURI, DELHI -110094, declare that the name of my father has been wrongly written as ASIF ALI in my Passport No. N7434009. The actual name of my father is Aashique Ali, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE

It is for general information that I, SHILPA MITTAL W/O LATE SH. MOHIT MITTAL R/O D-21, ROSE APARTMENT, SECTOR-14 EXTENTION, ROHINI, NORTH WEST DELHI, DELHI-110085, declare that name of my minor daughter has been wrongly written as YASHVI in my minor Daughter YASHVI MITTAL aged 14 years in her school record. The actual name of my daughter is YASHVI MITTAL, which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE

NOTICE is hereby given to public at large on behalf of my client **Smt. Rekha Bhardwaj** in respect of Third Floor with roof rights, Property Bearing No.B-16, Area measuring 50Sq.Yds , Khasra No. 193, Situated at abadi of Golden Park, Shiv Puri, in the area of Village Khureji Khas, Illaqa Shahdara, Delhi- 110051 claiming to have undisputed ownership. Now my client intends avail loan facility and in which **SMFG India Home Finance Company Limited** will provide the financial assistance If any person(s) has/have any objection(s) or claim(s) with respect to the right, title or interest in the said property may please contact us within Seven days from the date of this notice on the number & address mentioned herein below, failing which my client(s) shall not be held responsible in any manner whatsoever

Khaitan & Khaitan
A-38 Kailash Colony,
New Delhi-110048,
Ph. No: 011-49774545

NAME CHANGE

I, NO-15330311N Rank-HAV Name-JAGANNADHAM KARRI residing at H.NO-7-49, LAKKAVARAM, CHODAVARAM MANDALAM, VISAKHAPATNAM, ANDHRA PRADESH-531075, have changed my minor son's name from KOMAL to KARRI KOMAL for all future purposes vide affidavit dated 27/09/2025 Before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE

I, YASHIKA daughter of SANJEEV MALHOTRA residing at HOUSE NO-4502, GALI NO-5, AJEET NAGAR, GANDHI NAGAR, SHAHDARA, DELHI-110031 have changed my name to YASHIKA MALHOTRA for all future purpose.

NAME CHANGE

I TOUPHIK AHMED S/O HAMEED R/O Kareem baksh jalalabad (rural)shamli jalalabad utter pradesh,247772 HAVE CHANGED MY NAME TO TOUFIK

NAME CHANGE

I PREETI ARORA W/O RAM KALRA R/O 18/24/3 OLD GOVIND PURA STREET NO 22 NEAR GOPAL MANDIR EAST DELHI DELHI-110051 HAVE CHANGED MY NAME TO PREETI KALRA FOR ALL FUTURE PURPOSE.

PUBLIC NOTICE

This is to notify the public at large that I, Netrapal Sharma, S/o Lt. Sh. A.P. Pathak, residing at B3/382, Paschim Vihar, Delhi-110063, have executed and registered my last will and testament dated 07.03.2022, bearing DORIS reference number 202049398 registered at Sub-Registrar, Sub Division, Punjabi Bagh. I declare that this is my only valid will and testament and revoke/cancel all previous wills and codicils made by me, if any.Henceforth, any other will or codicil made prior or subsequent to the above-mentioned will shall be considered null and void.
Netrapal Sharma
Aadhar number 729922124390

NAME CHANGE

I, Satish Gupta S/o Banarsi Dass, R/o Ward No:7, Kanina (Rural) (14), Mahendragarh, Haryana - 123027, have changed my name to Satish Kumar for all intends and purposes.

PUBLIC NOTICE

I, hitherto known as VIJAY KUMAR DABRAL S/O LATE SHRI CHANDRA DATT DABRAL R/O FLAT NO. 14D, THIRD FLOOR, BLOCK-HIG, SECTOR-82, NOIDA, PO: MAHARISHI NAGAR, GAUTAM BUDDHA NAGAR, UTTAR PRADESH-201304 have changed the name of my minor son TANAY DABRAL aged 17 years and he shall hereafter be known as AARAV DABRAL.

PUBLIC NOTICE

NOTICE is hereby given to public at large that my client **Smt. Renu Chauhan** is the owner of House admeasuring 60 Sq. yrds. out of 120 Sq. yrds. out of Khasra no. 843 situated at village Barola , Dadri , Gautambudh Nagar, UP; vide Gift Deed dated 24.09.2025 which is registered as doc no. 6062 vol no. 10758 pages 333-352 dated 24.09.2025 in SRO Noida III and Intend to mortgage the said property with **Cholamandalam Investment and Finance Company Ltd.** If any person(s) has/have any objection(s) or claim(s) with respect to the right, title or interest in the said property may please contact us within 07 days from the date of this notice on the number & address mentioned herein below, failing which my client(s) shall not be held responsible in any manner whatsoever.

Khaitan & Khaitan
A-38 Kailash Colony,
New Delhi-110048,
Ph. No: 011-49774545

सार्वजनिक सूचना

यह सूचित किया जाता है कि श्रीमती संगीता एवं श्री भूपिंदर कुमार, श्री अशोक कुमार से संपत्ति क्रय करने का इरादा रखते हैं, जो संपत्ति संख्या 92, क्षेत्रफल 52 वर्ग गज, खसरा नंबर 32/6 से संबंधित है, जो गांव पोंसंगीपुर, दिल्ली राज्य की राजस्व संपदा में स्थित है और जिसे पूर्व उत्तम नगर, नई दिल्ली के नाम से जाना जाता है। इस संपत्ति के मूल मालिक श्री महेश चंद रस्तोगी थे, जिन्होंने इसे श्री हीरालाल एवं अन्य से दिनांक 27.11.1971 को रजिस्टर्ड बिक्री विलेख (Sale Deed) के माध्यम से खरीदा था। तत्पश्चात, उन्होंने यह संपत्ति श्रीमती कृष्णा देवी को दिनांक 25.03.1981 को नोटराइज्ड जनरल पावर ऑफ अटॉर्नी (GPA), नोटराइज्ड एग्रीमेंट टू सेल (ATS) और वसीयत (Will) के माध्यम से हस्तांतरित कर दी। इसके बाद इस संपत्ति के स्वामित्व का क्रम इस प्रकार है- श्रीमती कृष्णा देवी ने संपत्ति को श्रीमती साशी खन्ना को दिनांक 26.03.1981 को नोटराइज्ड GPA, ATS और वसीयत के माध्यम से स्थानांतरित किया। श्रीमती साशी खन्ना ने इसे श्रीमती कृष्णा बत्रा को दिनांक 19.07.1991 को नोटराइज्ड GPA, ATS और वसीयत के माध्यम से स्थानांतरित किया। श्रीमती कृष्णा बत्रा ने इसे श्री अजय कुमार नेब को दिनांक 28.09.1992 को नोटराइज्ड GPA, ATS और वसीयत के माध्यम से स्थानांतरित किया। श्री अजय कुमार नेब ने इसे श्री गुरु देवी सिंह को दिनांक 24.10.1996 को नोटराइज्ड GPA, ATS और वसीयत के माध्यम से स्थानांतरित किया। श्री गुरु देवी सिंह ने इसे श्री जस्मेर सिंह को दिनांक 15.01.1997 को नोटराइज्ड GPA, ATS और वसीयत के माध्यम से स्थानांतरित किया। श्री जस्मेर सिंह ने इसे श्री अमरजीत सिंह को दिनांक 12.08.1997 को नोटराइज्ड GPA, ATS और वसीयत के माध्यम से स्थानांतरित किया। श्री अमरजीत सिंह ने इसे श्री इकबाल सिंह को दिनांक 17.06.2002 को रजिस्टर्ड GPA, नोटराइज्ड ATS और वसीयत के माध्यम से स्थानांतरित किया। अंत में, श्री इकबाल सिंह ने इसे श्री अशोक कुमार को दिनांक 23.01.2003 को नोटराइज्ड GPA, नोटराइज्ड ATS और वसीयत के माध्यम से स्थानांतरित किया। इस प्रकार, श्री अशोक कुमार उक्त संपत्ति के पूर्ण और वैध स्वामी हैं। कृपया ध्यान दें कि उक्त संपत्ति वर्तमान में बजाज हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड द्वारा वित्तपोषित किए जाने का प्रस्तावित है। यदि किसी व्यक्ति को उपरोक्त संपत्ति के संबंध में कोई आपत्ति हो, तो कृपया इस सूचना की तिथि से 07 दिनों के भीतर अपनी आपत्ति लिखित रूप में प्रस्तुत करें। उक्त आपत्ति नीचे दिए गए पते पर पंजीकृत डाक के माध्यम से एवं ई-मेल द्वारा अधोहस्ताक्षरी को भेजी जा सकती है। यदि निर्दिष्ट अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होती है, तो उक्त संपत्ति के संबंध में कोई भी दावा अमान्य और निष्प्रभावी माना जाएगा।

[ASHWANI KUMAR] Advocate
Chamber No. 122,
Tehsil Compound, Ghaziabad, U.P.

NAME CHANGE

I Violet Masih D/O Nanak Masih R/O. Solanki Bhawan, W.Z-14, Asalat pur, Janakpuri B-1 S.O. West Delhi, Delhi - 110058 changed my name to Saneh Gaba.

NAME CHANGE

I hitherto known as Sreekumar P alias Sreekumar Purushothaman Nair, S/o P. Purushothaman Nair, R/o 300/B-1, Shalimar Garden Extension-I, Sahibabad; Ghaziabad, Uttar Pradesh-201005 have changed my name and shall hereafter be known as Sreekumar Purushothaman Nair

NAME CHANGE

I hitherto known as Prabha Rai W/o Sunil Rai R/o Flat No-D-1601, Tower-B, Near Atal Chowk Sector-15, Vasundhra, Ghaziabad, Uttar Pradesh-201012 have changed my name and shall hereafter be known as *Kalindi Rai*

NAME CHANGE

I, VINOD BALA D/O RAM DEV R/O A1-0013, IREO SKYON, SECTOR-60, GURGAON-122002, HARYANA, HAVE CHANGED MY NAME TO VINOD MALHOTRA FOR ALL FUTURE PURPOSE

NAME CHANGE

I,GARIMA BHAKUNI, W/O PANKAJ BISHT, R/O C-7/141, Sector, ROHINI, NORTH WEST DELHI DELHI-110085, HAVE CHANGED MY NAME TO GARIMA BISHT FOR ALL FUTURE PURPOSES.

NAME CHANGE

I, MALA LAL W/O PANKAJ KUMAR LAL, R/O PLOT NO-50, KH. NO-21/2/2, BLOCK-F, QUTUB VIHAR PHASE-1, QUTUB PUR, SOUTH WEST DELHI, DELHI-110071 HAVE CHANGED MY NAME TO MALA DEVI FOR ALL FUTURE PURPOSES

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I Sujot Kumar S/O: Koushal Thakur, R/O HOUSE NO. 32, DHARM COLONY. TYAGI VIHAR, Nanglol, West Delhi, Delhi -110041,declare that name of mine has been wrongly written as Sujeet Kumar in my minor daughter namely Shikha Kumari aged 14 Years in her School records. The actual name of mine is SUJOT KUMAR which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I Sudhir Saxena S/O Babu Ram, R/O C-74, KAILASH VIHAR, KIRARI, SULEMAN NAGAR, SULTAN PURI MAJRA, North West Delhi, Delhi - 110086, declare that name of mine and my wife has been wrongly written as Sudhir and Sandhya in my minor daughter namely Nandini aged 13 years in her school records. The actual name of mine and my wife are SUDHIR SAXENA AND SANDHYA SAXENA,which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE

I, Prashant Chauhan S/O: Yashpal, R/O 224-A, Gali No-2, New Lohor Colony, Shastri Nagar, Gandhi Nagar, East Delhi, Delhi 110031,have changed the name of my minor son Dhanjay alias Paras Chauhan aged 7 years and he shall hereafter be known as PARV CHAUHAN.

कौमी पत्रिका

संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।

Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002

फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300

E - mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in

R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472

Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

राजेन्द्र ढाका बने भारत रक्षा मंच हरियाणा के प्रांत संगठन मंत्री

एजेंसी

हिसार। भारत रक्षा मंच का शस्त्र पूजन कार्यक्रम गुरुग्राम जिले के सोहना में बड़े उत्साह और पारंपरिक विधि-विधान के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में मंच के राष्ट्रीय संगठन मन्त्री एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व वरिष्ठ प्रचारक महावीर सिंह मुख्य अतिथि रहे, जबकि अध्यक्षता भारत रक्षा मंच के राष्ट्रीय मन्त्री एवं उत्तर क्षेत्र संगठन मन्त्री सत्यवान बिरला ने की। कार्यक्रम के दौरान मंच की हरियाणा प्रान्त की नई कार्यकारिणी की घोषणा की गई। मंच के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री शशांक चोपड़ा ने राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सर्वसम्मति से हरियाणा प्रांत के नये दायित्वों की घोषणा की। इसमें हिसार निवासी राजेन्द्र ढाका को हरियाणा प्रांत का संगठन मंत्री नियुक्त किया गया। इसके साथ ही प्रोफेसर सुनील कुमार को प्रांत महामंत्री तथा मास्टर रणबीर और सुशील जोशी को प्रांत मंत्री की जिम्मेदारी सौंपी गई है। यह नियुक्तियां मंच के आगामी कार्य विस्तार और संगठनात्मक मजबूती को ध्यान में रखते हुए की गई हैं। नव नियुक्त प्रांत संगठन मंत्री राजेन्द्र ढाका ने राष्ट्रीय नेतृत्व का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे राष्ट्रीय संगठन के मार्गदर्शन में हरियाणा प्रांतमें मंच के कार्यों को नई गति और दिशा देंगे। उन्होंने बताया कि भारत रक्षा मंच का उद्देश्य राष्ट्रीय सुरक्षा, सांस्कृतिक गौरव और समाज में देशभक्ति की भावना को सुदृढ़ करना है।

किसानों को समय पर मिले गेट पास, अधिकारी धान की समय पर खरीद करे सुनिश्चित : उपायुक्त विरेंद्र दहिया

पानीपत। हरियाणा के पानीपत की मंडियों में खरीद प्रबधों का जायजा लेने के लिए डीसी वीरेंद्र कुमार ने दहिया जिले की बाबरपुर व पानीपत मंडी का दौरा किया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि धान खरीद के दौरान किसानों को दिक्कत नही आनी चाहिए, किसानों को फसल का उचित दाम मिले और फसल का समय पर उठान हो। उन्होंने अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए कि यदि धान खरीद के दौरान किसी भी खरीद एजेंसी कि कौताही पाई गई उस एजेसी के खिलाफ कार्यवाही की जाएगी। डीसी ने बताया कि धान गीली होने के कारण खरीद समय पर नही हो रही है, यदि नमी 17 है तो खरीद हो जाएगी, डीसी ने किसानो के सामने मंडी में धान में नमी की जांच की जिसमे 22 तक नमी पाई गई, डीसी ने बताया कि जो धान सूखी है एजेंसी व मिलर्स द्वारा धान खरीदी जा रही है। उन्होंने बताया कि अब तक करीब 60 प्रतिशत धान की खरीद हो चुकी है। उन्होंने किसानों से अपील की है कि वह अपनी धान की फसल को सूखा कर ही मंडियों में लाए ताकि फसल का उचित दाम मिल सके। उन्होने किसानों से अनुरोध किया है कि वह धान की कटाई के बाद खेत में खड़े अवशेषों को न जलाए, इससे खेतो की शक्ति तो घटती ही है वही प्रदुषण को भी बढावा मिलता है।

गर निगम क्षेत्र में साढ़े चार करोड के विकास कार्यो का शुभारंभ

हिसार। नगर निगम की ओर से विकास कार्यों को गति देने के लिए साढ़े चार करोड़ के विकास कार्यों का शुभारंभ किया गया। विधायक सावित्री जिंदल एवं मेयर प्रवीण पोपली ने वार्ड 12 में 50 लाख रूपये की लागत से बनने वाली सड़क और साउथ बाईपास पर 4 करोड से लगने वाली स्ट्रीट लाईट का शुभारंभ किया।सबसे पहले वार्ड 12 में बनने वाली सीसी सड़क का शुभारम्भ किया गया जो शीश महल से न्यू मॉडल एक्सटेंशन तक बनाई जाएगी। कार्यकारी अभियंता जयबीर डूडी ने बताया कि इस सीसी सड़क को बनाने में लगभग 42 लाख रूपये की लागत आएगी। इसको बनाने में 6 माह का समय लगेगा और एजेंसी के द्वारा इस कार्य की देखरेख पांच वर्ष तक की जाएगी। सके बाद नगर निगम द्वारा बगला रोड मोड से साउथ बाईपास आधार अस्पताल तक लगाए जाने वाले स्ट्रीट लाइट के खम्बों व एलईडी लाइट के कार्य का शुभारंभ किया गया। यह कार्य नगर निगम द्वारा दिव्य नगर योजना और एमसी फंड के द्वारा किया जा रहा है। कार्यकारी अभियंता जयबीर डूडी ने बताया कि विकास कार्य निगमायुक्त नीरज के आदेशानुसार किया जारहे है। इस कार्य को करने में लगभग 6 माह का समय लगेगा। उन्होंने बताया कि यह कार्य एमएस जेएसबी इंटरप्राईज एजेंसी के द्वारा किया जाएगा।

कैथल में 12 अक्टूबर को होगा जेजेपी का युवा योद्धा सम्मेलन

चंडीगढ़। जननायक जनता पार्टी ने अपनी गतिविधियां तेज करते हुए 15 जिलों में पार्टी की जिला बैठकों और जनसंपर्क के कार्यक्रम घोषित किए है। 28 सितंबर से जेजेपी राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ अजय सिंह चौटाला, पूर्व डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला व जेजेपी प्रदेशाध्यक्ष बृज शर्मा प्रदेशभर का दौरा करेंगे। अभियान के तहत वे सभी 22 जिलों में जाकर जेजेपी पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं से मिलेंगे और संगठन मजबूती पर फोकस करेंगे। इनके साथ-साथ 28 सितंबर को सोनीपत, 29 सितंबर को गुरुग्राम, 4 अक्टूबर को हिसार, 5 अक्टूबर को पानीपत, 6 अक्टूबर को यमुनानगर, 8 अक्टूबर को करनाल और 9 अक्टूबर को झज्जर जिले में जनसंपर्क किया जाएगा। इनके अलावा 12 अक्टूबर को जेजेपी कैथल जिले में युवा योद्धा जिला सम्मेलन करेगी। कार्यक्रम के आयोजक जेजेपी युवा प्रदेश अध्यक्ष दिग्विजय चौटाला ने कहा कि यह जेजेपी 'युवा योद्धा अभियान' का दूसरा जिला सम्मेलन कार्यक्रम होगा।

स्वच्छ भारत मिशन के तहत करनाल ने पांच शहरों को लिया गोद

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के करनाल जिले में स्थित सचिवालय सभागार में स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) के तहत स्वच्छ शहर जोड़ी-समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। स्वच्छता के प्रति मार्गदर्शन के लिए करनाल नगर निगम की ओर से प्रदेश के 5 शहरों की नगर पालिकाओं के साथ एमओयू किया गया। केंद्रीय ऊर्जा, आवासन व शहरी कार्य मंत्री मनोहर लाल सोनीपत से वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए देश की विभिन्न निकाय संस्थाओं से जुड़े और स्वच्छ शहर जोड़ी पर प्रकाश डाला। इस मौके पर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि स्वच्छता सर्वेक्षण में इस बार करनाल को देश में तीसरा स्थान प्राप्त हुआ था। अब करनाल प्रदेश के 5 शहरों- सीवन व राजौंद (कैथल),

ईस्माइलाबाद (कुरुक्षेत्र), नारनौंद (हिसार) और कालांवाली (सिरसा) का स्वच्छता को लेकर मार्गदर्शन करेगा। इस बारे में आज एमओयू साइन किया गया। उन्होंने कहा कि दूसरे शहरों अथवा कस्बों को भी स्वच्छ, सुंदर व हरा भरा बनाने के लिए निर्धारित मापदंडों को पूरा किया जाएगा। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि हम हरियाणा के शहरों के बीच भी स्वच्छता की प्रतियोगिता आयोजित करेंगे। हमने हरियाणा के शहरों की रैंकिंग भी तय की है। उसके लिए कुछ पैरामीटर भी तय किए हैं। नगर निगम, नगर पालिका और नगर परिषद क्षेत्र में साफ-सफाई के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं ताकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जो सपना है कि प्रदेश साफ-सुथरा हो, शहर स्वच्छ हों, हरे भरे हों, उसे साकार किया जा सके। पत्रकारों से बातचीत करते हुए मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि स्वच्छता में बेहतर रैंकिंग पाने वाले शहरों ने आज पांच-पांच अन्य शहरों को गोद लिया है ताकि भविष्य में इन्हें भी स्वच्छ बनाया जा सके। पिछले स्वच्छता सर्वेक्षण में करनाल के साथ-साथ सोनीपत ने भी बेहतर रैंक प्राप्त किया था। आज सोनीपत ने होडल, नारनौल, पटौदी मंडी, फर्रूखनगर व कुंडली को गोद लिया है। उन्होंने कहा कि स्वच्छता से कई प्रकार की बीमारियों से बचा जा सकता है।

वास में हुई भैंसों की नीलामी, 1.58 लाख की लगी सबसे बड़ी बोली

एजेंसी

हिसार। यहां के लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय में भैंसों की नीलामी का आयोजन किया गया। इस नीलामी में प्रदेश भर के पशुपालकों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, जिससे बोली की प्रक्रिया काफी उत्साहजनक रही।

नीलामी में कुल 85 पशु बिक्री के लिए रखे गए। खरीदारों ने हर पशु की क्षमता और उसके दूध उत्पादन के आधार पर उसे खरीदा। इस दौरान 20 भैंसों की कीमत एक लाख से अधिक रही, और किसानों ने इनमें विशेष रुचि दिखाई। इस नीलामी की सबसे बड़ी बोली 1.58 लाख की लगी, जो इस आयोजन की सबसे अधिक कीमत थी। नीलामी स्थल पर पशुपालकों का जोश देखने लायक था। किसानों ने बताया कि ऐसी नीलामियों से उन्हें उच्च नस्ल और बेहतर गुणवत्ता वाले पशु मिलते हैं, जिससे उनका डेयरी व्यवसाय बेहतर होता है। इस अवसर पर, विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा ने शनिवार को कहा कि ये नीलामियां किसानों को उत्तम नस्ल के पशु देने के साथ-साथ पशुपालन क्षेत्र में आर्थिक मजबूती और वैज्ञानिक सोच को भी बढ़ावा देती हैं। उन्होंने किसानों से ऐसे कार्यक्रमों में अधिक से अधिक भाग लेने का आग्रह किया। विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने बताया कि भविष्य में भी इस तरह की नीलामियां आयोजित की जाती रहेंगी, ताकि पशुपालकों को और भी बेहतर पशु मिल सकें और पशुपालन एक लाभदायक व्यवसाय बन सके।

हरियाणा सरकार ने की बाजरे की कीमत में 50 रुपये प्रति क्विंटल की बढ़ोतरी

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा सरकार ने किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए निर्णय लिया है कि राज्य में खरीद संस्थाओं द्वारा खरीदे जा रहे बाजरे के मूल्य में 50 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ोतरी करते हुए 2200 रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से खरीद की जाएगी। भावांतर भरपाई योजना के अंतर्गत 575 रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से किसानों के बैंक खातों में सीधे तौर पर स्थानांतरित किए जायेंगे। इस वर्ष प्रदेश के 5,06,313 किसानों द्वारा बाजरे के लिए मेरी फसल मेरा ब्योरा पोर्टल पर अपना पंजीकरण करवाया गया है।

इससे किसानों को सरकार द्वारा खरीद किये जा रहे बाजरे पर भारत सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम समर्थन मूल्य 2775 रुपये की अदायगी होगी। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले विभाग के एक प्रवक्ता ने इस बारे में जानकारी देते हुए बताया कि पहले यह राशि 2150 रुपए प्रति क्विंटल थी और भावांतर भरपाई योजना के अंतर्गत 625 रुपए प्रति क्विंटल के

भावांतर भरपाई योजना के अंतर्गत 575 रुपए के हिसाब से होगी किसानों का अदायगी

हिसाब से किसानों के खातों में स्थानांतरित किए गए जिसके फलस्वरूप राज्य के किसानों को भारत सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम समर्थन की अदायगी हो रही है। उन्होंने बताया कि बाजरे के बाजार भाव की समीक्षा करने के उपरांत किसान भाइयों के हित को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा निजी व्यापारियों द्वारा राज्य के किसानों से ई-खरीद माध्यम से बाजरे की खरीद 2200 रुपये प्रति क्विंटल से अधिक किसी भी दर पर खरीदा जाता है तो उस स्थिति में भी सरकार किसानों को भावांतर भरपाई योजना के अंतर्गत निर्धारित 575 रुपये प्रति क्विंटल राशि का भुगतान करेगी। उल्लेखनीय है कि राज्य में खरीफ सीजन 2025-26 के दौरान बाजरे की खरीद 23 सितंबर से शुरू हो चुकी है। राज्य में बाजरे की खरीद हेतु 92 मण्डियां / खरीद केंद्र खोले गए हैं। हैफेड एवं हरियाणा राज्य भण्डारण निगम खरीद संस्था द्वारा खरीद की जा रही है।

हर महिला करवाए स्वास्थ्य जांच, तभी परिवार होगा मजबूतः डा. अरविंद शर्मा

एजेंसी

सोनीपत। गोहाना में सहकारिता, कारागार, निर्वाचन, विरासत व पर्यटन मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नारी शक्ति के उत्थान के लिए ऐतिहासिक कदम उठाए हैं। 17 सितंबर से चल रहे स्वस्थ मां सशक्त परिवार अभियान में हर महिला की भागीदारी से ही राष्ट्र सशक्त बनेगा। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे आसपास की महिलाओं को स्वास्थ्य जांच के लिए नजदीकी केंद्र पर ले जाएं। सहकारिता मंत्री डॉ अरविंद शर्मा नागरिक अस्पताल, गोहाना में आयोजित महिला स्वास्थ्य जांच शिविर में पहुंचे। यहां उन्होंने रिबन काटकर शिविर का शुभारंभ किया और आयुष्मान कार्ड पात्र लाभार्थियों को वितरित किए। डॉ शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पिछले 11 वर्षों में महिलाओं के सम्मान और सशक्तिकरण के लिए कई योजनाएं शुरू हुई हैं। प्रधानमंत्री ने पहली बार महिलाओं से आग्रह किया है कि वे अपनी स्वास्थ्य जांच करवाकर खुद को स्वस्थ रखें,

क्योंकि स्वस्थ नारी ही सशक्त परिवार की नींव है। डॉ शर्मा ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि अभियान का घर-घर प्रचार किया जाए और हर महिला को निशुल्क जांच के लिए शिविरों में बुलाया जाए। उन्होंने कहा कि मातृ शक्ति का स्वास्थ्य राष्ट्र निर्माण की सबसे बड़ी पूंजी है, इसलिए हर व्यक्ति को इसकी जिम्मेदारी समझनी चाहिए। उन्होंने विभिन्न स्टालों का निरीक्षण किया और लाभार्थियों से योजनाओं की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने क्षय रोगियों को लायन्स क्लब, गोहाना की ओर से पोषण किट वितरित की। शिविर में 470 नागरिकों ने स्वास्थ्य जांच करवाई। सेवा पखवाड़ा अभियान के तहत उन्होंने अपने कार्यालय में मां कात्यायनी की पूजा कर हवन किया और प्रधानमंत्री मोदी के दीर्घायु होने की प्रार्थना की।

योग्यता के आधार पर मिलेगी सरकारी नौकरी: मनोहर लाल

- गन्नौर 216 मेधावी छात्रों को सम्मानित किया
- 21 छात्रों को स्कूटी, 85 को टैबलेट और 110 को साइकिल दी

ज्योति दर्पण

सोनीपत। गन्नौर में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को सम्मानित करने के लिए देवा सोशल डेवलपमेंट सोसायटी द्वारा छठा और सातवां युवा सम्मान समारोह बीएसटी ग्राउंड गन्नौर में आयोजित किया गया। समारोह में कुल 216 मेधावी छात्रों को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि केन्द्रीय ऊर्जा और आवास मंत्री मनोहर लाल ने मेधावी विद्यार्थियों को पुरस्कार स्वरूप स्कूटी, टैबलेट और साइकिलें भेंट कीं। इनमें 21 छात्रों को स्कूटी, 85 को टैबलेट और 110 को साइकिल दी गई। यह सम्मान दसवीं और बारहवीं बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को दिया गया। पुरस्कार पाकर छात्र-छात्राओं और अभिभावकों के चेहरे खुशी से झूम उठे। कार्यक्रम की अध्यक्षता देवा सोसायटी के संस्थापक और विधायक देवेंद्र कादियान ने की। दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों ने मनमोहक सांस्कृतिक

प्रस्तुतियों से सभी का दिल जीत लिया। मैं मनोहर लाल बोल रहा हूं गीत पर प्रस्तुति देख केंद्रीय मंत्री भी भावविभोर हो उठे।

विधायक देवेंद्र कादियान ने सोसायटी द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता के क्षेत्र में किए गए कार्यों की जानकारी दी। उन्होंने छात्रों को सफलता के लिए मेहनत और ईमानदारी अपनाने की प्रेरणा दी। साथ ही गन्नौर की अंतरराष्ट्रीय बागवानी मंडी को जोड़ने के लिए छोटे बाईपास की मांग रखी। इस पर केंद्रीय मंत्री ने शीघ्र कार्रवाई का आश्वासन दिया। मनोहर लाल ने कहा कि सरकार ने योग्यता के आधार पर बिना पर्ची और बिना खर्ची नौकरी देने का कार्य किया है। अब युवाओं को नौकरी के लिए किसी सिफारिश या धन की आवश्यकता नहीं। उन्होंने कहा कि रैपिड ट्रेन दिल्ली से सोनीपत, गन्नौर होकर करनाल तक जाएगी, जिससे क्षेत्र के विकास को नई गति मिलेगी।

केंद्रीय मंत्री ने बताया कि सोनीपत से करनाल तक सड़क के दोनों ओर उद्योग स्थापित किए जा रहे हैं, जिससे युवाओं के लिए नए रोजगार बनेंगे। राई एजुकेशन सिटी में आईआईटी खुल चुकी है, बड़ी में रेल फैक्टरी बन चुकी है और जल्द ही आईएमटी की नींव रखी जाएगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वदेशी अभियान को अपनाकर हमें आत्मनिर्भर भारत बनाना होगा। भारत अब विश्व की चौथी सबसे बड़ी ताकत बन चुका है और वर्ष 2027 तक तीसरे स्थान पर पहुंच जाएगा। स्कूटी पाने वाले मेधावियों में अदिति, माही, नेहा, दिव्यांशी, अंजली, खुशी, हिमांशी,श्रुति, लक्की, प्राची सहित अन्य शामिल रहे। इस मौके पर प्रदेशाध्यक्ष मोहनलाल बड़ौली, विधायक कृष्णा गहलावत, निखिल मदान, मेयर राजीव जैन, उपायुक्त सुशील सारवान और बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

नारनौल में 230 पेंशन लाभार्थियों को दिए पेंशन स्वीकृति पत्र

एजेंसी

नारनौल। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता, अनुसूचित जातियां एवं पिछड़े वर्ग कल्याण तथा अंत्योदय (सेवा) विभाग की ओर से सेवा पर्व के तहत रेडक्रॉस भवन में पेंशन स्वीकृति पत्र वितरण व रक्तदान शिविर कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में नगराधीश डॉ मंगलसेन ने मुख्य अतिथि के तौर पर शिरकत की। नगराधीश डॉ मंगल सेन ने कहा कि दो अक्टूबर तक मनाई जा रहे सेवा पर्व के तहत सभी विभाग अपने विभाग द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ आम व्यक्ति तक पहुंचाएं। उन्होंने कहा कि सेवा विभाग की ओर से आज 230 पेंशन लाभार्थियों को पेंशन स्वीकृति पत्र वितरित किए गए। साथ ही सेवा विभाग द्वारा रेडक्रॉस के सहयोग से रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया। इसमें अनेक युवाओं ने आज रक्त दान किया। जिला समाज कल्याण अधिकारी अमित शर्मा ने कहा कि सेवा विभाग द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का प्रत्येक उस व्यक्ति को जो योजना में सारे मापदंड पूरा करता हो उसे लाभ समय पर मिलेगा। वृद्धावस्था सम्मान भत्ता और अन्य प्रकार की पेंशन विभाग द्वारा समय पर बनाई जाती हैं। उन्होंने विभाग द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की विस्तार से जानकारी भी दी।

नागरिक अधिकारों की रक्षा करता है कानून: अशीम कुमार घोष

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के राज्यपाल प्रो. अशीम कुमार घोष ने कहा कि कानून लोकतंत्र की रीढ़ है, लेकिन इसकी असली ताकत इस बात में निहित है कि इसे कितनी स्पष्टता और प्रभावी ढंग से तैयार किया जाता है। विधायी प्रारूपण केवल शब्दों को कागज़ पर उतारना नहीं है, बल्कि यह न्याय को जीवंत व शासन को सुदृढ़ करने और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करने के बारे में है। एक अच्छी तरह से तैयार किया गया कानून स्पष्टता, एकरूपता और निष्पक्षता सुनिश्चित करता है। राज्यपाल हरियाणा विधानसभा व लोकसभा की संविधान एवं संसदीय अध्ययन संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित विधायी प्रारूपों एवं संवर्धन विषय पर हरियाणा विधानसभा व अन्य विभागों के कर्मचारियों व अधिकारियों के लिए आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। राज्यपाल ने कहा कि विधायी प्रारूपण भी एक लोकतांत्रिक ज़िम्मेदारी है। एक चुना हुआ जनप्रतिनिधि (विधायक) जनता की इच्छा का प्रतिनिधित्व करता है। वहीं, विधायी

प्रारूपण को तैयार करने में लगे अधिकारी व कर्मचारी भी अहम भूमिका निभाते हैं।इसलिए उनमें दक्षता व कौशलता होनी चाहिए, तभी एक सधा हुआ कानून बनता है जो कि राजनीतिक दृष्टि और व्यावहारिक शासन के बीच सेतु का काम करता है। उनकी भूमिका के लिए न केवल कानूनी विशेषज्ञता बल्कि नैतिक संवेदनशीलता की भी आवश्यकता होती है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कानून की भाषा न्याय, समानता और संवैधानिक मूल्यों को मूर्त रूप दे। हरियाणा विधानसभा के अध्यक्ष हरविंद्र कल्याण ने अपने संबोधन में कहा कि विधायी प्रारूपण कानून की आत्मा है। यह लोकतंत्र की श्रेष्ठतम सेवा है। व्यक्ति का कोई भी पद या पावर ज्ञान के कारण ही लोगों के काम आता है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विजन और गृह मंत्री अमित शाह की पहल थी कि विधायी प्रारूपण के लिए अनुभवी व ज्ञानी लोगों की टीम तैयार की जाए, ताकि वे लोकहित में सरल भाषा में कानून बनाने में योगदान दे सके। उन्होंने राज्यपाल को इस बात से अवगत कराया कि हरियाणा विधानसभा देश की ऐसी पहली विधानसभा है, जिसमें विधायी प्रारूपण के लिए अपने सचिवालय व अन्य विभागों के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए विधायी प्रारूपण पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया है। उन्होंने बताया कि लोकसभा के अध्यक्ष ओम बिरला ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन किया था। बिरला हरियाणा की 15वीं विधानसभा गठन के बाद पिछले एक साल में चार बार हरियाणा विधानसभा के लिए दौरा कर चुके हैं। बिरला पहले विधायकों के लिए ओरियंटेशन, दूसरी बार हरियाणा विधानसभा के सचिवालय के कर्मचारियों व अधिकारियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में, तीसरी बार देश के सभी शहरी स्थानीय निकायों के मेयरों के लिए आयोजित गुरुग्राम के मानेसर में हुए कार्यक्रम में और चौथी बार इस विधायी प्रारूपण कार्यक्रम में उपस्थित हुए हैं ।

पानीपत के समालखा फ्लाईओवर पर कैंटर की टक्कर में चालक की मौत

एजेंसी

पानीपत। पानीपत के समालखा फ्लाईओवर पर दो कैंटरों की भीषण टक्कर में एक ड्राइवर की मौत हो गई। हादसा अल सुबह तीन बजे नेशनल हाईवे 44 पर हुआ, जब एक तेज रफ्तार कैंटर ने फ्लाईओवर पर खड़े खराब कैंटर को पीछे से टक्कर मार दी। पुलिस के अनुसार पानीपत से पत्थर भरकर फरीदाबाद जा रहा एक आयशर कैंटर जीटी रोड पर समालखा के पास फ्लाईओवर के ऊपर खड़े प्लास्टिक पाइप से भरे कैंटर से टकरा गया। प्लास्टिक पाइप से लदे कैंटर का अगला टायर फट गया था। जिस कारण वह फ्लाईओवर पर सड़क किनारे बिना इंडिकेटर जलाए खड़ा था। टक्कर इतनी जोरदार थी कि पत्थर भरे कैंटर का ड्राइवर केबिन में फंस गया। मौके पर पहुंची पुलिस ने राहगीरों की मदद से ड्राइवर को बाहर निकाला और सामान्य अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

जीएसटी कर सुधार से नई आर्थिक क्रांति का हुआ शुभारंभः मनोहर लाल

एजेंसी

पानीपत। पानीपत में केंद्रीय ऊर्जा, आवास और शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल ने भाजपा के जिला कार्यालय श्याम कमल में पत्रकार वार्ता करते हुए कहा कि जीएसटी कर सुधार से कृषि, उद्योग और एमएसएमई, उद्योगपतियों और व्यापारियों, उपभोक्ताओं को भी राहत पहुंचाने का कार्य किया है। मनोहर लाल ने कहा कि जीएसटी कर सुधार से नई आर्थिक क्रांति का शुभारंभ हुआ है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आमजन से जुड़ी हुई ज्यादा से ज्यादा चीजों पर ज्यादा टैक्स घटाया है ताकि सीधे तौर पर आम जनता को लाभ हो। जीएसटी के नए स्लैब में 90 प्रतिशत वस्तुएं ऐसी हैं जो 28 से 12 प्रतिशत की गई हैं। और 99 प्रतिशत वस्तु ऐसी है जो 18 से 5 प्रतिशत की गई है। टैक्स कम होने से आमजन की खरीद की क्षमता बढ़ेगी रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। कर्मचारी छोटा किसान उन्हें बचत के अवसर प्राप्त होंगे और निवेश के अवसर भी उन्हें मिलेंगे। उन्होंने कहा कि जो उद्योग संकट से उभर नहीं पा रहे थे, टैक्स के नए सिलेबस आने से उनके उद्योगों को गति मिलेगी और

उत्पादन क्षमता बढ़ेगी। उनके उत्पादों की मांग बढ़ेगी और वे लोगों को ज्यादा से ज्यादा रोजगार भी दे पाएंगे। उन्होंने कहा कि भारत सरकार के कुशल वित्त प्रबंधन के कारण जहां भारत विश्व की चौथी अर्थव्यवस्था बन गया है वहीं देश की आंतरिक अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने और समाज के हर वर्ग को राहत प्रदान करने के लिए सरकार ने जहां इनकम टैक्स की सीमा को बढ़ाकर 12 लाख रुपए वार्षिक किया है वहीं अब वस्तु एवं सेवा कर की दर को घटाकर 5 और 18 प्रतिशत करके भी आम जनता को बड़ी राहत प्रदान करने का काम किया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त 2025 के स्वतंत्रता दिवस पर जनता से इस बार की दिवाली पर देश की जनता से कर सुधार का वादा किया था।

NAME CHANGE
I, Sarvesh Kumar Yadav S/o Jamadar Singh, Permanent Resident of Gram Gonda, Mahu, Auraiya, Uttar Pradesh - 206251, Presently Residing at Village Ghatta, Samaspur, Sector - 56, Gurugram, Haryana - 122001, have changed my name and shall hereafter be known as Umesh Singh

युवा रोजगार लेने वाले नहीं, रोजगार दने वाले बनें : डॉ रवि भूषण

एजेंसी

पानीपत। पानीपत में विश्व पर्यटन दिवस पर आर्य कॉलेज के पर्यटन विभाग द्वारा प्रश्नोत्तरी, वादविवाद, रंगोली व पारंपरिक परिधान प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाया गया। प्रतियोगिताओं में कॉलेज के सभी संकायों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय,कुरूक्षेत्र के पर्यटन विभाग के पूर्व निदेशक प्रो.डॉ. रवि भूषण ने शिरकत की। इस अवसर पर प्रो.डॉ. रवि भूषण ने कहा कि विश्व पर्यटन दिवस हर साल 27 सितंबर को मनाया जाता है। इस दिन का उद्देश्य पर्यटन के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक महत्व को जागरूक करना है। इसके साथ ही विश्व भर के लोगों में पर्यटन के लिए जागरूकता पैदा करना और इसके लिए प्रेरित करना है। उन्होंने कहा कि पर्यटन ही एक ऐसा माध्यम है जिससे अलग-अलग सांस्कृतियों से लोगों को जोडा जा सकता है। उन्होंने यह भी बताया कि भारत के लोगों में भी घूमने-फिरने का बहुत शौक है और वो अपने शौक को ही अपने रोजगार का जरिया भी बना सकते हैं। प्राचार्य डॉ. जगदीश गुप्ता ने बताया कि हर साल विश्व पर्यावरण दिवस के लिए अलग थीम चुनी जाती है। वर्ष 2025 में विश्व पर्यटन दिवस का थीम पर्यटन और सतत परिवर्तन रखा गया है जिसका उदेश्य रोजगार के अवसर बढाना है। उन्होंने बताया कि प्रतियोगिताओं में विद्या र्थियों ने शानदार प्रस्तुतियां से सभी का मन मोह लिया। पारंपरिक परिधान प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने अलग-अलग तरह के परिधान पहन वॉक की। उन्होंने अंत में कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताओं से विद्यार्थियों को अपने अंदर छिपी हुई प्रतिभा को निखारने का अवसर तो मिलता ही है साथ में नई-नई जानकारियां भी मिलती हैं। इस अवसर पर डॉ. विजय सिंह, प्राध्यापिका अदिति मित्तल, प्रीति शर्मा, नवीन, साहिल समेत कॉलेज के अन्य स्टाफ सदस्य भी मौजूद रहे।

ब्रिक्स देशों ने बैठक में व्यापार पर लगने वाले ऊंचे टैरिफ पर जताई गहरी चिंता

व्यापार को खराब कर सकती हैं, इससे विकासशील देशों को हो सकता है नुकसान

न्यूयॉर्क

ब्रिक्स देशों के विदेश मंत्रियों ने बैठक में व्यापार पर लगने वाली सख्त पाबंदियों पर गहरी चिंता जताई। इन देशों का मानना है कि ऊंचे टैरिफ और गैर-टैरिफ बाधाएं दुनिया के व्यापार को खराब कर सकती हैं। इससे विकासशील देशों को नुकसान हो सकता है। संयुक्त राष्ट्र महासभा का 80वां सत्र चल रहा था। यह बैठक शुक्रवार को संपन्न हुई। भारत ने इसकी अध्यक्षता की, क्योंकि अगले साल भारत ब्रिक्स का चेयर बनेगा। ब्रिक्स में ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका, मिस्र, इथियोपिया, इंडोनेशिया, ईरान और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देश शामिल हैं। इन देशों के विदेश मंत्रियों ने संयुक्त बयान जारी कर कहा कि बिना सोचे-समझे टैरिफ बढ़ाना और प्रोटेक्शनिज्म की नीतियां गलत हैं। ये कदम जबरदस्ती के तौर पर इस्तेमाल किए जा रहे हैं। इससे वैश्विक व्यापार कम हो सकता है। सप्लाई चेन टूट सकती हैं। अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में अनिश्चितता फैल सकती है। मंत्रियों ने चेतावनी दी कि ऐसी एकतरफा कार्रवाइयां विश्व व्यापार संगठन यानी डब्ल्यूटीओ के नियमों के खिलाफ है। ये वैश्विक व्यापार को बांट सकती हैं। ग्लोबल साउथ के देशों को किनारे कर सकती हैं। वे चाहते हैं कि ऐसी प्रथाओं से बचा जाए। बैठक में भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने मेजबानी की। उन्होंने कहा कि ब्रिक्स को बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली की रक्षा करनी चाहिए। आजकल प्रोटेक्शनिज्म बढ़ रहा है। टैरिफ में उतार-चढ़ाव हो रहा है। गैर-टैरिफ बाधाएं व्यापार को प्रभावित कर रही हैं।जयशंकर ने एक्स पर पोस्ट में लिखा कि अशांत दुनिया में ब्रिक्स को शांति निर्माण, बातचीत, कूटनीति और अंतरराष्ट्रीय कानून का संदेश मजबूत करना चाहिए। ब्लॉक को संयुक्त राष्ट्र में सुधारों की आवाज बुलंद करनी चाहिए। खासकर सुरक्षा परिषद में बदलाव जरूरी हैं।

आइलाइन खरीदी में बंपर उछाल

अमेजन ने 38 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों के आने की सूचना दी

नई दिल्ली

जीएसटी कटौती के कारण मौजूदा त्यौहारों में उपभोक्ता अधिक खरीदारी कर रहे हैं। महानगरों तथा उभरते बाजारों में त्यौहारी मांग 23-25 प्रतिशत तक बढ़ी है। जीएसटी के कारण इलेक्ट्रॉनिक्स जैसी महंगी श्रेणियों में कीमत कम हुई है। नवरात्रि के पहले दिन 22 सितंबर से प्रभावी जीएसटी सुधारों ने बड़े स्क्रीन वाले टीवी, मध्यम श्रेणी के फैशन और फर्नीचर सहित कई श्रेणियों में जीएसटी कर दरों में कमी की है। इससे उपभोक्ताओं को सीधे मूल्य लाभ मिला है। इन बदलावों ने खरीदारों को छूट की तलाश से आगे बढ़कर अधिक खरीदारी करने के लिए प्रोत्साहित किया है। इससे मझौले और छोटे शहरों से भागीदारी बढ़ी है और सोच-विचार कर किए जाने वाले खर्च में वृद्धि को बढ़ावा मिला है। एक रिपोर्ट के अनुसार बड़े टीवी पर जीएसटी को 28 से घटाकर 18 प्रतिशत करने से खुदरा कीमतों में 6-8 प्रतिशत की गिरावट आ गई है। इससे प्रीमियम मॉडल की मांग बढ़ी है। इसतरह 2,500 रुपये से कम कीमत वाली फैशन वस्तुओं पर अब सिर्फ पांच प्रतिशत जीएसटी लग रहा है, इससे इस परिधानों की खरीदारी को बढ़ावा मिल रहा है। इसी तरह फर्नीचर की बिक्री भी बढ़ी है। पहले दो दिनों की बिक्री में सालाना आधार पर 23-25 प्रतिशत की वृद्धि हुई। जीएसटी 2.0 सुधारों और त्यौहारी माहौल की दोहरी ताकतों ने प्रीमियम स्मार्टफोन और टीवी की खरीदारी में तेजी ला दी। रिपोर्ट में कहा गया कि मांग इतनी ज्यादा थी कि कुछ एप बहुत धीमे हो गए और ऑर्डर देने की कोशिश के कुछ ही मिनटों में क्रैश हो गए। ई-कॉमर्स दिग्गज अमेजन ने अपनी त्यौहारी सेल के पहले दो दिनों में 38 करोड़ से ज्यादा ग्राहकों के आने की सूचना दी है।

भारत में परफॉर्मेंस वीएलएफ मॉबस्टेर लॉन्च

नई दिल्ली

भारत में वीएलएफ कंपनी ने अपना पहला आईसीई (इंटरनल कंबशन इंजन) परफॉर्मेंस वीएलएफ मॉबस्टेर लॉन्च कर दिया है। यह स्कूटर सीधे अप्रीलिया एसआर 175 और टीवीएस एनटॉर्क 150 जैसे प्रीमियम स्कूटर्स को टक्कर देने के लिए तैयार है।

इसकी शुरुआती कीमत 1.30 लाख रुपये (एक्स-शोरूम, इंट्रोडक्टरी) रखी गई है। वीएलएफ मॉबस्टेर को मशहूर इटैलियन डिज़ाइनर अलेसांड्रो टारटारीनी ने डिजाइन किया है। इसका लुक एग्रेसिव और स्पोर्टी है, जिसमें फ्रंट में ट्विन एलईडी हेडलैम्प्स और डीआरएलएस, लंबी फ्लाईस्क्रीन और एक्सपोज़्ड हैंडलबार शामिल हैं। स्पोर्टी सीट और 12-इंच के अलॉय व्हील्स इसे स्ट्रीटफाइटर बाइक्स जैसी उपस्थिति देते हैं। स्कूटर दो कलर ऑप्शन रेड और ग्रे में उपलब्ध है और यह खासतौर पर युवाओं को टारगेट करता है। फीचर्स की बात करें तो इसमें 5-इंच का टीएफटी डिस्प्ले (ब्लूटूथ कनेक्टिविटी के साथ), इल्युमिनेटेड स्विचगियर, कीलेस इग्निशन, ऑटो स्टार्ट/स्टॉप और ऑल-एलईडी लाइटिंग जैसे आधुनिक फीचर्स दिए गए हैं।

खास बात यह है कि यह अपनी कैटेगरी का पहला 125सीसी स्कूटर है जिसमें स्विचेबल डुअल-चैनल एबीएस और ट्रैक्शन कंट्रोल मौजूद हैं। वीएलएफ मॉबस्टेर में 125सीसी का सिंगल-सिलेंडर इंजन है, जो 12 बीएचपी की पावर और 11.7 एनएम टॉर्क देता है।

1.30 लाख रुपये की शुरुआती कीमत पर मिलने वाला यह स्कूटर फीचर्स, डिजाइन और परफॉर्मेंस के मामले में प्रीमियम सेगमेंट में एक मजबूत दावेदार बनता है।

होंडा सीबी300आर की कीमत घटी

अब 2.19 लाख में उपलब्ध

नई दिल्ली

बीते दिनों होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया ने घोषणा की थी कि वह 350सीसी से कम कैपेसिटी वाली अपनी मोटरसाइकिल और स्कूटर्स पर जीएसटी का पूरा लाभ ग्राहकों को देगी। इस लिस्ट में शुरुआत में सीबी300आर शामिल नहीं थी, लेकिन अब होंडा ने अपनी आधिकारिक वेबसाइट पर इसकी कीमत को रिवाइज्ड कर दिया है। अब होंडा सीबी300आर की एक्स-शोरूम कीमत 2.19 लाख रुपए हो गई है, जो पहले 2.40 लाख रुपए थी। इससे कुल 21,000 रुपए की बड़ी कटौती हुई है। इस अपडेट के बाद सीबी300आर अब केटीएम 250 ड्यूक (2.12 लाख रुपए), ट्रायम्फ स्पीड 400 (2.50 लाख रुपए) और टीवीएस अपाचे आरटीआर 310 (2.21 लाख से 2.87 लाख रुपए) जैसे कॉम्पिटिटर्स के मुकाबले ज्यादा किफायती विकल्प बन गई है। इस मोटरसाइकिल में 286सीसी का सिंगल-सिलेंडर, डीओएचसी, लिक्विड-कूल्ड इंजन लगा है, जो 31 हॉर्सपावर और 27.5 एनएम टॉर्क देता है। इंजन स्लिप और असिस्ट क्लच वाले 6-स्पीड गियरबॉक्स से जुड़ा है।

पहले सीबी300आर की कीमत 2.77 लाख रुपए थी, जिसे स्थानीय उत्पादन बढ़ने के चलते घटाकर 2.40 लाख रुपए किया गया था। अब जीएसटी रिवाइज्ड के चलते यह और भी सस्ता हो गया है। इस कदम से सीबी300 आर अपने सेगमेंट में बेहतरीन वैल्यू फॉर मनी विकल्प बन गई है, जो कीमत, पर्फॉर्मेंस और फीचर्स का संतुलित मिश्रण पेश करती है। हालांकि, सीबी300आर को इस कटौती का फायदा मिला है, वहीं होंडा के अन्य बिगविंग मॉडल जैसे एनएक्स500, रेबेल 500 और सीबीआर650आर की कीमतों में जीएसटी रिवाइज्ड के बाद वृद्धि हुई है।

देश की 10 बड़ी कंपनियों का मार्केट कैप 2,99,661.36 करोड़ रुपए घटा

अमेरिकी फैसलों और रुपए की कमजोरी ने निवेशकों का विश्वास कमजोर किया

नई दिल्ली

बीते हफ्ते शेयर बाजार में आई गिरावट ने देश की सबसे बड़ी कंपनियों के निवेशकों को झटका दिया। देश की 10 बड़ी कंपनियों का संयुक्त बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) 2,99,661.36 करोड़ रुपए घट गया। यह नुकसान ऐसे समय में हुआ जब वैश्विक और घरेलू दोनों स्तरों पर अनिश्चितताएं बनी हैं। इस दौरान आईटी सेक्टर की दिग्गज कंपनी टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) पर सबसे ज्यादा असर हुआ। कंपनी का मार्केट कैप 97,597.91 करोड़ घटकर 10,49,281.56 करोड़ पर आ गया।

बीते हफ्ते बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) का सेंसेक्स 2,199.77 अंक यानी 2.66फीसदी गिरकर बंद हुआ। विशेषज्ञों का मानना है कि अमेरिकी नीतिगत फैसलों और रुपए की कमजोरी ने निवेशकों का विश्वास कमजोर किया है। एक कंपनी के सीईओ ने कहा कि अमेरिका द्वारा एच-1बी वीजा फीस में बड़ी बढ़ोतरी से टेक्नोलॉजी शेयरों में भारी बिकवाली देखने को मिली। इसके साथ ही भारतीय रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले निचले स्तर पर पहुंच गया, जिससे विदेशी निवेशकों का रुख सतर्क हो गया। वहीं अमेरिका द्वारा ब्रांडेड और पेटेंटेड दवा आयात पर 100 फीसदी टैरिफ लगाने के फैसले से भी बाजार पर बुरा असर पड़ा है।

इस दौरान रिलायंस इंडस्ट्रीज का मार्केट कैप 40,462.09 करोड़ घटकर 18,64,436.42 करोड़ पर आ गया, लेकिन इसके बावजूद वह देश की सबसे मूल्यवान कंपनी बनी रही।

ट्रंप की विदेशी नीतियों से तबाह हुआ भारतीय शेयर बाजार

5 दिन में 16 लाख करोड़ स्वाहा

नई दिल्ली शेयर बाजार पिछले एक हफ्ते में तगड़ी गिरावट देखने को मिली है। सिर्फ 5 दिन में ही निवेशकों की वैल्यूवेशन 16 लाख करोड़ घट गई। शुक्रवार को करीब 7 लाख करोड़ रुपये की कमी आई, जो पूरे हफ्ते के दौरान सबसे बड़ी गिरावट रही। सप्ताह के आखिरी कारोबारी दिन सेंसेक्स 733.22 अंक गिरकर 80,426.46 पर क्लोज हुआ, जबकि निफ्टी4 236.15 अंक गिरकर 24,654.70 पर बंद हुआ। वहीं 1 सप्ताह के दौरान सेंसेक्स 2,097.63 अंक या 2.54 प्रतिशत और निफ्टी 631.80 अंक या 2.50 प्रतिशत गिर चुका है। बैंक निफ्टी में भी भारी गिरावट नजर आई है। इस सप्ताह में मार्केट हर सत्र में निचले स्तर पर बंद हुआ है। बीएसई पर लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैप इस दौरान 16 लाख करोड़ रुपये कम हुआ है। हफ्ते की शुरुआत में ही अमेरिका के एच-1बी वीजा का सीधा असर भारत के इक्विटी मार्केट दिखाई दिया था। सोमवार को भारतीय आईटी कंपनियों के शेयर में वीजा फीस की वजह से तगड़ी गिरावट देखने को मिली थी, जिस कारण आईटी सेक्टर पूरे हफ्ते गिरावट पर रहा।

रेनो ट्राइबर अब 5.73 लाख से 8.60 लाख रुपये में उपलब्ध

नई दिल्ली भारत में रेनो कंपनी की ट्राइबर 2025 फेसलिफ्ट, अब 5.73 लाख रुपये से 8.60 लाख रुपये की कीमत पर उपलब्ध है। रेनों की किफायती 7-सीटर एमपीवी 1.0-लीटर नैचुरली एस्पिरेटेड पेट्रोल इंजन के साथ आती है, जो 71बीएचपी की पावर और 96एनएम का टॉर्क जेनरेट करता है। गियरबॉक्स के तौर पर 5-स्पीड मैनुअल और एएमटी दोनों विकल्प मिलते हैं, साथ ही वैकल्पिक सीएनजी फिटमेंट का भी ऑप्शन दिया गया है। रियल-वर्ल्ड टेस्टिंग में एएमटी वर्जन की फ्यूल एफिशियंसी का पता चला है। सिटी ड्राइव में 73 किलोमीटर की राइड के दौरान 5.35 लीटर पेट्रोल की खपत हुई, जिससे माइलेज 13.64 केएमपीएल निकला। वहीं, हाईवे ड्राइव पर 82 किलोमीटर की दूरी में 4.59 लीटर तेल खपत हुई, जो 17.86 केएमपीएल का माइलेज देती है। ओवरऑल एवरेज, यानी सिटी और हाईवे को मिलाकर, ट्राइबर एएमटी का एवरेज माइलेज 14.69 केएमपीएल रहा। इसमें 40-लीटर का फ्यूल टैंक होने के कारण, यह एमपीवी एक फुल टैंक में लगभग 587 किलोमीटर का सफर तय कर सकती है। ट्राइबर एएमटी खासतौर पर उन खरीदारों के लिए सही विकल्प है जो कम बजट में 7-सीटर कार चाहते हैं।

अक्टूबर में शनिवार-रविवार मिलाकर 11 दिन बंद रहेगा शेयर मार्केट

दिवाली के दिन मुहूर्त ट्रेडिंग होगी वह भी महज एक घंटे के लिए

नई दिल्ली अक्टूबर में कई छुट्टियां हैं, जिसकी वजह से उस दिन सेंसेक्स और निफ्टी का कारोबार भी नहीं होगा। इस साल अक्टूबर के महीने में सेंसेक्स और निफ्टी शनिवार और रविवार को मिलाकर कुल 11 दिन बंद रहेंगे। बीएसई और एनएसई की तरफ से जारी कैलेंडर के मुताबिक अक्टूबर के महीने में 3 दिन ऐसे हैं जब शेयर बाजार में छुट्टी रहेगी। इसमें दिवाली भी शामिल है। बता दें, दिवाली के दिन मार्केट में सामान्य कारोबार नहीं होता है। इस दिन मूहूर्त ट्रेडिंग होती है। वह भी महज एक घंटे के लिए। एनएसई के कैलेंडर के मुताबिक 2 अक्टूबर को दशहरा और महात्मा गांधी जयंती की छुट्टी रहेगी। 21 अक्टूबर को दिवाली और लक्ष्मी पूजा और 22 अक्टूबर को दिवाली और बलिप्रतिपदा की छुट्टी रहेगी। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज और करेंसी डेरिवेटिव्स भी इन तीन दिनों के दौरान बंद रहेंगे। 2 अक्टूबर महात्मा गांधी जयंती और दशहरा की छुट्टी रहेगी। 21 अक्टूबर दिवाली लक्ष्मी पूजा की छुट्टी, 22 अक्टूबर को बलिप्रतिपदा की छुट्टी, 5 नवंबर को प्रकाश गुरुपर्व श्री गुरु नानक देव की छुट्टी, 25 दिसंबर क्रिसमस की छुट्टी रहेगी। एनएसई और बीएसई की तरफ से जारी सर्कुलर के मुताबिक 21 अक्टूबर मूहूर्त ट्रेडिंग होगी। दिवाली मूहूर्त ट्रेडिंग की टाइमिंग दोपहर 1.45 से 2.45 है। बता दें 2024 में मूहूर्त ट्रेडिंग मजबूती के साथ बंद हुआ था। तब सेंसेक्स 335 अंक या फिर 0.42 फीसदी की तेजी के साथ 79,724 अंक पर बंद हुए थे।

शेयर बाजार के लिए अगला हफ्ता रोमांचक होगा

आईपीओ की होगी बारिश

नई दिल्ली

अगला हफ्ता शेयर बाजार के लिए काफी रोमांचक रहने वाला है। मेनबोर्ड और एसएमई प्लेटफॉर्म पर कई नए आईपीओ और शेयर लिस्टिंग का दौर शुरू होने वाला है। चार बड़े आईपीओ और 16 छोटे आईपीओ निवेशकों के लिए अच्छा मौका है। ग्लोटिस, ओम फ्रेट फॉरवर्डर्स, फैबटेक टेक्नोलॉजीज और एडवांस एग्रोलाइफ जैसी कंपनियां करोड़ों रुपए जुटाने के लिए बाजार में उतर रही हैं, जबकि चिरहरित, सोधानी कैपिटल, विजयपीडी सीयुटिकल, ओम मेटालॉजिक और सुबा होटल्स जैसे छोटे आईपीओ भी बाजार में उपलब्ध होंगे।

इसके साथ ही अटलांटा इलेक्ट्रिकल्स, गणेश कंज्यूमर प्रोडक्ट्स, शेषासाई टेक्नोलॉजीज, सोलरवर्ल्ड एनर्जी सॉल्यूशंस और आनंद राठी शेयर एंड स्टॉक ब्रोकर्स जैसी कंपनियों की लिस्टिंग से बाजार में नया उत्साह देखने को मिलेगा। इस हफ्ते निवेशकों के लिए अवसर और रणनीति तय करने का सही समय है, क्योंकि नए इश्यू और लिस्टिंग से बाजार में खरीद-बिक्री की गतिविधियां बढ़ने की संभावना है।

ग्लोटिस कंपनी अपना आईपीओ लेकर आ रही है। ये कंपनी 307 करोड़ रुपए जुटाने की सोच रही है। इसमें 160 करोड़ रुपए का ताजा इश्यू शामिल है और 147 करोड़ रुपए का ऑफर फॉर सेल। इस इश्यू की कीमत बैंड 120 से 129 रुपए प्रति शेयर तय की गई है। सब्सक्रिप्शन की विंडो 29 सितंबर से शुरू होकर 1 अक्टूबर तक चलेगी। शेयरों की लिस्टिंग 7 अक्टूबर को हो सकती है।

ओम फ्रेट फॉरवर्डर्स भी बाजार में उतर रही है। इसका आईपीओ साइज 122.31 करोड़ रुपए है, जो ज्यादातर ऑफर फॉर सेल के जरिए आएगा। बोली लगाने का तीन दिन का समय 29 सितंबर से शुरू होगा और 3 अक्टूबर को खत्म होगा। इश्यू की कीमत बैंड 128 से 135 रुपए प्रति शेयर तय की गई है। लिस्टिंग की तारीख 8 अक्टूबर रखी गई है।

फैबटेक टेक्नोलॉजीज का आईपीओ 230.35 करोड़ रुपए का है। ये पूरी तरह से ताजा इक्विटी इश्यू है। शेयरों की कीमत 181 से 191 रुपए के बीच रखी गई है। आईपीओ सोमवार यानी 29 सितंबर को खुलेगा और 1 अक्टूबर को बंद होगा। शेयर बाजार में लिस्टिंग 7 अक्टूबर को हो सकती है।

इसके अलावा एग्रीबिजनेस पर फोकस करने वाली एडवांस एग्रोलाइफ कंपनी 192.86 करोड़ रुपए जुटाने वाली है। ये भी पूरी तरह से ताजा इश्यू है। बोली लगाने का समय 30 सितंबर से 3 अक्टूबर तक है। कीमत बैंड 95 से 100 रुपए प्रति शेयर है। लिस्टिंग 8 अक्टूबर को होगी।

देश की बिजली व्यवस्था मजबूत करने पावरग्रिड ने दो बड़े प्रोजेक्ट को दी मंजूरी

पहला प्रोजेक्ट 209.68 करोड़ रुपए तो दूसरा प्रोजेक्ट 495.83 करोड़ का

नई दिल्ली पावरग्रिड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड ने देश की बिजली व्यवस्था को और मजबूत करने के लिए दो बड़े प्रोजेक्ट को हरी झंडी दिखाई। इनकी कुल लागत 705.51 करोड़ रुपए है। कंपनी की निवेश समिति ने 26 सितंबर को हुई बैठक में इन योजनाओं को मंजूरी दी। ये प्रोजेक्ट नेशनल ग्रिड को बेहतर बनाने और प्राकृतिक आपदाओं से निपटने में मदद करेंगे। पहला प्रोजेक्ट 209.68 करोड़ रुपए का है। इसके तहत देश के पांचों क्षेत्रीय ग्रिड्स- उत्तरी, पूर्वी, पश्चिमी, दक्षिणी और उत्तर-पूर्वी- में वॉयस ओवर इंटरनेट प्रोटोकॉल सिस्टम (वीओआईपी) लगाया जाएगा। यह सिस्टम बिजली ट्रांसमिशन नेटवर्क को चलाने में बेहतर तालमेल और दक्षता लाएगा। इस प्रोजेक्ट का काम 23 अगस्त, 2026 तक पूरा होने की संभावना है। वीओआईपी सिस्टम से ग्रिड ऑपरेटर्स के बीच बातचीत आसान होगी। इससे बिजली आपूर्ति की निगरानी और प्रबंधन में सुधार होगा। दूसरा प्रोजेक्ट 495.83 करोड़ का है। इसके तहत मेक इन इंडिया पहल के तहत 20 सेट (300 टावर) इमरजेंसी रिस्टोरेशन सिस्टम (ईआरएस) खरीदे जाएंगे। यह सिस्टम प्राकृतिक आपदाओं या बुनियादी ढांचे में खराबी के दौरान बिजली लाइनों को जल्द ठीक करने में मदद करेगा। इस प्रोजेक्ट का काम 19 अप्रैल, 2027 तक पूरा होगा। ईआरएस सिस्टम देश की बिजली आपूर्ति को और भरोसेमंद बनाएगा। खासकर तूफान, बाढ़ या भूकंप जैसी आपदाओं में यह सिस्टम तेजी से काम करेगा। पावरग्रिड का कहना है कि ये दोनों प्रोजेक्ट देश की बिजली व्यवस्था को आधुनिक बनाने में अहम भूमिका अदा करेंगे। ये निवेश भारत की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करने और स्थानीय विनिर्माण को बढ़ावा देने की दिशा में भी बड़ा कदम हैं। कंपनी का फोकस नेशनल ग्रिड को और मजबूत करने पर है ताकि बिजली आपूर्ति में किसी तरह की रुकावट न आए। ये प्रोजेक्ट पावरग्रिड की दूरदर्शी सोच को दिखाते हैं, जो बदलते हालात और चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार हैं।

देश की बिजली व्यवस्था मजबूत करने पावरग्रिड ने दो बड़े प्रोजेक्ट को दी मंजूरी

पहला प्रोजेक्ट 209.68 करोड़ रुपए तो दूसरा प्रोजेक्ट 495.83 करोड़ का

नई दिल्ली

पावरग्रिड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड ने देश की बिजली व्यवस्था को और मजबूत करने के लिए दो बड़े प्रोजेक्ट को हरी झंडी दिखाई। इनकी कुल लागत 705.51 करोड़ रुपए है। कंपनी की निवेश समिति ने 26 सितंबर को हुई बैठक में इन योजनाओं को मंजूरी दी। ये प्रोजेक्ट नेशनल ग्रिड को बेहतर बनाने और प्राकृतिक आपदाओं से निपटने में मदद करेंगे। पहला प्रोजेक्ट 209.68 करोड़ रुपए का है। इसके तहत देश के पांचों क्षेत्रीय ग्रिड्स- उत्तरी, पूर्वी, पश्चिमी, दक्षिणी और उत्तर-पूर्वी- में वॉयस ओवर इंटरनेट प्रोटोकॉल सिस्टम (वीओआईपी) लगाया जाएगा। यह सिस्टम बिजली ट्रांसमिशन नेटवर्क को चलाने में बेहतर तालमेल और दक्षता लाएगा। इस प्रोजेक्ट का काम 23 अगस्त, 2026 तक पूरा होने की संभावना है। वीओआईपी सिस्टम से ग्रिड ऑपरेटर्स के बीच बातचीत आसान होगी। इससे बिजली आपूर्ति की निगरानी और प्रबंधन में सुधार होगा। दूसरा प्रोजेक्ट 495.83 करोड़ का है। इसके तहत मेक इन इंडिया पहल के तहत 20 सेट (300 टावर) इमरजेंसी रिस्टोरेशन सिस्टम (ईआरएस) खरीदे जाएंगे। यह सिस्टम प्राकृतिक आपदाओं या बुनियादी ढांचे में खराबी के दौरान बिजली लाइनों को जल्द ठीक करने में मदद करेगा। इस प्रोजेक्ट का काम 19 अप्रैल, 2027 तक पूरा होगा। ईआरएस सिस्टम देश की बिजली आपूर्ति को और भरोसेमंद बनाएगा। खासकर तूफान, बाढ़ या भूकंप जैसी आपदाओं में यह सिस्टम तेजी से काम करेगा। पावरग्रिड का कहना है कि ये दोनों प्रोजेक्ट देश की बिजली व्यवस्था को आधुनिक बनाने में अहम भूमिका अदा करेंगे।

ये निवेश भारत की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करने और स्थानीय विनिर्माण को बढ़ावा देने की दिशा में भी बड़ा कदम हैं।

कंपनी का फोकस नेशनल ग्रिड को और मजबूत करने पर है ताकि बिजली आपूर्ति में किसी तरह की रुकावट न आए। ये प्रोजेक्ट पावरग्रिड की दूरदर्शी सोच को दिखाते हैं।

जीएसटी दरें कम होने के बाद सस्ते हुए कई कंपनियों के मॉडल

नई दिल्ली नई जीएसटी 2.0 लागू होने के बाद देश में कई कंपनियों के पसंदीदा एसयूवी मॉडलों की कीमतों गिरावट आई है। इन प्रमुख मॉडलों में किआ, महिंद्रा और टाटा के ऐसे पांच मॉडल शामिल हैं, जिनकी मांग हमेशा मजबूत रही है। अब ये 1.35 लाख से 1.86 लाख रुपए तक सस्ते हो गए हैं। सबसे अधिक छूट किआ सिरोस को मिली है। एचटीएक्स प्लस (ओ) एटी वैरिएंट पर 1.86 लाख रुपए तक की कटौती हुई है, जिससे यह प्रीमियम अनुभव और शक्तिशाली इंजन के साथ ज्यादा आकर्षक विकल्प बन गया है। वहीं, किआ सोनेट के जीटीएक्स प्लस एटी वैरिएंट पर 1.64 लाख रुपए तक की छूट मिली है, जिससे यह सब-4 मीटर एसयूवी बाजार में अपनी स्थिति मजबूत करता है। महिंद्रा की कॉम्पैक्ट एसयूवी एक्सयूवी 3एक्सओ के एएक्स7एल वैरिएंट की कीमत में 1.56 लाख रुपए तक की कमी आई है। मजबूत बनावट और परफॉर्मेंस के साथ अब यह और भी किफायती विकल्प बन गई है। भारत की सबसे ज्यादा बिकने वाली कॉम्पैक्ट एसयूवी टाटा नेक्सन के फेयरलैस प्लस पीएस डीके वैरिएंट की कीमत में 1.55 लाख रुपए तक की कटौती हुई है, जिससे यह और भी आकर्षक और प्रतिस्पर्धी बन गई है। पॉपुलर ऑफ-रोडर महिंद्रा थार के एलएक्स 2डब्ल्यूडी वैरिएंट की कीमत में 1.35 लाख रुपए तक की कमी हुई है।

धान के रकबा को पाम की खेती के तैयार करना होगा, पाम तेल आत्मनिर्भरता जरूरी

सॉलिडारिडाड एशिया द्वारा तैयार श्वेत पत्र जारी

नई दिल्ली भारत में पाम तेल आत्मनिर्भरता पर शनिवार को जारी एक श्वेतपत्र में कहा गया है कि भारत को यदि पाम तेल आयात पर निर्भरता कम करनी है, तब 160.8 लाख हेक्टेयर छोटी जोत के धान के रकबा को पाम की खेती के तैयार करना होगा, साथ ही पाम तेल की उत्पादकता को वर्तमान 2.4 टन से बढ़ाकर 4-5 टन प्रति हेक्टेयर करने के लिए रणनीति तैयार करना होगा। सॉल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसईए) और एशियन पाम ऑयल अलायंस (एपीओए) के सहयोग से सॉलिडारिडाड एशिया द्वारा तैयार यह श्वेत पत्र पाम तेल के आयात पर भारत की भारी निर्भरता को कम करने, घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने और साल 2047 तक 50 प्रतिशत तक आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए एक व्यापक रणनीति प्रदान करता है।

खौफजदा हैं आपदा की त्रासदी के दृश्य, सुरक्षित करना होगा भविष्य

नरेन्द्र भारती वरिष्ठ

सरकार को चाहिए कि आपदा से बचाव के लिए प्रत्येक विभाग के कर्मचारियों को पूर्वाभ्यास करवाया जाए ताकि समय पर काम आ सके।पुलिस व अग्शिमन के कर्मचारियों को भी समय -समय पर ऐसे आयोजन करते रहना चाहिए।अगर सभी लोग आपदा से बचाव के तरीके समझ जाएगें तो तबाही कम हो सकती है। प्रकृति के प्रकोप से बचना है तो हमें अपनी जीवन शैली बदलनी ही होगी,छेड़छाड़ बंद करनी होगी।अगर अब भी मानव ने प्रकृति पर अत्याचार बंद नहीं किया तो प्रकृति अपना बदला लेती रहेगी और मानव को सबक सीखाती रहेगी।

आपदा की त्रासदी के दृश्य बहुत ही खौफजदा हैं भविष्य को सुरक्षित करना होगा। आपदा से सबक सीखने होगें तभी असमय होने वाली बाढ़ की घटनाओं को रोका जा सकता है। देवभूमि हिमाचल में ये आपदाओं की घटनाएं नई नहीं हैं सदियाँ गवाह हैं कि पहले भी देवभूमि में भयंकर आपदाऐं आती थी तबाही लाती थी लेकिन मानवीय तबाही नहीं होती थी क्योंकि तब आबादी कम थी गिने चुने कच्चे घर होतें थे जमीनें खाली थी पानी की निकासी आसानी से होती थी।प्रदेश में कंक्रीट के जंगल बन रहे हैं।जल इक्कठा होने से जलप्रलय होता है और जनजीवन अस्त व्यस्त हो जाता है।अवैध खनन से खडडों का स्वरुप बदल गया है। हर जगह नदी नालों के किनारे मकानों का निर्माण हो गया है। खनन हो रहा है फोरलेन के लिय पहाड़ों को अवैज्ञानिक तरीके से काटा जा रहा है।प्रकृति से अंधाधुध छेड़छाड़ हो रही है।नदियां अपना रास्ता बदल रही है और बेहिसाब तबाही मचा रही हैं।छोटे छोटे नाले भी तबाही मचा रहे है। बरसात के पानी की निकासी अवरुद्व होती जा रही है नतीजन तबाही होना स्वाभविक है। बीते सालों 2018 , 2022, 2023, 2024, में हुई तबाहीयों के जख्म अभी तक नहीं भर पाए हैं चार वर्षों से तबाही ही तबाही हो रही है। गत वर्ष 2024 में आनी के निरमंड में बादल फटने से समेज गांव में बहुत त्रासदी हुई जहां 45 लोग बेमौत मारे गए थे । 2025 में सैंज के पंग्लीयूर में एक ही परिवार के नौ लोग मारे गए है।आनी में भी एक ही परिवार के आठ लोग मकान के जमींदोज होने से जिंदा दफन हो गए। 2025 की बेरहम बरसात हिमाचल को गहरे व अमिट जख्म दे गई।जख्म तो भर जाएंगें मगर निशान अमिट रहेगें। प्रतिवर्ष मानवीय त्रासदियां हो रही हैं 2025 की बरसात सदियों तक याद रहेगी।सराज से शुरू हुए बरसात का आगाज का बहुत ही खौफनाक अंजाम हर जिला भुगत रहा है। 30 जून 2025 से लेकर 20 सितंबर तक बरसात का कहर बरपता रहा अभी कहीं कहीं छिटपुट बरसात हो रही है। सितंबर 2025 तक, हिमाचल प्रदेश में मानसून के कारण 46 बादल फटने, 98 अचानक बाढ़ और 146 बड़े भूस्खलन की घटनाओं में कम से कम 424 लोगों की मौत हुई है और लगभग 481 लोग घायल हुए हैं। प्रदेश को 4500 करोड़ से अधिक का नुकसान हुआ है और 15022 संरचनाओं को क्षति हुई है, जिसमें 1502 घर पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हुए हैं।लाचता हुए लोग अभी तक नहीं मिल रहे हैं। भयावह त्रासदी के बाद अब जीवन पटरी पर लौटने लगा है। त्रासदी में खोये अपनों के गम में रात दिन रोते रहे लोगों की आखों के आंसू सूख चुके हैं आखें पथरा गई हैं क्योकि आखों के सामने सब उजड़ गया आशियाने उजड़ चुके हैं। अपनों को खोने का गम क्या होता है यह वही जान सकता है जिसने आखों के सामने अपनों को बहते देखा हो। तिनका तिनका बिखरा है अब मुआबजा मिलेगा तभी नए आशियाने बन सकते हैं। उम्र भर की पसीने की कमाई से बनाए घर तबाह हाक गए। पल भर में सब तबाह हो गया आलिशान आशियाने मिटटी में मिल गए अब मलवे के ढेर ही बचे हैं। जो बीत गया है वह बीत गया अब आपदा से बचने के लिए नदी नालों के किनारे निर्माण पर पूर्ण पावदीं लगानी होगी ताकि जीवन बच सके ।नये सिरे से जीवन शुरू करना होगा तबाही का मंजर याद आता है तो आत्मा सिहर उठती है। हिमाचल में किन्नौर से लेकर भरमौर तक बरसात का कहर जारी रहा।सैंकडों लोग असमय ही काल के गाल में समा गए।देवभूमि में प्रकृति ने काफी खौफनाक तांडव किया।अगस्त से सितंबर तक बरसात ने खौफनाक रौद्र रुप दिखाए है।बरसात जिंदगियां लील रही है।सैंकडों लोग मौत के आगोश में समा चुके है।आशियाने जमींदोज हो चुके हैं।बरसात ने लोगों को एक बार फिर रौद्र रुप दिखाकर तबाही का मंजर दिखाया।बरसात में कहीं भूस्खलन हो रहा था तो कहीं पहाड़ दरक रहे थे।इस विनाशकारी प्रकृति के कहर से जनमानस खौफजदा था। प्रदेश की संडकें धंस रही थी।गांड़ियां फिसल रही थी मकान जमीदोज हो रहे थे परिवार के परिवार खत्म हो रहे थे। चारों तरफ चीत्कार मची हुई थी। मानसून का कहर लोगों को मौत गया हिमाचल प्रदेश को अब तक करोडों का नुक्सान हो चुका है।मानसून के कारण हुई दुर्घटनाओं में अब तक काफी लोग अपनी जान गंवा चुके है व लोग घायल हुए हैं।मौतों से हर हिमाचली गमगीन है। भूस्खलन व बरसात के कहर से प्रदेश में अब तक काफी लोग मारे जा चुके प्रदेश में हर जिला में लोगों के कच्चे व पक्के मकान जमींदोज हो चुके है।कुल्लु ,मण्डी व किन्नौर में भी काफी नुक्सान हुआ है।प्रकृति ने एक बार फिर अपना तांड़व मचाया है। इससे पहले हिमाचल में प्रकृति के कहर से हजारों लोग मारे जा चुके हैं।बरसात में प्रदेश में कई भीषण त्रासदियां हो चूकी है। कहीं मकानों के ढहने से बच्चे मारे गए तो कहीं सैंकडों पशुओं की दबकर मौत हो गइ हैं।दर्जनों लोग पानी में बह गए और करोडों की संपति तबाह हो गई। पहाड के मलवे की चपेट में आने से काफी जानमाल का नुक्सान हो रहा है।प्रकृति की इस विभिषिका में हजारों लोग अपंग हो गए है बच्चे अनाथ हो जाते है लाशे मलवे में दफन हो गई है।किन्नौर से भरमौर तक पहाड़ दरकने से लोग खौफजदा हैं।कहते है कि प्राकृतिक आपदाओं को रोक तो नहीं सकते परन्तु अपने विवेक व ज्ञान से अपने आप को सुरक्षित कर सकते है। हादसों व आपदाओं से न तो लोग सबक सीखते है और न ही सरकारें सबक सीखती हैं।कुछ दिन सरकारी अमला औपचारिकता निभाता है और उसके बाद अगली घटना तक कोई कारगर उपाय नहीं किए जाते। सरकारो को इस आपदाओं पर मंथन करना चाहिए तथा शिविर लगाकर महानगरों, शहरों व गांवो के लोगों को जागरुक किया जाए। तभी तबाही से बचा सकता है।प्रदेश में प्राकृतिक आपदाओं का कहर थमने का नाम नहीं ले रहा है। प्रकृति का कहर अनमोल जिन्दगीयां लील रहा है। पूरे राज्य में बरसात से त्रासदी हो रही है। भीषण बाढ़ के चलते आधे से ज्यादा इस बारिश में अब तक दर्जनों लोगों की असमय मौत हो चूकी है। हिमाचल में भी बरसात का कहर रौद्र रुप दिखा रहा है। बीती त्रासदियों से सबक सीखा जाए तो आने वाले भविष्य को सुरक्षित कर लिया जा सकता है। सरकार को चाहिए की प्रत्येक गांव से लेकर शहरो तक आपदा प्रबंधन कमेटियां गठित करनी चाहिए जिसमें डाक्टर नर्स व अन्य प्रशिक्षित स्टाफ रखना चाहिए ताकि व त्वरित कारवाई करके लोगों को मौत के मुंह से बचा सके ।अक्सर देखा गया है कि जब तक आपदा प्रबंधन की टीमें घटना स्थनों पर पहुचती है तब तक बची हुई सासें उखड़ जाती है लाशों के ढेर लग जाते है। अगर समय पर आपदा ग्रस्त लोगों को प्राथमिक सहायता मिल जाए तो हजारों जिदंगियां बचाई जा सकती हैं। प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए सरकार को कालेजों व स्कूलों में भी माकड्रिल जैसे आयोजन करने चाहिए ताकि अचानक होने वाली आपदाओं से अपना व अन्य का बचाव किया जा सके।स्कूलो व कालेजों मे चल रहे राष्ट्रज्जीय सेवा योजना व स्काउट एंड गाइड के स्वंयसेवियों को आपदा से निपटने के लिए पारगंत किया जाए।अगर यही स्वयसेवी अपने घर व गांवों में लोगों को आपदा से बचने के तरीके बताए तो काफी हद तक नुक्सान को कम किया जा सकता है। सरकार को चाहिए कि आपदा से बचाव के लिए प्रत्येक विभाग के कर्मचारियों को पूर्वाभ्यास करवाया जाए ताकि समय पर काम आ सके।पुलिस व अग्शिमन के कर्मचारियों को भी समय -समय पर ऐसे आयोजन करते रहना चाहिए।अगर सभी लोग आपदा से बचाव के तरीके समझ जाएगें तो तबाही कम हो सकती है। प्रकृति के प्रकोप से बचना है तो हमें अपनी जीवन शैली बदलनी ही होगी,छेड़छाड़ बंद करनी होगी।अगर अब भी मानव ने प्रकृति पर अत्याचार बंद नहीं किया तो प्रकृति अपना बदला लेती रहेगी और मानव को सबक सीखाती रहेगी।

संपादकीय

अमेरिका की राय

कश्मीर को भारत-पाकिस्तान के बीच का मामला बताते हुए अमेरिका द्वारा दोनों मुल्कों के दरम्यान कोई दबंगई न करने का इरादा जताया गया। अमेरिकी विदेश विभाग के वरिष्ठ अधिकारी द्वारा प्रेस वार्ता में इस मुद्दे को भारत-पाकिस्तान पर छोड़ने की बात की। यह टिप्पणी संयुक्त राष्ट्र महासभा में ट्रंप के उस बयान के बाद आई है, जिसमें भारत-पाक के बीच युद्धविराम कराने में ट्रंप की भूमिका का दावा किया गया था। हालांकि भारत सरकार ने बार-बार जोर दिया कि सीमा पार आतंकवाद जैसे मुद्दे द्विपक्षीय रहने चाहिए। अमेरिका की तरफ से यह बयान उस वक्त आया है, जब ट्रंप पाकिस्तानी हुक्मरान के साथ बैठक कर रहे हैं और रणनीतिक साझेदारी, आतंकवाद निरोधी गठबंधन व अन्य समझौतों पर हस्ताक्षर करने की तैयारी में हैं।

अप्रैल में पहलगाम में आतंकी हमले में छब्बीस भारतीयों की मौत का बदला लेने के लिए मई में भारत ने ऑपरेशन सिंदूर किया था जिसमें भारतीय सेना ने पीओके में घुसकर आतंकवादियों के शिविरों में हमला कर सौ से ज्यादा आतंकियों को मार गिराया था। उसके बाद से ट्रंप लगातार दावा कर रहे हैं कि उनकी पहल के चलते ही संघर्ष विराम संभव हुआ। अमेरिका के राष्ट्रपति खुद को शांति के नोबल पुरस्कार का दावेदार बता कर विश्व शांति का मसीहा बनने का जबरदस्त प्रयास कर रहे हैं। हास्यास्पद होने व विभिन्न विद्वानों द्वारा संदेह व्यक्त किए जाने के बावजूद ट्रंप व उनके चापलूस करीबी दुनिया में जारी युद्धों को रोकने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला साबित करने में कोताही नहीं कर रहे। भारत विभिन्न मौकों में स्पष्ट कर चुका है कि कश्मीर के मुद्दे पर तीसरे पक्ष की मध्यस्थता कभी स्वीकार नहीं की जा सकती। अब जब अमेरिका की तरफ से टेरिफ वॉर चालू है, किसी अधिकारी द्वारा दबंगई न करने का स्पष्टीकरण देना रणनीति का हिस्सा होसकता है। व्यापार समझौतों को ढ़ाल बना कर दोनों मुल्कों के दरम्यान दशकों से चले आ रहे सीमा विवाद और पाकिस्तान में आतंकवादियों के प्रशिक्षण गाह को खत्म करने के बहाने ट्रंप बिल्लयों के झगड़े.में बंदर बनने की उतावली में नजर आ रहे हैं जो भारत को किसी कीमत पर स्वीकार्य नहीं। सहिष्णुता बरतने का यह मतलब नहीं है कि हम कड़े.कदम उठाने से हिचकते हैं। भारत अपनी शक्ति और स्थिति से अब किसी तरह का समझौता करने को राजी नहीं।

चिंतन-मनन

गुरु की स्वीकार्यता

हर वक्त संसार को गुरु की दृष्टि से देखो। तब यह संसार मलिन नहीं बल्कि प्रेम, आनन्द, सहयोगिता, दया आदि गुणों से परिपूर्ण, अधिक उत्सवपूर्ण लगेगा। तुम्हें किसी के साथ संबंध बनाने में भय नहीं होगा क्योंकि तुम्हारे पास आश्रय है। घर के अन्दर से तुम बाहर के वज्रपात, आंधी, वर्षा व कड़ी धूप देखोगे। भीतर वातानुकूलित व्यवस्था है- शीतल और शान्त। बाहर गर्मी और अशांति है पर तुम परेशान नहीं होते, क्योंकि कुछ भी तुम्हें बेचैन और विचलित नहीं कर सकता। कोई तुम्हारी पूर्णता नहीं छीन सकता। यही है गुरु का उद्देश्य। संसार के सभी संबंध उलट-पुलट हो जाते हैं। संबंध बनते हैं और टूटते हैं। यहां राग भी है, द्वेष भी। यही संसार है। पर गुरु कोई संबंध नहीं, गुरु की मौजूदगी होती है। गुरु का सान्निध्य अनुभव करो। गुरु को अपने संसार का अंश मत बनाओ। संसार का हिस्सा बनाते ही, वही अप्रिय भावनाएं उठती हैं- उन्होंने ऐसा कहा, उन्होंने ऐसा नहीं कहा, वह उनका अधिक प्रिय है, मैं नहीं हूं। जीवन में गुरु का सान्निध्य सभी संबंधों में पूर्णता लाता है। यदि गुरु के निकट अनुभव नहीं कर रहे, तो यह तुम्हारे मन, धारणा, अहंकार के कारण है।

जो कुछ भी महत्वपूर्ण है, अंतरंग है, उसे गुरु के साथ बांटो। जो तुम्हारे लिए महत्वपूर्ण है, आंतरिक है, जब तक तुम उसे गुरु को नहीं व्यक्त करते, तब तक निकटता का अनुभव नहीं कर सकते। आप कैसे हैं? गुरु से हृदय खोलकर मन की गहराइयों में समाई अपने जीवन की आंतरिक व महत्वपूर्ण बातें करो। महत्वहीन या सांसारिक बातें न करो। यदि तुम गुरु के साथ निकटता अनुभव नहीं कर रहे, तो गुरु की आवश्यकता ही क्या है? वह तुम्हारे लिए केवल एक और बोझ है। बस, उसे अलविदा कह दो। तुम गुरु के साथ हो ताकि तुम गुरु के आनन्द में सहभागी हो, उनकी चेतना के सहभागी। इसके लिए पहले तुम्हें अपने आप को खाली करना है, जो पहले से है, उसे गुरु को दे देना है। मन में जितना भी कूड़ा हो, किसी भी प्रकार का, गुरु लेने के लिए तैयार हैं। तुम जैसे भी हो, गुरु तुम्हें स्वीकार कर लेंगे। वे अपनी ओर से बांटने को तैयार हैं- तुम्हें केवल अपनी ओर से तैयार होना है।

नवरात्रि में करणी माता मंदिर का दिव्य दर्शन : आस्था, रहस्य और विकास का संगम

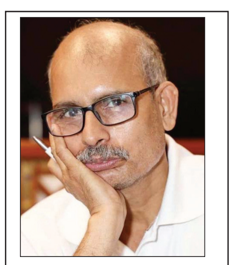

विनोद कुमार सिंह

राजस्थान की धरा शक्ति-भक्ति और लोकआस्था की गवाह रही है। बीकानेर से लगभग 30 किलोमीटर दूर देशनोक स्थित करणी माता मंदिर इसी आस्था का अद्धुत प्रतीक है।स्थानीय मान्यता के अनुसार लगभग 650 वर्ष पूर्व माँ करणी का अवतरण हुआ था।उन्हें शक्ति स्वरूपा माँ दुर्गा का अवतार माना जाता है।विवाह के उपरांत उन्होंने सांसारिक मोह त्यागकर गुफा में तपस्या की और करीब सौ वर्ष तक कठोर तप कर150 वर्ष तक जीवित रहीं।करणी माता बीकानेर और जोधपुर राजघरानों की कुलदेवी हैं।बीकानेर राज्य की नींव रखने में उनका आध्यात्मिक योगदान माना जाता है।आज भी उनके चमत्कारों और आशीर्वाद की अनगिनत कथाएँ लोकजीवन में जीवित हैं।

चूहों वाला अनूठा मंदिर -यह मंदिर ह्यचूहों वाली देवीह्न के रूप में विख्यात है।संगमरमर से निर्मित इस भव्यधाम का निर्माण बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह ने करवाया था।यहाँ लगभग 25 हजार चूहे,जिन्हें स्थानीय भाषा में काबा कहा जाता है,मंदिर परिसर में स्वतंत्र रूप से विचरण करते हैं।यह अपने आप में अनूठा और अद्धुत रहस्य है कि इतनी बड़ी संख्या में चूहों के होने के बावजूद वे न तो किसी को नुकसान पहुंचाते हैं और न ही किसी वस्तु को कुतरते हैं।ऐसी मान्यता है कि करणी माता ने अपने वंशजों को 84 लाख योनियों के चक्र से मुक्त कर दिया था।उनके निधन के बाद वे पुनः काबा के रूप में इस मंदिर में जन्म लेते हैं और फिर मनुष्य योनि पाकर वंशज के रूप में जन्म ग्रहण करते हैं।

सफेद चूहे का चमत्कार -मंदिर में सफेद और काले दोनों प्रकार के चूहे रहते हैं।किंतु यदि किसी श्रद्धालु को दर्शन के समय सफेद चूहा दिखाई दे जाए तो इसे अत्यंत शुभ माना जाता है।ऐसा होने पर भक्त की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं और उसका जीवन सुख-समृद्धि से भर जाता है।मंदिर की एक और अनूठी परंपरा यह है कि प्रसाद सबसे पहले चूहों के सामने रखा जाता है।काबा उसे चखते हैं और तत्पश्चात वही ह्यझूठा प्रसादह्न भक्तों में वितरित किया जाता है।श्रद्धालुओं के लिए यह प्रसाद महाप्रसाद के समान पवित्र और अमूल्य माना जाता है।

नवरात्रि और विशेष आयोजन -हर वर्ष नवरात्रि के अवसर पर देशनोक में भव्य मेले का आयोजन होता है।लाखों श्रद्धालु दूर-दूर से यहां पहुंचते हैं।मंदिर में विशेष पूजा-अर्चना, भजन-कीर्तन और धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन होता है।आश्विन शुक्ल सप्तमी को मां करणी का जन्मोत्सव मनाया जाता है।यही कारण है कि नवरात्रि के दौरान देशनोक का वातावरण पूर्णतः -भक्तिमय हो जाता है।भक्तों की भीड़,चूहों की विचरण करती टोलियां और मंदिर का दिव्य आभामंडल एक अलौकिक दृश्य प्रस्तुत करता है।

करणी माता और सामाजिक समरसता -मुगल आक्रांताओं के समय जब भारतीय संस्कृति और सभ्यता पर संकट था,तब माँ करणी का अवतरण हुआ।उन्होंने बीकानेर और जोधपुर राज्य की नींव मजबूत की और विभिन्न जाति-समुदायों पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखी।यह मंदिर आज भी सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक एकता का जीवंत उदाहरण है।

देशनोक अमृत भारत स्टेशन : विकास का नया अध्याय -धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक धरोहर के साथ-साथ अब देशनोक तेजी से विकास की ओर भी अग्रसर है। विगत 22 मई को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बीकानेर में 24 करोड़ रुपये की लागत से बने देशनोक अमृत भारत स्टेशन का उद्घाटन किया।यह स्टेशन न केवल यात्रियों को आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराता है,बल्कि करणी माता मंदिर आने वाले लाखों श्रद्धालुओं के लिए भी एक वरदान है। अमृत रेलवे स्टेशन देशनोक का भव्य रूप,विस्तृत परिसर, - 24 करोड़ की रेलवे पुर्नः उद्धार कार्यक्रम के अन्तर्गत इस रेलवे स्टेशन में आधुनिक प्रतीक्षालय और यात्री सुविधाएं क्षेत्रीय पर्यटन व धार्मिक यात्राओं की यात्रियों के लिए इस अमृत भारत रेलवे स्टेशन अधिक सुलभ बना रही हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने उद्घाटन से पहले स्वयं करणी माता मंदिर पहुंचकर दर्शन-पूजन किया था।यह घटना इस मंदिर की आध्यात्मिक महत्ता और देशव्यापी पहचान को और भी सशक्त बनाती है।

आस्था और आधुनिकता का संगम

करणी माता मंदिर आज भी आस्था, रहस्य और चमत्कार का केंद्र है। चूहों की अनगिनत उपस्थिति, सफेद चूहे की दुर्लभ झलक,भक्तों का अटूट विश्वास और मां के चमत्कार इस मंदिर को अद्वितीय बनाते हैं।

साथ ही,अमृत भारत स्टेशन जैसी विकास परियोजनाएं यह प्रमाणित करती हैं कि यह पावन धाम केवल धार्मिक महत्व ही नहीं, बल्कि आधुनिक भारत के प्रगतिशील स्वरूप का भी प्रतीक बन रहा है।

नवरात्रि के पावन अवसर पर देशनोक करणी माता मंदिर का दर्शन भक्तों के लिए जीवन का अविस्मरणीय अनुभव है।यह धाम जहां दिव्य आस्था का प्रतीक है,वहीं अब विकास की नई राह भी खोल रहा है।आस्था और आधुनिकता का यह अद्वितीय संगम भारत की उस सांस्कृतिक धरोहर को उजागर करता है,जो सदियों से जनमानस को प्रेरित करती रही है।

(स्वतंत्र पत्रकार)

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

लेह हिंसाः संवाद से समाधान तक

ललित गर्ग

केंद्रशासित प्रदेश लद्दाख को राज्य का दर्जा देने और संविधान के अंतर्गत विशेष संरक्षण देने वाली छठी अनुसूची में शामिल करने के लिए चल रहे आंदोलन का हिंसक एवं विध्वंसक होना, विरोध प्रदर्शन, पुलिस के साथ झड़प और आगजनी की घटनाएं दुर्भाग्यपूर्ण होने के साथ-साथ चिंताजनक हैं। बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारी एकत्र हुए और उन्होंने लेह में भाजपा के कार्यालय में आग लगा दी और उसके बाहर खड़े वाहनों को फूंकदिया। आम तौर पर शांत रहने वाले प्रदेश में यह बड़ी घटना है।

दरअसल, पर्यावरणविद् और सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक दो सप्ताह से अनशन पर थे, उनके साथ अन्य कार्यकर्ता भी अनशनरत थे, जिनकी तबीयत बिगड़ने से जन-आक्रोश एवं हिंसा भड़की। एक ओर यह घटना जनता के असंतोष और बेचैनी को उजागर करती है, वहीं यह संकेत भी देती है कि लंबे समय से किए जा रहे वादे और आश्वासन क्यों अधूरे रह गए और क्यों स्थानीय लोग स्वयं को असुरक्षित महसूस करने लगे हैं?

सरकार ने अगस्त, 2019 में अनुच्छेद 370 और 35ए के प्रावधान हटाने के साथ ही जम्मू-कश्मीर से अलग कर लद्दाख को केंद्रशासित प्रदेश बनाया था। तब वादा किया था कि हालात सामान्य होते ही पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल कर दिया जाएगा। लोगों ने सोचा था कि अब उनकी पहचान, संस्कृति, स्थानीय अधिकार और अधिक सुरक्षित होंगे। लेकिन इसके विपरीत उनकी आशंकाएं बढ़ीं। उन्हें लगा कि संघ शासित प्रदेश के रूप में दिल्ली से संचालित प्रशासन स्थानीय जरूरतों और आकांक्षाओं को पूरा करने में असफल हो रहा है। इसी कारण 6 साल बाद लोगों का भरोसा डगमगाने लगा। इसी के चलते सोनम को अहिंसक आन्दोलन का रास्ता अख्तियार करना पड़ा जो कतिपय कारणों से हिंसक हो गया।

हालांकि, हिंसा के बाद वांगचुक ने अनशन त्याग कर आंदोलनकारियों से शांति की अपील की है। उन्होंने कहा है कि इस तरह की हिंसा से शांतिपूर्ण आंदोलन का संदेश विफल हो गया। युवा गलत रास्ते पर जाएंगे तो इससे हमारे वास्तविक उद्देश्य गुम हो जाएंगे। वाकई, लद्दाख के संयमी समाज को संवेदनशीलता का परिचय देना चाहिए। वांगचुक का पूरा आंदोलन अहिंसक रहा है। सरकार से मतभेद होने पर भी उन्होंने बातचीत का रास्ता नहीं छोड़ा। उनके समर्थन में खड़े युवाओं को इसे समझना चाहिए। हिंसा से समस्या जटिल हो जाएगी। लद्दाख की जो भौगोलिक स्थिति है, उसे देखते हुए वहां के लोगों को कानून-व्यवस्था के प्रति विशेष रूप से सजग रहना चाहिए। लद्दाख का केंद्रशासित प्रदेश बनना नये सूरज का उदय होना है। इस क्षेत्र को कश्मीर घाटी के वर्चस्व से मुक्ति मिली थी।

लद्दाख के लोग चाहते हैं कि उन्हें पूर्ण राज्य का अधिकार मिले। उनकी यह भी मांग है कि उन्हें संविधान की छठी अनुसूची में शामिल किया जाए। रोजगार के अवसरों की कमी और सरकारी नौकरियों में स्थानीय युवाओं की उपेक्षा ने उनके असंतोष को और गहरा किया है। लेह और कारगिल के बीच प्रतिनिधित्व को लेकर भी सवाल उठते रहे हैं। निस्संदेह, लेह चीन की सीमा से लगा सुरक्षा की दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्र है, जिसके मुद्दों को प्राथमिकता के आधार पर सुलझाया जाना जरूरी है। युवा बेरोजगारी भी बड़क्ष मुद्दा रही है। स्थानीय युवा अब कर्मचारी चयन आयोग की स्पर्द्धा में टिक पाने में दिक्कत महसूस करते हैं। स्थानीय नौकरियों में युवाओं के लिए विशेष अभियान भी नहीं चला जिससे प्रदेश में खासा रोष रहा है।

लद्दाख की जनता में असुरक्षा की भावना इसलिए भी है क्योंकि उन्हें लगता है कि उनकी भूमि और संसाधनों पर बाहरी दखल बढ़ रहा है। स्थानीय प्रशासनिक संस्थाएं जैसे हिल डवलपमेंट काउंसिल्स कमजोर कर दी गई हैं, और महत्त्वपूर्ण फैसले केंद्र के हाथ में केंद्रित हो गए हैं। इससे यह भावना गहराती है कि स्थानीय समाज की आवाज को दबाया जा रहा है। लद्दाख की जनता चाहती है कि उनके अधिकारों को संवैधानिक गारंटी मिले, उनके संसाधनों की सुरक्षा हो और निर्णय प्रक्रिया में उनकी भागीदारी सुनिश्चित हो। यदि सरकार ने पहले जो आश्वासन दिए थे, उन्हें समयबद्ध और स्पष्ट तरीके से लागू कर दिया जाता तो शायद स्थिति यहां तक न पहुंचती।

(लेख में व्यक्त विचार निजी हैं)

संक्षिप्त समाचार

ओबामा-क्लिंटन के वकील बार्नेट का निधन

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में बराक ओबामा और मिशेल ओबामा, हिलेरी क्लिंटन समेत दर्जनों नेताओं का प्रतिनिधित्व कर चुके वाशिंगटन के एक प्रभावशाली वकील रॉबर्ट बी. बार्नेट का 79 वर्ष की आयु में निधन हो गया। बार्नेट की कार्यकारी सहायक एश्ले डफी ने बताया कि बृहस्पतिवार की रात उनका निधन हो गया। बार्नेट उच्चस्तरीय लॉ फर्म विलियम्स एंड कोनोली में साझेदार थे और 20 से अधिक वर्षों तक वाशिंगटन के अभिजात वर्ग और न्यूयॉर्क के प्रकाशकों के बीच मध्यस्थ के रूप में उनकी हैसियत के आसपास भी कोई नहीं पहुंचा। 1990 के दशक की शुरुआत से ओबामा प्रशासन के अंत तक, 2017 में बार्नेट ने लगातार तीन राष्ट्रपतियों और प्रथम महिलाओं - क्लिंटन, जॉर्ज डब्ल्यू और लॉरा बुश और ओबामा और शेष ए-सूची के अधिकांश राजनीतिक खिलाड़ियों का प्रतिनिधित्व किया।

खैबर पख्तूनख्वा में दुर्घटना, एक ही परिवार के 11 लोगों की मौत

क्वेटा, एजेंसी। बचाव अधिकारियों ने शुक्रवार को बताया कि उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा में एक सड़क हादसे में एक ही परिवार के 11 सदस्यों की मौत हो गई और तीन अन्य घायल हो गए। यह हादसा डेरा इस्माइल खान जिले में एक वाहन के ब्रेक फेल हो जाने से हुआ। वाहन झोब जिले से डेरा इस्माइल खान जा रहा था। घटनास्थल से सात शव बरामद हुए हैं, जिनमें पांच महिलाएं, एक पुरुष और एक बच्चा शामिल है। तीन घायल अस्पताल भेजे गए।

माइक्रोसॉफ्ट ने इस्राइल में घटाई क्लाउड और एआई उत्पादों की सेवा

येरुशलम, एजेंसी। माइक्रोसॉफ्ट ने इस्राइली सेना की एक यूनिट को अपनी कुछ सेवाएं देनी बंद कर दी हैं। कंपनी ने दावा किया है कि इस्राली सेना उसकी क्लाउड कंप्यूटिंग और एआई का इस्तेमाल गाजा में फलस्तीनियों के सर्विलांस के लिए कर कर रहा था। माइक्रोसॉफ्ट ने कहा, इस्राइल गाजा में कई बार हमले करने के लिए उसकी तकनीक का इस्तेमाल करता है ऐसे में इन सेवाओं पर रोक लगा देना जरूरी है। अध्यक्ष ब्रैड स्मिथ ने कहा, सेवाओं के नियमों के लिए ही यह कदम उठाया गया है।

नेपाल में सुरक्षाबलों की गोलियों से मारे गए थे 33 लोग

काठमांडू, एजेंसी। नेपाल में इस महीने हुए भ्रष्टाचार विरोधी प्रदर्शनों पर बड़ा खुलासा हुआ है। त्रिभुवन विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिसिन की फॉरेंसिक रिपोर्ट में पता चला कि 33 प्रदर्शनकारियों की मौत गोली लगने से हुई थी, जो घातक हथियारों से चलाई गई थीं। यह पहला आधिकारिक प्रमाण है कि सुरक्षाबलों ने प्रदर्शनकारियों पर असली गोलियों का इस्तेमाल किया था। संस्थान के महाराजगंज मेडिकल कैंपस में 47 शवों का पोस्टमार्टम हुआ। फॉरेंसिक विभाग के सदस्य ने बताया कि 34 शवों में गोलियों के जख्म पाए गए। इनमें 10 को सिर में, 18 को सीने में, चार को पेट में और दो को गले में गोली लगी थी। केवल एक व्यक्ति को रबर बुलेट लगी थी। हिंसक प्रदर्शनों में 74 लोगों की मौत हुई थी।

इंडोनेशिया : मुस्लिम समुदाय में खसरे के टीके का विरोध

सुमेनैप, एजेंसी। इंडोनेशिया के सुमेनैप शहर में मुस्लिम समुदाय बच्चों को खसरे के टीका लगाने का विरोध कर रहा है। इनमें कुछ माता-पिता ऐसे हैं जो बच्चों को इसकी खुराक दिलाने से मना कर रहे हैं। उनका मानना है कि कुछ टीकों में सुअर से प्राप्त जिलेटिन का इस्तेमाल किया जाता है, जो इस्लाम में हराम है। कई धार्मिक विद्वान मानते हैं कि कुछ परिस्थितियों में सुअर से बने चिकित्सा उत्पादों का उपयोग किया जा सकता है। देश में इस साल अब तक 2,600 से अधिक बच्चे खसरे से संक्रमित हो चुके हैं।

लताड़ के बाद बदले नाटो चीफ के सुर, बोले- हमने भारत को खोया नहीं है, करीबी संबंध रखने की कोशिश

न्यूयॉर्क, एजेंसी। भारत की लताड़ के बाद नाटो प्रमुख मार्क रुट के सुर बदले नजर आ रहे हैं। रुट ने हाल ही में दावा किया था कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को फोन किया और रूसी तेल के आयात को लेकर भारत पर अमेरिकी टैरिफ के प्रभाव के मद्देनजर यूक्रेन पर रणनीति के बारे में पूछा। इस पर भारत ने कड़ी आपत्ति जताई थी। अब एक इंटरव्यू के दौरान मार्क रुट ने कहा कि वे भारत से अच्छे संबंध बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं और भारत को चीन या रूस के हाथों खोया नहीं है। नाटो महासचिव ने कहा, नरेंद्र मोदी चीन में शी जिनपिंग और व्लादिमीर पुतिन के साथ थे।

नेतन्याहू ने यूएनमें खाली कुर्सियों को संबोधित किया, दर्जनों प्रतिनिधियों का वॉकआउट, बाहर भी विरोध

न्यूयॉर्क, एजेंसी। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू को शुक्रवार को संयुक्त राष्ट्र महासभा में दिए गए अपने भाषण के दौरान भारी विरोध और वॉकआउट का सामना करना पड़ा। गाजा पर जारी हमलों को अंत तक ले जाने की प्रतिबद्धता जताते हुए उन्होंने कहा कि इजरायल को हमास के खिलाफ काम पूरा करना ही होगा। हालांकि नेतन्याहू के भाषण के दौरान सभागार में मिली-जुली प्रतिक्रियाएं देखने को मिलीं- कुछ प्रतिनिधियों ने तालियां बजाईं तो कई सदस्य विरोध के चलते बाहर चले गए। भाषण शुरू होने से पहले ही कई से अधिक देशों के सैकड़ों राजनयिकों ने सभागार को खाली कर दिया। जिससे नेतन्याहू को लगभग खाली हॉल में बोलना पड़ा। यह घटना इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष के बीच वैश्विक अलगाव को उजागर करती है, जहां पश्चिमी देशों द्वारा फिलिस्तीनी देश को मान्यता देने का निर्णय नेतन्याहू के लिए नया झटका साबित हुआ। भाषण के दौरान उन्होंने अपनी जैकेट पर एक बड़ा क्यूआर कोड वाला पिन पहना था। साथ ही, नेतन्याहू ने दावा किया कि उनके भाषण को पूरे गाजा पट्टी में लाउडस्पीकर और मोबाइल फोनों के जरिए लाइव प्रसारित किया जा रहा है, ताकि बंधक और हमास सदस्य इसे सुन सकें। यह कदम इजरायल की रणनीतिक प्रचार युद्ध का हिस्सा था।

महासभा में विरोध और खाली कुर्सियां : अमेरिका और ब्रिटेन के लिए आवंटित सीटों पर वरिष्ठ राजदूतों या अधिकारियों के बजाय निम्न-स्तरीय कूटनीतिज्ञ मौजूद थे। कई सीटें खाली थीं, और ईरान की खाली कुर्सियों के पास उन बच्चों की तस्वीरें रखी गई थीं, जिनके बारे में तेहरान ने दावा किया कि वे जून में इजरायल के युद्ध के दौरान मारे गए थे। हॉल में अस्पष्ट नारे गूंज रहे थे, जबकि गैलरी में मौजूद समर्थकों से तालियां भी मिलीं। कुछ प्रतिनिधियों ने फिलिस्तीनी केफिया (सिर पर बांधा जाने वाला पारंपरिक कपड़ा) पहन रखा था।

बंधकों को संदेश : अपने भाषण में नेतन्याहू ने दावा किया कि उनका भाषण गाजा में लगे लाउडस्पीकर्स के जरिए और अभूतपूर्व अभियान के तहत लोगों के मोबाइल फोन पर भी प्रसारित किया जा रहा है। उन्होंने कहा, हमने आपको एक सेकंड के लिए भी नहीं भुलाया। इजरायल की जनता आपके साथ है। हमास को संबोधित करते हुए उन्होंने चेतावनी दी, अपने हथियार डाल दो। मेरे लोगों को जाने दो। अगर ऐसा करोगे तो बचोगे, वरना इजरायल तुम्हें ढूंढ-ढूंढकर मारेगा। पश्चिमी देशों और फिलिस्तीनी मान्यता पर निशाना नेतन्याहू ने पश्चिमी देशों की आलोचना की और कहा कि कुछ पश्चिमी नेता दबाव में झुक गए हैं, लेकिन इजरायल झुकेगा नहीं। उन्होंने उन देशों के फैसले को शर्मनाक बताया जिन्होंने फिलिस्तीन को देश का दर्जा दिया है। उनके अनुसार, यह निर्णय आतंकवाद को बढ़ावा देगा और निर्दोषों के खिलाफ हिंसा को प्रोत्साहित करेगा। विजुअल एड्स और प्रचार के प्रयास नेतन्याहू ने संयुक्त राष्ट्र में अपने पिछले भाषणों की तरह इस बार भी विजुअल एड्स का इस्तेमाल किया। उन्होंने एक नक्शा दिखाया, जिसका शीर्षक था द कर्स , जो इजरायल के पड़ोस में उसकी चुनौतियों को दर्शाता था। उन्होंने इसे मार्कर से चिह्नित किया। इसके अलावा, उन्होंने एक पिन पहना था, जिसमें 7 अक्टूबर, 2023 को हमास के हमले और इजरायली बंधकों के बारे में जानकारी देने वाले वेबसाइट का क्यूआर कोड था। ट्रंप का कड़ा बयान इसी बीच, अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने स्पष्ट किया कि वह वेस्ट बैंक के विलय की अनुमति नहीं देंगे। उन्होंने कहा, मैं इजरायल को वेस्ट बैंक मिलाने की इजाजत नहीं दूंगा। नहीं, ऐसा नहीं होगा। अब बहुत हो चुका। अब रुकने का समय है। नेतन्याहू के खिलाफ, पूर्व रक्षा मंत्री योआव गैलेंट के साथ, अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायालय में युद्ध अपराधों के आरोप दर्ज हैं। संयुक्त राष्ट्र मंच पर उनका यह भाषण अंतरराष्ट्रीय आलोचना का जवाब देने का प्रयास माना जा रहा है। विरोध प्रदर्शन नेतन्याहू के भाषण के समानांतर न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय से कुछ ही ब्लॉक दूर सैकड़ों लोग फिलिस्तीन समर्थक प्रदर्शन में जुटे। पैलेस्टिनियन यूथ मूवमेंट से जुड़ी निदा लाफी ने कहा, इजरायल ने दुनिया के हर संवेदनशील इंसान के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया है। उन्होंने आरोप लगाया कि यह संघर्ष हमेशा से फिलिस्तीन की पूरी तरह से जातीय सफाई, जमीन हड़पने और शोषण के लिए था। भीड़ ने शेम-शेम के नारे लगाए। दूसरे देशों की लड़ाई भी लड़ रहा है इजरायल अपने भाषण के अंत में नेतन्याहू ने दावा किया कि इजरायल सिर्फ अपनी सुरक्षा के लिए नहीं बल्कि कट्टरपंथी इस्लाम के खिलाफ पूरी दुनिया की ओर से लड़ रहा है। उन्होंने कहा, आप सबके दिल की गहराइयों में यह सच है कि इजरायल आपकी लड़ाई लड़ रहा है। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने शुक्रवार, 26 सितंबर को संयुक्त राष्ट्र महासभा में एक आक्रामक और भावुक भाषण दिया, जिसमें उन्होंने हमास के खिलाफ इजरायल की कार्रवाई को आखिरी अंजाम तक ले जाने की बात कही। भाषण के दौरान उन्होंने अपनी जैकेट पर एक बड़ा क्यूआर कोड वाला पिन पहना था।

जी-4 देशों ने यूएनएससी में सुधार की दोहराई मांग, विकासशील देशों की बड़ी भागीदारी पर भी दिया जोर

न्यूयॉर्क, एजेंसी। भारत, ब्राजील, जर्मनी और जापान के विदेश मंत्रियों ने संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) के 80वें सत्र के दौरान मुलाकात कर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में सुधार की तत्काल जरूरत पर जोर दिया। इस बैठक में भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर, ब्राजील के विदेश मंत्री माउरो विएरा, जर्मनी के फेडरल विदेश मंत्री डॉ. जोहान वेडफुल और जापान के विदेश मंत्री इवाया ताकेशी शामिल हुए।

लगातार अस्थिर हो रही है अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था जी-4 देशों ने कहा कि मौजूदा समय में अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था लगातार अस्थिर हो रही है और यूएनएससी अपने दायित्वों को ठीक से निभाने में नाकाम साबित हो रही है। ऐसे में सुरक्षा परिषद में सुधार बेहद जरूरी है ताकि यह मौजूदा भू-राजनीतिक परिस्थितियों को सही ढंग से दर्शा सके और अधिक प्रतिनिधित्व, वैधता और प्रभावशीलता सुनिश्चित कर सके। विकासशील देशों की बड़ी भागीदारी पर जोर विदेश मंत्रियों ने साफ किया कि यूएनएससी का विस्तार स्थायी और अस्थायी दोनों श्रेणियों में होना चाहिए। उन्होंने अफ्रीका, एशिया-प्रशांत, लैटिन अमेरिका और कैरिबियन जैसे कम प्रतिनिधित्व वाले क्षेत्रों को उचित जगह देने पर जोर दिया। चारों देशों ने अफ्रीकी देशों की संयुक्त मांग, जिसे इजुल्विनी कंसेंसस और सिर्टे घोषणा में दर्ज किया गया है, के प्रति अपना मजबूत समर्थन दोहराया। एक-दूसरे के स्थायी सदस्य बनने की उम्मीदवारी का करेंगे समर्थन इस मुलाकात में यह भी तय हुआ कि जी4 देश एक-दूसरे के स्थायी सदस्य बनने की उम्मीदवारी का समर्थन करेंगे। साथ ही, ये देश अन्य समूहों के साथ मिलकर एक ठोस मॉडल तैयार करने के लिए काम करेंगे जिससे पाठ-आधारित वार्ता आगे बढ़ सके। मंत्रियों ने यह भी कहा कि यूएनएससी सुधार पर चर्चा सिर्फ इंटरगवर्नमेंटल नेगोशिएशंस (आईजीएन) तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि इसे अन्य मंचों पर भी उठाया जाएगा।

बांग्लादेशी प्रवासी बोले- यूनुस पाकिस्तानी है, पाकिस्तान वापस जाओ

वॉशिंगटन डीसी, एजेंसी। बांग्लादेशी प्रवासियों ने शुक्रवार को न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र हेडक्वार्टर के बाहर मुख्य सलाहाकार मोहम्मद यूनुस के खिलाफ प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने यूनुस को पाकिस्तानी करार देते हुए यूनुस इज पाकिस्तानी और गो बैक टू पाकिस्तान जैसे नारे लगाए। प्रदर्शनकारी बोले यूनुस बांग्लादेश को तालिबान जैसा देश बनाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यूनुस इस्लाम-वादी ताकतों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। प्रदर्शनकारियों ने यूनुस पर अगस्त 5, 2024 में पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के पद से हटने के बाद अल्पसंख्यकों, खासकर हिंदुओं पर अत्याचार बढ़ाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि यूनुस के सत्ता में आने के बाद से मानवाधिकारों की स्थिति बेहद खराब हो चुकी है। कई लोग देश छोड़ने पर मजबूर हुए हैं। प्रदर्शनकारी बोले- हसीना सरकार को गैरकानूनी ढंग से हटाया एक प्रदर्शनकारी ने एएनआई से कहा, हम हिंदू, बौद्ध, ईसाई और अन्य अल्पसंख्यकों पर अत्याचार के खिलाफ हैं। हम हिंदू नेता चिन्मय कृष्ण दास की रिहाई की मांग करते हैं, जिन्हें यूनुस ने गैरकानूनी ढंग से जेल में कैद कर रखा है। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि शेख हसीना की सरकार को गैरकानूनी ढंग से हटाया गया। उनकी सरकार लोकतांत्रिक थी। यूनुस ने सत्ता हड़प ली और अल्पसंख्यकों पर हमले बढ़ गए। अगस्त 2024 में तख्तापलट के बाद हिंदू निशाना बने 5 अगस्त, 2024 को बांग्लादेश में लंबे छात्र आंदोलन के बाद शेख हसीना सरकार का तख्तापलट हुआ था। हसीना को देश छोड़कर भागना पड़ा। इसके साथ ही बांग्लादेश में हालात बिगड़ गए। पुलिस रातों-रात अंडरग्राउंड हो गई। बेकाबू भीड़ के निशाने पर सबसे ज्यादा अल्पसंख्यक, खासतौर पर हिंदू आए। बांग्लादेश हिंदू बुद्धिस्ट क्रिश्चियन यूनिटी काउंसिल की रिपोर्ट के मुताबिक, यहां सांप्रदायिक हिंसा में 32 हिंदुओं की जान चली गई। रेप और महिलाओं से उत्पीड़न के 13 केस सामने आए। करीब 133 मंदिरों पर हमले हुए। ये घटनाएं 4 अगस्त 2024 से 31 दिसंबर 2024 के बीच हुईं।

एफबीआई की बड़ी कार्रवाई, नस्लीय न्याय आंदोलन में हिस्सा लेने वाले अपने 20 एजेंटों को नौकरी से निकाला

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका की प्रमुख जांच एजेंसी फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन (एफबीआई) ने नस्लीय न्याय आंदोलन में भाग लेने वाले एजेंटों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। इसके तहत एफबीआई ने लगभग 20 ऐसे एजेंटों को नौकरी से निकाल दिया है, जो 2020 में जॉर्ज फ्लॉयड की मौत के बाद वॉशिंगटन में हुए नस्लीय न्याय आंदोलन के दौरान प्रदर्शन में घुटनों पर बैठे दिखाई दिए थे। न्यूज एजेंसी पीटीआई ने एक मीडिया रिपोर्ट के हवाले से बताया कि नाम ना बताने के शर्त पर इस बात की जानकारी तीन ऐसे अधिकारियों ने दी है जो इस मामले से जुड़े हैं। सूत्रों के अनुसार, इन एजेंटों को पहले अस्थायी रूप से अन्य विभागों में भेजा गया था, लेकिन पिछले कुछ समय में उन्हें पूरी तरह से निकाल दिया गया। बताया जा रहा है कि करीब 20 एजेंटों को नौकरी से निकाला गया है।

जॉर्ज फ्लॉयड की मौत के बाद हुआ था आंदोलन : बता दें कि इस पूरे मामले की शुरुआत 2020 में हुई, जब मिनियापोलिस में पुलिस हिरासत में जॉर्ज फ्लॉयड की मौत हुई। इस घटना के बाद अमेरिका और दुनियाभर में नस्लीय भेदभाव और पुलिस हिंसा के खिलाफ प्रदर्शन हुए थे। ऐसे ही एक प्रदर्शन में कुछ एफबीआई एजेंट एकजुटता दिखाने के लिए घुटनों पर बैठे, जिसकी तस्वीरें सामने आई थीं। हालांकि एफबीआई के इस कदम के बारे में

कई वरिष्ठ अधिकारियों की भी हुई थी छुट्टी : दूसरी ओर यह फैसला एफबीआई डायरेक्टर कश पटेल द्वारा एजेंसी में किए जा रहे बड़े बदलावों के तहत लिया गया है। हाल ही में चार वरिष्ठ एजेंटों और अधिकारियों को भी अचानक हटा दिया गया, जिससे एफबीआई के अंदर कर्मचारियों का मनोबल गिरने की बात कही जा रही है। इनमें से एक, स्टीव जेनसन, कैपिटल हिल पर 6 जनवरी 2021 को हुए हमले की जांच में शामिल थे। दूसरे अधिकारी, ब्रायन ड्रिस्कोल, ट्रंप प्रशासन की शुरुआत में कार्यकारी एफबीआई निदेशक रहे और उन्होंने उन एजेंटों के नाम देने से इनकार किया जो 6 जनवरी की जांच में शामिल थे। तीसरे अधिकारी, क्रिस मेयर, जिनके बारे में सोशल मीडिया पर गलत अफवाह थी कि उन्होंने ट्रंप के मार-ए-लागो स्थित घर से जुड़े गोपनीय दस्तावेजों की जांच की थी। चौथे अधिकारी, वाल्टर जियार्डिना ने ट्रंप के सलाहकार पीटर नवैरो के खिलाफ हाई-प्रोफाइल मामलों की जांच की थी। निकाले गए अधिकारियों ने दायर किया था मुकदमा गौरतलब है कि ऐसे घटनाक्रम में निकाले गए तीन वरिष्ठ एजेंटो, जेनसन, ड्रिस्कोल और स्पेंसर इवांस ने सरकार पर मुकदमा दायर किया है। उनका आरोप है कि डायरेक्टर पटेल ने खुद कहा था कि एजेंटों को उनके केस वर्क के आधार पर निकालना संविधान के खिलाफ हो सकता है, लेकिन व्हाइट हाउस और न्याय विभाग का दबाव था, इसलिए वो इसे रोक नहीं सके। हालांकि, पटेल ने हाल ही में कांग्रेस में शपथ लेकर कहा कि उन्होंने किसी को व्हाइट हाउस से आदेश नहीं लिए और जो भी एजेंट निकाले गए।

सुप्रीम कोर्ट से ट्रंप को राहत, फंडिंग पर रोक का फैसला बरकरार रखा, अरबों डॉलर की विदेशी मदद पर संकट

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट से राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को राहत मिली है। अदालत ने ट्रंप प्रशासन को लगभग 5 अरब डॉलर की विदेशी सहायता पर रोक लगाने के आदेश को आगे बढ़ा दिया है। यह कदम राष्ट्रपति पद के अधिकारों को लेकर चल रहे विवाद में ट्रंप को एक और बड़ी जीत दिलाता है। अदालत के रूढ़िवादी बहुमत ने शुक्रवार (स्थानीय समयानुसार) को कांग्रेस द्वारा स्वीकृत अरबों डॉलर की सहायता से जुड़े एक मामले में रिपब्लिकन प्रशासन की आपातकालीन अपील को स्वीकार कर लिया। हालांकि, तीन उदारवादी न्यायाधीशों ने इसका विरोध किया। ट्रंप ने पिछले महीने कहा था कि वह यह पैसा खर्च नहीं करेंगे। उन्होंने करीब 50 साल पहले इस्तेमाल की गई विवादित सांविधानिक शक्ति का हवाला दिया।

निचली अदालत ने ट्रंप के फैसले को अवैध करार दिया था अमेरिकी जिला न्यायाधीश आमिर अली ने ट्रंप के फैसले को अवैध करार दिया था और कहा था कि फंडिंग रोकने के लिए कांग्रेस की मंजूरी जरूरी है। इस न्याय विभाग ने उच्च न्यायालय से हस्तक्षेप की मांग की। हालांकि, वाशिंगटन स्थित संघीय अपील अदालत ने भी न्यायाधीश अली के फैसले पर रोक लगाने से इनकार कर दिया। लेकिन मुख्य न्यायाधीश जॉन रॉबर्ट्स ने 9 सितंबर को आदेश पर अस्थायी रोक लगा दी, जिसे अब पूर्ण न्यायालय ने अनिश्चितकाल तक बढ़ा दिया है।

पहली भी सुप्रीम कोर्ट ने ट्रंप को दी है राहत : यह पहली बार नहीं है जब सुप्रीम कोर्ट ने ट्रंप को राहत दी है। पहले भी कोर्ट ने आपातकालीन अपीलों पर ही प्रवासियों की सुरक्षा खत्म करने, हजारों संघीय कर्मचारियों को हटाने, ट्रांसजेंडर सैनिकों को सेना से निकालने और स्वतंत्र सरकारी एजेंसियों के प्रमुखों को हटाने की अनुमति दी थी। हालांकि ये सभी कानूनी जीतें अंतिम फैसला नहीं हैं। ट्रंप ने हाउस स्पीकर को पत्र लिख कहा था- वह पैसा खर्च नहीं करेंगे राष्ट्रपति ट्रंप ने 28 अगस्त को हाउस स्पीकर माइक जॉनसन को पत्र लिखकर कहा था कि वह 4.9 अरब डॉलर की कांग्रेस से मंजूर विदेशी मदद खर्च नहीं करेंगे। इसके लिए उन्होंने पॉकेट रिसीशन (अधिनियम रद्दीकरण) नाम की दुर्लभ प्रक्रिया अपनाई। इसके तहत राष्ट्रपति बजट वर्ष के आखिर में कांग्रेस से अनुरोध कर सकता है कि स्वीकृत पैसा खर्च न किया जाए। लेकिन बजट वर्ष खत्म होने से पहले 45 दिन की मंजूरी की अवधि पूरी नहीं होती, जिससे व्हाइट हाउस का दावा है कि पैसे खर्च न करने का अधिकार मिल जाता है। अदालत ने स्पष्ट किया- यह अंतिम फैसला नहीं सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि विदेश नीति पर राष्ट्रपति की शक्तियां इस मामले में अहम हैं। हालांकि अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि यह अंतिम फैसला नहीं है।

अमेरिकी यौन अपराधी एप्सटीन केस में मस्क का नाम सामने आया; प्राइवेट आइलैंड जाने की योजना बनाई थी

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी यौन अपराधी जेफ्री एप्सटीन की संपत्ति से जुड़े नए दस्तावेज सामने आए हैं। इनमें खुलासा हुआ है कि 2007 में दोषी ठहराए जाने के बाद भी एप्सटीन कई बड़े नेताओं और उद्योगपतियों से जुड़े रहे। इन नामों में टेस्ला मालिक इलॉन मस्क, पेपाल के सह-संस्थापक पीटर थिल और ट्रम्प के सहयोगी स्टीव बैनन शामिल हैं। अमेरिकी हाउस ओवरसाइट और गवर्नमेंट रिफॉर्म कमेटी को कुल 8,544 दस्तावेज सौंपे गए हैं। इनमें रोजाना के शेड्यूल, फ्लाइट लॉग, पैसों के रिकॉर्ड और फोन मैसेज शामिल हैं।

दस्तावेजों के मुताबिक, दिसंबर 2014 में मस्क की एप्सटीन के प्राइवेट आइलैंड की यात्रा की योजना बनी थी। एक नोट में लिखा था-क्या यह अब भी तय है? वहीं 2017 में पीटर थिल से लंच और 2019 में स्टीव बैनन के साथ नाश्ते का जिक्र है। यह मुलाकात एप्सटीन की गिरफ्तारी से कुछ महीने पहले की बताई जा रही है।

रिकॉर्ड्स में प्रिंस एंड्रयू से जुड़े मसाज भुगतान का भी उल्लेख है। साथ ही साल 2000 से फ्लाइट लॉग्स में एप्सटीन, गिसलेन मैक्सवेल, प्रिंस एंड्रयू और अन्य लोगों की यात्राओं का विवरण दर्ज है। डेमोक्रेट सांसदों ने कहा कि दस्तावेज दिखाते हैं कि एप्सटीन 2007 के विवादित प्लीडील के बाद भी ताकतवर और अमीर लोगों से नजदीकी बनाए हुए थे। एप्सटीन पर दर्जनों नाबालिग लड़कियों के यौन शोषण के आरोप थे, लेकिन 2007 में फ्लोरिडा में हुए एक प्लीडील के तहत उसने सिर्फ एक वेश्यावृत्ति से जुड़े आरोप कबूल किए।

नतीजा यह हुआ कि उसे 13 महीने की जेल हुई, वह भी दिन में काम करने की अनुमति के साथ। बाकी गंभीर आरोप हटा दिए गए। समझौते में यह भी तय था कि उसके संभावित सहयोगियों या बड़े नेटवर्क की जांच नहीं होगी। वहीं, रिपब्लिकन नेताओं ने आरोप लगाया कि डेमोक्रेट्स ने राजनीतिक फायदा लेने के लिए चुनिंदा कागजात ही जारी किए हैं। कई दस्तावेज अभी भी पीड़ितों की सुरक्षा के लिए सील हैं। आने वाले हफ्तों में और खुलासे हो सकते हैं। एप्सटीन ने 2019 के आखिर में जेल में आत्महत्या कर ली थी।

हाइब्रिड मॉडल से चल रहा है पाकिस्तान, सेना और सरकार मिलकर करते हैं शासन, ख्वाजा आसिफ का कबूलनामा

इस्लामाबाद / वॉशिंगटन , एजेंसी। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने खुले तौर पर स्वीकार किया है कि देश में शासन का संचालन हाइब्रिड मॉडल के तहत होता है, जहां सेना और नागरिक सरकार मिलकर फैसले लेती है। आसिफ ने यह बयान एक पत्रकार को दिए एक साक्षात्कार में दिया है। उन्होंने साफ कहा कि पाकिस्तान की सत्ता में सेना का दखल है और निर्णय सहमति से लिए जाते हैं।

पाकिस्तान में सेना प्रमुख का प्रभाव इतना ज्यादा क्यों : जब ख्वाजा आसिफ से पूछा गया कि पाकिस्तान में सेना प्रमुख का प्रभाव इतना ज्यादा क्यों है कि रक्षा मंत्री भी उसके अधीन दिखाई देते हैं। इस पर आसिफ ने कहा, यह पूरी तरह समान नहीं है, लेकिन फैसले सहमति से लिए जाते हैं। हम असहमत हो सकते हैं, लेकिन अंत में सामूहिक निर्णय ही लागू होता है। जब उनसे तुलना की गई कि अमेरिका में रक्षा मंत्री के पास जनरलों को बर्खास्त करने का अधिकार होता है, जबकि पाकिस्तान में ऐसा नहीं है, तो आसिफ ने अमेरिका की व्यवस्था को डीप स्टेट कहकर टाल दिया।

पहले भी हाइब्रिड शासन की तारीफ कर चुके हैं आसिफ : पाकिस्तानी अखबार के मुताबिक, आसिफ ने पहले भी इस हाइब्रिड शासन प्रणाली की तारीफ करते हुए इसे पाकिस्तान की आर्थिक और प्रशासनिक समस्याओं को हल करने के लिए व्यावहारिक आवश्यकता बताया था। उनका कहना था कि यह आदर्श लोकतंत्र नहीं है, लेकिन मौजूदा हालात में यही व्यवस्था देश के लिए बेहतरीन काम कर रही है।

अमेरिका से बढ़ते रिश्तों पर चीन को भरोसा : इस दौरान ख्वाजा आसिफ से पाकिस्तान के अमेरिका और चीन के बीच संतुलन पर भी सवाल पूछा गया। हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने व्हाइट हाउस में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शाहबाज

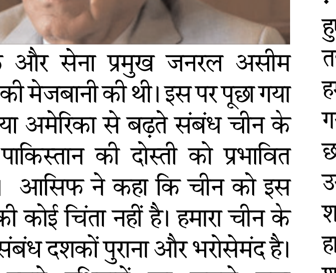

शरीफ और सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर की मेजबानी की थी। इस पर पूछा गया कि क्या अमेरिका से बढ़ते संबंध चीन के साथ पाकिस्तान की दोस्ती को प्रभावित करेंगे। आसिफ ने कहा कि चीन को इस बात की कोई चिंता नहीं है। हमारा चीन के साथ संबंध दशकों पुराना और भरोसेमंद है। चीन हमारे हथियारों का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है। हमारी वायुसेना, पनडुब्बियां और कई बड़े रक्षा उपकरण वहीं से आते हैं। अमेरिका जैसे देशों की अविश्वसनीयता की वजह से चीन के साथ हमारा सहयोग और भी मजबूत हुआ है। उन्होंने साफ कहा कि पाकिस्तान का रणनीतिक भविष्य चीन के साथ ही जुड़ा हुआ है, हालांकि अमेरिका के साथ संबंध लेन-देन वाले और थोड़े चोचलेबाजी जैसे रहे हैं।

सऊदी अरब के साथ रक्षा समझौता : आसिफ ने सऊदी अरब के साथ हाल ही में हुए समझौते पर भी बात की। इस समझौते के तहत किसी एक देश पर हमले को दोनों पर हमला माना जाएगा। हालांकि जब उनसे पूछा गया कि क्या पाकिस्तान की परमाणु सुरक्षा छत्रछाया सऊदी अरब को भी कवर करेगी, तो उन्होंने टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। शरीफ ने यूएनजीए में ट्रंप की तारीफ की व्हाइट हाउस बैठक के एक दिन बाद, प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने भाषण का बड़ा हिस्सा अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप की तारीफ में समर्पित किया। उन्होंने ट्रंप को मैन ऑफ पीस बताते हुए उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामित करने की बात कही। हालांकि भारत का कहना है कि भारत-पाकिस्तान युद्धविराम समझौता दोनों देशों के डीजीएमओ के बीच सीधे संपर्क से हुआ था, इसमें किसी अन्य नेता की भूमिका नहीं थी।

अमेरिका के शिकागो में इमिग्रेशन दफ्तर के बाहर प्रदर्शन, फेडरल एजेंट्स ने आंसू गैस और पेपर बॉल्स दागे : शिकागो, एजेंसी। अमेरिका के शिकागो में शुक्रवार को इमिग्रेशन एंड कस्टम्स इन्फोर्समेंट ऑफिस के बाहर हिंसक झड़प हुई। करीब 100 लोग हिरासत केंद्र की खराब हालत के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे थे। कुछ प्रदर्शनकारियों ने रास्ता रोक दिया, जिससे फेडरल एजेंट्स ने आंसू गैस और पेपर बॉल्स चलाए। कई लोग घायल हुए और एक-दूसरे की आंखों में पानी डालकर मदद करते दिखे। प्रदर्शनकारियों का कहना था कि हिरासत में रहने वालों को खाने-पीने और दवाइयों की कमी है।

जानकारी

अंडे का सफेद भाग भी हो सकता है सेहत के लिए नुकसानदायक

क्या आप भी रोजाना अंडे खाते हैं? पोषक तत्वों से भरपूर होने के कारण अंडे को दुनियाभर में खाया जाता है और इससे सैकडों अलग-अलग तरह की डिशेज भी बनाई जाती हैं। आपने लोगों को यह भी कहते सुना होगा कि अंडे का पीला भाग (जर्दी) ज्यादा नहीं खाना चाहिए, क्योंकि ये शरीर में कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाता है। लोग अंडे के सफेद हिस्से को इसीलिए सुरक्षित मानते हैं क्योंकि इसमें फैट कम होता है और कैलोरीज भी कम होती हैं। मगर क्या आप जानते हैं कि अंडे का सफेद हिस्से का भी ज्यादा सेवन करना आपके लिए खतरनाक हो सकता है। जी हां, अंडे के सफेद हिस्से के कुछ दुष्प्रभाव होते हैं, जिनके बारे में आपको जरूर जानना चाहिए।

सल्मोना बैक्टीरिया बना सकता है बीमार

अंडे के सफेद भाग में एक खास बैक्टीरिया हो सकता है, जिसे सैलमोनेला कहते हैं। ये एक तरह का बैक्टीरिया है, जो आमतौर पर चिकन के आंतों में पाया जाता है, लेकिन कई बार ये बैक्टीरिया अंडे के अंदर भी मौजूद हो सकता है। अगर आप इस बैक्टीरिया से प्रभावित अंडे से बना हाफ फ्राई या कच्चा अंडा खाते हैं, तो ये आपको बीमार बना सकता है। इससे बचने का एक आसान तरीका ये है कि अंडे को हाई टेम्प्रेचर पर पकाएं या उबालें, जिससे ये बैक्टीरिया नष्ट हो जाए। अधकच्चे या कम पके अंडों में इस बैक्टीरिया के होने की संभावना बनी रहती है।

बायोटीन की हो सकती है कमी

कच्चे अंडे में एक अन्य बैक्टीरिया के पाए जाने की संभावना रहती है, जिसे एल्बुमेन (albumen) कहते हैं। ये बैक्टीरिया भी आपकी सेहत के लिए खतरनाक हो सकता है। अगर आप अंडे के सफेद भाग का सेवन कच्चा करते हैं, तो आपके शरीर में ये बैक्टीरिया प्रवेश कर सकता है। इस बैक्टीरिया का दुष्प्रभाव ये है कि ये आपके शरीर में मौजूद बायोटिन को नष्ट करने लगता है, जिसके कारण त्वचा संबंधी कई तरह की समस्याएं हो सकती हैं और बाल झड़ना शुरू हो सकते हैं। बायोटिन एक जरूरी तत्व है जो हमारे शरीर में त्वचा और बालों की ग्रोथ के लिए जरूरी होता है।

हो सकती है एलर्जी

एल्बुमेन प्रोटीन के कारण कई लोगों को एलर्जी की समस्या भी हो सकती है। इस एलर्जी के कारण शरीर में पित्ती उछलना, त्वचा पर दाने निकलना, सूजन आना, नजला, सांस की घरघराहट, दस्त, उल्टी, खांसी, ऐंठन, छींक, आदि समस्याएं हो सकती हैं। इन लक्षणों के दिखने पर डॉक्टर से संपर्क करें, अन्यथा समस्या हो सकती है।

प्रोटीन की ज्यादा मात्रा खतरनाक

चिकित्सकों के अनुसार अगर आपको किडनी से जुड़ी किसी तरह की कोई समस्या है, तो ज्यादा मात्रा में प्रोटीन आपके लिए खतरनाक हो सकता है। जिन लोगों का ग्लोमरगुलर फिल्टरेशन रेट (जिस गति से किडनी खून को फिल्टर कर मूत्र को अलग करती है) कम है, उनके लिए अंडे का प्रोटीन से खतरनाक हो सकता है। जिन लोगों को किडनी से जुड़ी समस्या है उन्हें 0.6 से 0.8 ग्राम प्रोटीन से ज्यादा नहीं लेना चाहिए। अगर किडनी या लिवर से जुड़ी कोई समस्या है, तो अंडे खाने से पहले डॉक्टर की सलाह जरूर ले लें।

आपकी थाली ही आपको बना देती है डायबिटीज का शिकार

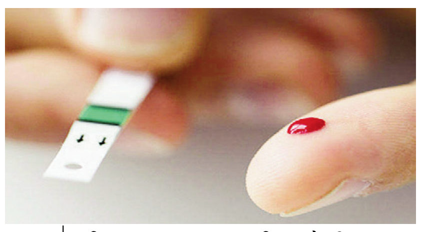

सही खान-पान स्वस्थ जीवन के लिए एक फिटनेस रूटीन के रूप में बहुत जरूरी है। यह हमारे शरीर की कोशिकाओं को शक्ति प्रदान कर हमें ऊर्जा प्रदान करने में मदद करता है। अगर हम अपने जीवन में खान-पान की अच्छी आदतों को शामिल करते हैं तो हम बेहतर जीवन हासिल कर सकते हैं, लेकिन अगर ऐसा नहीं होता तो हमें डायबिटीज और अन्य क्रोनिक डीजिज का शिकार होना पड़ सकता है। हालांकि, हमारे आस-पास सूचनाओं का भंडार है, लेकिन कभी-कभार यह समझना बहुत मुश्किल हो जाता है कि कौन से खाद्य पदार्थ हमारे लिए सही हैं और कौन से नहीं। कई ऐसे मिथक भी हैं, जो हमारी खान-पान की आदतों को बिगाड़ सकते हैं।

कैसी होती है डायबिटीज?

इससे पहले कि हम ऐसे कुछ खाद्य मिथकों के बारे में बात करें, उससे पहले डायबिटीज के बारे में मूल बातों को समझना बहुत जरूरी हैं। स्वस्थ शरीर के लिए हमें ऊर्जा की बहुत जरूरत होती है। यह ऊर्जा खाद्य पदार्थों से मिलने वाले ग्लूकोज से आती है, विशेषकर तब, जब यह हमारे पैनक्रियाज से इंसुलिन के रूप में टूटती है। जब शरीर इंसुलिन का प्रतिरोधी हो जाता है और हमारी दैनिक जरूरतों के अनुसार ग्लूकोज को नहीं तोड़ पाता है, तब वह स्थिति डायबिटीज का रूप ले लेती है।

हर सेकंड में होती है मौत

इंटरनेशनल डायबिटीज फेडरेशन के मुताबिक, हर एक सेकंड में डायबिटीज से होने वाली परेशानी के कारण एक व्यक्ति की मौत हो जाती है। भारत विश्व में डायबिटीज का केंद्र है, जहां रोजाना इस मर्ज के रोगियों की संख्या बढ़ती जा रही है।

डायबिटीज का प्रमुख कारण मोटापा

डॉ. ईसाक अब्बास का कहना है कि डायबिटीज एक क्रॉनिक डिजीज है, जिसे दुनियाभर में लाखों लोग प्रभावित हैं। जब यह अपने अधिकतम स्तर पर होती है तो यह हमारे शरीर में किसी को भी प्रभावित कर सकती है। उन्होंने कहा कि इसका सबसे प्रमुख कारण है मोटापा या फिर जरूरत से ज्यादा वजन होना। हालांकि ये हमारे शरीर के अंदरूनी या बाहरी फैट दोनों से जुड़ा हुआ है। उन्होंने बताया कि डॉगनट्स, मफिन, सीरियल और कैंडी जैसे प्रोसेस्ड फूड आपके पेट पर चर्बी को बढ़ा सकते हैं और आपको डायबिटीज का शिकार बना सकते हैं। इसी तरह स्पोर्ट और एनर्जी ड्रिंक भी आपके लिए नुकसानदेह हैं, क्योंकि ये भी मोटापे का कारण बनते हैं। इसलिए हमारे लिए सबसे जरूरी है कि हम प्रोसेस्ड फूड को सीमित करें और प्राकृतिक फूड को अपनी डाइट का हिस्सा बनाएं।

हेल्दी फैट का चुनाव करें

डॉ. ईसाक के मुताबिक, दूसरा सबसे बड़ा मिथ यह है कि फैट हमारा दुश्मन नहीं हैं। नट, ऑलिव ऑयल, फिश ऑयल, फ्लैक्स सीड और एवोकेडो से प्राप्त हेल्दी फैट हमारी कोशिकाओं को मजबूत बनाने का काम करते हैं। नट्स और बीज भी हेल्दी फैट का अच्छा स्त्रोत हैं। नट्स और बीज में ग्लाइसेमिक मात्रा कम होती है और एंटी-इंफ्लेमेटरी प्रभाव होता है, जो इंसुलिन प्रतिरोध के विकास को रोकने में मदद कर सकता है। लोगों के बीच यह मिथक है कि अनसैच्यूरेटेड फैट, हेल्दी फैट है जबकि सैच्यूरेटेड फैट, अनहेल्दी फैट।

हालांकि यह सच है कि अनसैच्यूरेटेड फैट, विशेष रूप से मछली (जैसे सैल्मन और टूना) और पौधों से प्राप्त होने वाला फैट हमारे लिए सबसे अच्छा होता है। हमें पूरी तरह से सैच्यूरेटेड फैट से बचने की आवश्यकता नहीं है। अच्छा नियंत्रण और संतुलन एक आदर्श तरीका है, जिससे हम अपनी डायबिटीज कंट्रोल कर सकते हैं और इसलिए हमें अपनी डाइट में डेयरी और रेड मीट शामिल कर सकते हैं।

नट्स और बीज को बनाएं अपनी प्लेट का हिस्सा

डॉ. ईसाक के मुताबिक, नट्स और बीज के बाद हमें अपनी प्लेट में शामिल करने की जरूरत है फल और सब्जियों की। फल अच्छे एंटी-ऑक्सीडेंट होते हैं और यह हमारी भूख को शांत करने के लिए पोषण से भरे होते हैं। दिन में तीन बार फलों का सेवन वास्तव में 18 फीसदी तक डायबिटीज के जोखिम को कम कर सकता है।

फलों के रंगों पर न जाएं

इसके अलावा हमें अक्सर गहरे रंग के फलों का सेवन करने की सलाह दी जाती है। यह भी एक आम खाद्य मिथक है। हमें अपनी डाइट के हिस्से के रूप में हमेशा ताजे फलों का सेवन करना चाहिए, लेकिन उनमें रंग की कमी को लेकर किसी प्रकार की बाधा नहीं होनी चाहिए। प्याज, लहसुन और मिर्च जैसी गैर-हरी सब्जियां डायबिटीज की रोकथाम की आवश्यक घटक हैं। इन खाद्य पदार्थों का ब्लड शुगर और फाइबर और फाइटोकेमिकल्स पर लगभग न के बराबर प्रभाव पड़ता है।

कार्ब पर नजर रखें

इसके साथ ही कार्ब पर भी ध्यान देना बहुत जरूरी है। कार्बोहाइड्रेट हमारे फिटनेस के सपने को तोड़ने का काम करता है। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि हमें हमेशा अपने कार्ब स्त्रोतों पर ध्यान देना चाहिए। बीन्स और फलियां कार्ब की आदर्श स्रोत हैं, जिनमें ग्लाइसेमिक की मात्रा कम होती है। यह हमें प्रोटीन और घुलनशील फाइबर भी प्रदान करते हैं, जो हमारा पेट भरा रखने में मदद कर सकते हैं।

प्रोटीन के प्राकृतिक स्रोत अपनाएं

सबसे अंतिम मिथक है प्रोटीन पर हमारी निर्भरता। प्रोटीन हमारे शरीर के लिए बहुत जरूरी है, लेकिन इस पर निर्भर होना भी आपके शरीर के लिए नुकसानदेह साबित हो सकता है। दरअसल आपको प्रोटीन के प्राकृतिक स्त्रोतों पर ध्यान देना चाहिए। मछली, बीन्स, ऑर्गेनिक चिकन या टर्की, अंडे, डेयरी और फीका दही प्रोटीन के सबसे अच्छे स्त्रोत हैं। आप अपनी प्लेट में इन चीजों को शामिल कर डायबिटीज जैसी बीमारी से दूर रह सकते हैं।

डायबिटीज से छुटकारे के लिए बदलनी होंगी अपनी आदतें

डायबिटीज देश में तेजी से बढ़ने वाली बीमारियों में से एक है। एक शोध की मानें तो पिछले 25 बरस में इस बीमारी के मामलों में देश में 64 प्रतिशत का इजाफा हुआ है और विशेषज्ञ इस बढ़ोतरी को देश की आर्थिक प्रगति के साथ जोड़कर देख रहे हैं। इससे भी ज्यादा परेशान करने वाली बात यह है कि आने वाले छह बरसों में देश में इस बीमारी से पीड़ित मरीजों की संख्या 13.5 करोड़ से ज्यादा हो सकती है, जो वर्ष 2017 में 7.2 करोड़ थी। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च, इंस्टीट्यूट फॉर हेल्थ मेट्रिक्स एंड एवेल्यूएशन और पब्लिक हैल्थ फाउंडेशन ऑफ इंडिया की एक रिपोर्ट के मुताबिक पिछले 25 बरस में भारत में डायबिटीज के मामलों में 64 प्रतिशत का इजाफा हुआ। अब विश्व बैंक की एक रिपोर्ट पर नजर डालें तो 1990 में भारत की प्रति व्यक्ति आय 24, 867 रुपए थी, जो 2016 में बढ़कर 1,09,000 हो गई। इसका सीधा अर्थ है कि खुशहाली बढ़ने के साथ-साथ मधुमेह के रोगी भी निरंतर बढ़ते जा रहे हैं। शोध के अनुसार साल 2017 में दुनिया के कुल डायबिटीज रोगियों का 49 प्रतिशत हिस्सा भारत में था और 2025 में जब यह आंकड़ा 13.5 करोड़ पर पहुंचेगा तो देश की सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं पर एक बड़ा बोझ होने के साथ ही आर्थिक रूप से भी देश के समक्ष एक बड़ी चुनौती पेश करेगा, क्योंकि सरकार देश की एक बड़ी आबादी को मुफ्त स्वास्थ्य बीमा की सुविधा प्रदान कर रही है। सीनियर कंसलटेंट, इंटरनल मेडिसिन, डॉ. गौरव जैन के अनुसार डायबिटीज में शरीर में इन्सुलिन बनाने कि प्रक्रिया बाधित या कम हो जाती है। इन्सुलिन से शरीर को ऊर्जा मिलती है और इस प्रक्रिया के प्रभावित होने से शरीर के प्रमुख अंगों का संचालन बाधित होने लगता है। टाइप 1 डायबिटीज में हमारा शरीर में इन्सुलिन बनना बंद हो जाती है और मरीज को मुख्यत: इन्सुलिन थैरेपी पर आश्रित होना पड़ता है। टाइप 2 डायबिटीज में शरीर में इन्सुलिन के इस्तेमाल कि प्रक्रिया बाधित होती है। यह टाइप 1 से कम घातक होती है और आम है। इसमें दवाएं खाकर बीमारी को नियंत्रित रखा जा सकता है।

वहीं सीनियर एंडोक्रिनोलॉजिस्ट, डॉ. साकेत कांत, ने एक सर्वे के हवाले से बताया कि राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के प्राइवेट स्कूलों में पढ़ने वाले तकरीबन 30 फीसदी बच्चे मोटापे की गिरफ्त में हैं, जिनमें से बहुत से बच्चे प्री-डायबटिक हाइपरटेंशन के भी शिकार थे। यह आने वाली पीढ़ियों की सेहत की हालत की बड़ी चिंताजनक तस्वीर है। उनका कहना है कि बच्चों की इस हालत के लिए बच्चों से ज्यादा उनके माता-पिता जिम्मेदार हैं, क्योंकि उनकी दिनचर्या और खान-पान की आदतें बच्चों को भी बीमारी के मुहाने पर ले आई हैं। डॉ. साकेत कांत मानना है कि बच्चों पर किसी भी तरह की कठोर पाबंदी लगाने या उन्हें हिदायतें देने की बजाय अभिभावक स्वयं स्वस्थ आदतें अपनाएं। डॉ. निधि मल्होत्रा का कहना है कि यदि परिवार में किसी को डायबिटीज है तो बाकी सभी सदस्यों को सावधान होना होगा। हालांकि डायबिटीज होने पर इसकी दवा लेना आवश्यक है। मीठे का सेवन कम करने, खानपान और दिनचर्या में बदलाव और स्वस्थ जीवन शैली अपनाने के साथ ही दवा भी लेनी होगी अन्यथा यह बीमारी एक घुन की तरह मरीज के सारे शरीर को खोखला करती रहती है और अगर इस पर पूरी सावधानी से नजर न रखी जाए तो किडनी की समस्याएं, हृदयरोग, त्वचा संबंधी समस्याएं, आंखों की रौशनी का प्रभावित होना, सुनने में दिक्कत, पैरों की नसों पर प्रभाव और घाव जल्दी न भरने जैसी बहुत सी परेशानियां घेर सकती हैं।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ)
कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। महत्त्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। परामर्श व परिस्थिति सभी का सहयोग मिलेगा। शुभांक-2-6-8

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो)
कल का परिश्रम आज लाभ देगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते हैं। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। सुख-आनंद कारक समय है। शुभांक-1-3-5

मिथुन (का की कू घ ड छ के को हा)
लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा। कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी। सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होंगी। मनोविनोद बढ़ेंगे। व्ययाधिक्य का अवसर आ सकता है। कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। आध्यात्मिक रुचि बनेगी। शुभांक-3-6-7

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो)
कुछ पिछले संकट अब सिर उठा सकते हैं। निकट जनों के लिए अर्थव्यवस्था हेतु तोड़-तोड़ करना पड़ेगा। अपने संघर्ष में स्वयं को अकेला महसूस करेंगे। विशेष परिश्रम से ही अभिष्ट कार्य सिद्ध होंगे। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। शुभांक-6-8-9

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे)
रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार भी मिलेंगे। किसी से कहा सुनी न हो यह ध्यान रहे। लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। शुभांक-2-5-7

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो)
ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। जो चल रहा है उसे सावधानीपूर्वक संभालें। यात्रा का योग हैं। शुभांक-2-5-7

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते)
विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। शुभ कार्यों में अड़चनें और परिवार के बुजुर्ग-जनों से मतभेद रहेगा। किसी से वाद-विवाद अथवा कहासुनी होने का भय रहेगा। शुभांक-2-5-6

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू)
कुछ आर्थिक चिंताएं भी कम होगी। नियोजित धन से लाभ होने लगेगा। घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी। बढ़ते घाटे से कुछ राहत मिलने लगेगी। समय का सदुपयोग करें। साधन और भोग-विलास के प्रचुर अवसर होंगे। शुभांक-2-6-8

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे)
परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। पर प्रपंच में ना पड़कर काम पर ध्यान दीजिए। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। आलस्य का त्याग करें। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। जान-पहचान का दायरा बढ़ेगा। धन वृद्धि होगी। शुभांक-4-6-8

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी)
जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। शुभांक-5-7-9

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा)
लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। शुभांक-4-6-7

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची)
अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रखें। व्यापार में प्रगति होगी। अपने अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा। स्त्री-संतान पक्ष का सहयोग मिलेगा। शुभांक-5-7-9

काकुरो पहेली - 1853

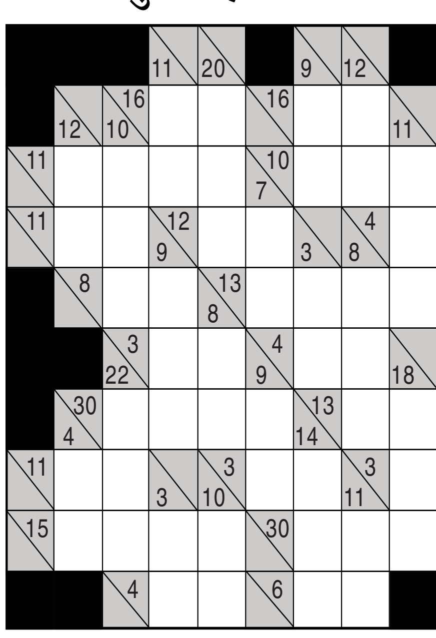

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए. किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणतः

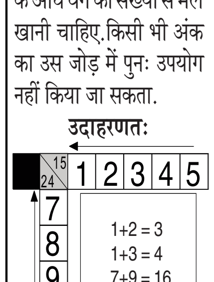

1+2 = 3
1+3 = 4
7+9 = 16
8+9 = 17

काकुरो - 1852 का हल

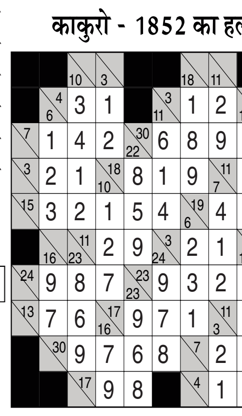

लॉफिंग जोन

प्रेमिका (प्रेमी से)- नरेश, आप जुआ मत खेला करो, जुएँ में अगर आदमी एक दिन जीतता है तो दूसरे दिन हारता भी है।
नरेश- तो ठीक है! तुम्हें घबराने की कोई जरूरत नहीं। आज से मैं एक दिन छोड़कर जुआ खेला करूँगा!

एक रईसजादी ने दो घोड़े खरीदे। उन दोनों घोड़ों की अलग-अलग पहचान के लिए अंतर कैसे रखा जाए, इस बाबद उसने अपने पड़ोसी से पूछा। पड़ोसी ने सुझाया कि एक घोड़े की पूँछ काट दो।
उसने पूँछ काट दी, लेकिन दूसरे दिन दूसरे घोड़े की पूँछ एक झाड़ी में फँस गई और काटनी पड़ी। अब दोनों घोड़े पूँछ कटे हो गए थे। फिर पहचान की समस्या आ खड़ी हुई। उसने फिर पड़ोसी से राय ली।
पड़ोसी ने कहा कि एक घोड़े का एक कान काट दो, लेकिन दूसरे दिन दूसरे घोड़े का कान खेत के चारों तरफ लगी तार फेंसिंग में उलझ कर कट गया।
उसने सुझाया कि उनकी ऊँचाई नाप लो। रईसजादी ने घोड़ों की ऊँचाई नापकर पड़ोसी को बताई- 'सफेद घोड़ा काले घोड़े से दो इंच ऊँचा है।'

फिल्म वर्ग पहेली- 1853

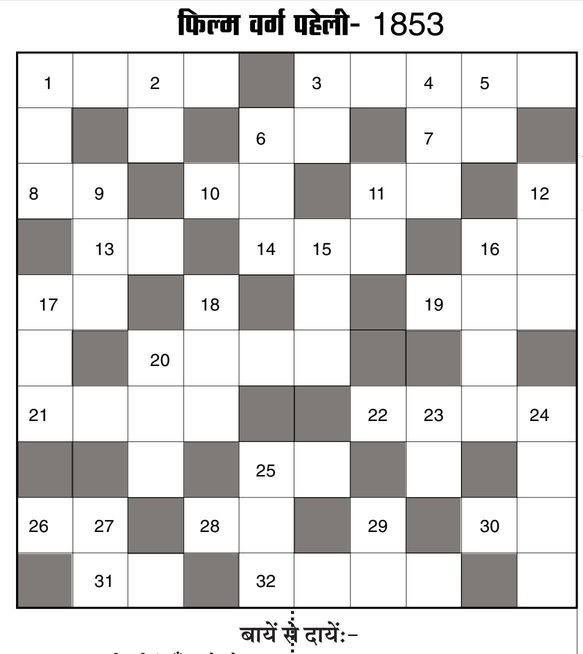

बायें से दायें:-

१. शाहरूख, जूही की 'चाँद तारे तोड़ लाऊँ' गीत वाली फिल्म-२,२
३. 'इस दीवाने लड़के' गीत वाली नसीर, आमिर, सोनाली की फिल्म-५
६. गोविंदा, नीलम की 'मैं तो हूँ सबका मेरा ना कोई' गीत वाली फिल्म-२
७. संजय कपूर, माधुरी की फिल्म-२
८. 'वाटर' के निर्देशिका कौन हैं-२
१०. अमिताभ, फरदीन खान, करीना कपूर की फिल्म-२
११. श्रेयस तलपदे, आयशा की 'ये हौसला कैसे झुके' गीत वाली फिल्म-२
१३. अनिल कपूर, श्रीदेवी की फिल्म-२
१४. प्रदीपकुमार, कल्पना की 'जिस दिल में बसा था प्यार' गीत वाली फिल्म-३
१६. 'मुझे तेरे जैसी लड़की' गीत वाली डिनो मारिया, बिपाशा की फिल्म-२
१७. अमिताभ, अजय, ऐश्वर्या की 'दिल डूबा नीली' गीत वाली फिल्म-२
१९. फिल्म 'कुछ कुछ होता है' में काजोल के किरदार का नाम था-३
२०. ऋषिकपूर, जयाप्रदा की फिल्म-४
२१. 'दुनिया ने सुन ली है चुपके से' गीत वाली धर्मेन्द्र, हेमा की फिल्म-४
२२. जीतेंद्र, नीतूसिंह की 'कोई रोको ना दीवाने को' गीत वाली फिल्म-४
२५. अमिताभ, जया भादुड़ी की फिल्म-२
२६. राजेश खन्ना, मुमताज की 'गोरे रंग पे ना इतना गुमान' गीत वाली फिल्म-२
२८. 'दिलवालों के दिल का' गीत वाली मनोज बाजपेयी, रवीना की फिल्म-२
३०. 'ऐ लो प्यार के दिन' गीत वाली सनी, सुनील, सेलिना की फिल्म-२
३१. संजय, कुमार गौरव, पूनम 'अमीरों की शाम गरीबों' गीतवाली फिल्म-२
३२. 'फिर से आये बदरा' गीत वाली संजीव, शर्मिला, वहीदा की फिल्म-४

ऊपर से नीचे:-

१. दिलीपकुमार, मीनाकुमारी की फिल्म-३
२. 'मैं शायर तो नही' गीत वाली फिल्म-२
३. 'तू मेरे पास भी' गीत वाली डी. चक्रवर्ती, मनोज बाजपेयी, उर्मिला की फिल्म-२
४. अमिताभ बच्चन, संजीव कुमार, शर्मिला टैगोर की फिल्म-३
५. अरविंद स्वामी, मधु की फिल्म-२
६. 'तेरी गलियों में ना' गीत वाली फिल्म-३
९. राजेंद्र कुमार, वहीदा रहमान की फिल्म-३
११. राजेश खन्ना, बबीता की 'दांतों तले दबा कर होंठ' गीत वाली फिल्म-२
१२. 'अंबर हमारा रास्ता' गीत वाली अरूण, रघुवरन, बेबी शामली, श्रुति की फिल्म-३
१५. कमल हासन, शाहरूख, रानी की 'चाहे पंडित हो' गीत वाली फिल्म-१,२
१६. 'मेरे संग संग आया' गीत वाली धर्मेन्द्र, राजेश खन्ना, विनोद, हेमा की फिल्म-४
१७. शॉवरअली, ब्रजेश हीरजी, जूही, शिल्पा की 'मेरा मन भँवरा' गीत वाली फिल्म-३
१८. प्रेमनाथ, बीना राय की फिल्म-३
२०. राजेश, फिरोजखान, शार्मिला की 'जीवन से भरी तेरी आँखें' गीत वाली फिल्म-३
२३. 'सुबह सुबह जब' गीत वाली फिल्म-२
२४. शशिकपूर, शर्मिला टैगोर की फिल्म-२,२
२५. 'सावन का महीना पवन करे' गीत वाली फिल्म-३
२७. 'मुझ से दोस्ती करोगे' में करीना कपूर के किरदार का नाम क्या था-२
२९. 'तेरी याद बिछा के सोता हूँ' गीत वाली फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली- 1852

सूडोकु -1853

8		4	3	9	7	5		6
3					2			
		7	6	5				4
9	6		5			1		7
5		1	4		9	8		2
4		8					5	3
2				6	1	4		
			7					8
7		9	8	3	5	6		1

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से ९ तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -1852 का हल

7	8	4	9	5	2	6	1	3
9	6	2	4	3	1	8	5	7
1	3	5	7	8	6	2	4	9
4	2	3	6	1	5	9	7	8
8	5	9	2	4	7	1	3	6
6	7	1	3	9	8	4	2	5
3	1	7	8	6	4	5	9	2
5	9	6	1	2	3	7	8	4
2	4	8	5	7	9	3	6	1

शब्द पहेली - 1853

बाएँ से दाएँ

1.मूर्ख,बुद्धिहीन-4
3.रुई की फसल-3
5.वंश,खानदान-2
6.आह,पीड़ा भरी ध्वनि-3
7.जी,इच्छा,चित्त-2
9.पहनना-3
11.दास,नौकर,सेवक-5
14.अग्नि,आग-3
16.चयनित,स्वीकृत-4
17.जाति,संप्रदाय-2
18.उस समय-2
19.आदत,व्यवहार-4
23.माला का मोती-3
24.लालन-पालन-5
27.पूर्णिमा-3
28.वश,अधीन-2
30.खबर देने वाला-3
31.खदान,माइन-2
32.आश्रय,पनाह-3
33.संपत्ति-4

ऊपर से नीचे

1.घोड़े के पांव में लगने वाला लोहे का टुकड़ा-2
2.धारा के बीच में,अधर में-2,2
3.आफत,आपदा-3
4.एक समान-2
5.गृहपति,चांसलर-4
6.दाना-2
8.प्रतिकृति,प्रतिरूप-3
10.रोकर धनराशि-3
12.प्रेम ,आसक्ति-3
13.नीर,जल-2
15.भाग्य,तकदीर-3
17.जंबुल,जांब-3
18.टेंशन,परेशानी-3
20.काया,बदन-2
21.उष्णता-3
22.नाश होने योग्य-4
23.साम्राज्ञी,रानी-3
25.रमण करने योग्य-4
26.अदा,चोंचला-3
27.पूड़ी,गोलगप्पा-2
29.पिता की बहन-2
31.उर्वरक,गाय के गोबर से बना पदार्थ जो खेत में डाला जाता है-2

शब्द पहेली - 1852 का हल

कपिल शर्मा को धमकाने वाला आरोपी बंगाल से गिरफ्तार

एजेंसी

मुंबई। मुंबई क्राइम ब्रांच ने मशहूर कॉमेडियन और एक्टर कपिल शर्मा को धमकी देने वाले आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी की पहचान दिलीप चौधरी के रूप में हुई है, जिसे पश्चिम बंगाल के 24 परगना से पकड़ा गया है। गिरफ्तारी के बाद पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है। पश्चिम बंगाल से आरोपी को गिरफ्तार करने के बाद उसे मुंबई लाया गया। यहां पुलिस ने उसे कोर्ट में पेश किया, इसके बाद अदालत ने आरोपी को 3 सितंबर तक क्राइम ब्रांच की कस्टडी में रखने का आदेश दिया। बता दें कि कॉमेडियन कपिल शर्मा के कनाडा स्थित कैफे पर कुछ समय पहले फायरिंग हुई थी। कपिल के 'कैप्स कैफे' में दो बार फायरिंग होने की घटना ने सनसनी मचा दी थी। पिछले महीने 7 अगस्त को हुई इस फायरिंग की जिम्मेदारी गोल्डी ढिल्लों और लॉरेंस बिश्नोई गैंग ने ली थी। सोशल मीडिया पर वायरल एक पोस्ट में दावा किया गया कि कपिल को पहले फोन पर चेतावनी दी गई थी, जिसे उन्होंने नजरअंदाज किया। इसके बाद कैफे पर हमला हुआ और धमकी दी गई कि अगर वह अब भी नहीं मानें तो अगली कार्रवाई मुंबई में होगी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 16 अक्टूबर को आंध्र प्रदेश का दौरा करेंगे

अमरावती। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अगले महीने की 16 तारीख यानी 16 अक्टूबर को आंध्र प्रदेश में होंगे। वे यहां कुरनूल और नंदयाल ज़िलों का दौरा करेंगे और श्रीशैलम स्थित मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर में दर्शन भी करेंगे। राज्य के सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री नारा लोकेश ने इसकी जानकारी दी। मंत्री नारा लोकेश ने बताया कि प्रधानमंत्री राज्य के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू और उपमुख्यमंत्री के. पवन कल्याण सहित गठबंधन के नेताओं के साथ कुरनूल में एक रोड शो भी करेंगे। इस रोड शो के माध्यम से हाल ही में जीएसटी की दरों में की गयी कटौती और उससे होने वाले लाभ से लोगों को अवगत कराया जाएगा। प्रधानमंत्री अपने इस दौरे के दौरान कई नई परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास भी करेंगे। आंध्र प्रदेश विधान परिषद लॉबी में नारा लोकेश ने मंत्रियों और विधान पार्षदों को प्रधानमंत्री मोदी के दौरे का विवरण देते हुए कहा कि राज्य सरकार अभी से प्रधानमंत्री के भव्य स्वागत की तैयारियों में अभी से जुट गई है।

अमित शाह चार अक्टूबर को छत्तीसगढ़ के बस्तर आएंगे, एक्स पर लिखा-आने के लिए उत्सुक हूं

जगदलपुर। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह का चार अक्टूबर को छत्तीसगढ़ के बस्तर प्रवास लगभग तय माना जा रहा है। इसके लिए प्रशासन ने जगदलपुर के लालबाग मैदान में तैयारी शुरू कर दी है। अमित शाह बस्तर दशहरा के मुरिया दरबार में शामिल होंगे। साथ ही वे लालबाग मैदान में आमसभा को संबोधित करेंगे। अमित शाह के अलावा छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री समेत कई मंत्री, विधायक और सांसद भी बस्तर दशहरा में शामिल हो सकते हैं। गौरतलब है कि बस्तर सांसद और दशहरा समिति के अध्यक्ष महेश कश्यप समेत अन्य सदस्यों ने कुछ दिन पहले केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह से नई दिल्ली में मुलाकात की थी और उन्हें बस्तर के प्राचीन दशहरा पर्व समारोह में शामिल होने न्योता दिया था। शाह ने इस पर्व में आने की हामी भरी थी। अब प्रशासन भी तैयारियों में जुट चुका है। हालांकि बस्तर में शाह का और कौन-कौन सा कार्यक्रम होगा, ये अभी स्पष्ट नहीं है। अमित शाह ने एक्स पर लिखा-आने के लिए उत्सुक हूंइसी बीच अमित शाह ने 'एक्स' पर लिखा कि नक्सलवाद से मुक्त और शांति की ओर अग्रसर बस्तर अपने पर्व-त्योहार धूम-धाम से मना रहा है। आदिवासी संस्कृति और विरासत का प्रमाण 75 दिनों तक मनाया जाने वाला बस्तर दशहरा के मुरिया दरबार में आने का निमंत्रण मिला है, इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए उत्सुक हूं।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने आभानेरी उत्सव में की शिरकत, लोककलाकारो की प्रस्तुतियाँ रहीं आकर्षण का केंद्र

दौसा। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने आज चांदबावड़ी, दौसा में आयोजित दो दिवसीय आभानेरी उत्सव में भाग लिया। इस अवसर पर पारंपरिक लोक कलाकारों ने उनका भव्य स्वागत किया और रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से कार्यक्रम में चार चांद लगाए। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने विश्व पर्यटन दिवस पर प्रदेशवासियों को शुभकामनाएँ देते हुए कहा, ÷राजस्थान अपनी अतिथि सत्कार की परंपरा, सांस्कृतिक विरासत और लोक कलाओं के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। यहाँ मेहमान को भगवान का दर्जा दिया जाता है, और यही हमारी संस्कृति की आत्मा है। उन्होंने कहा कि आभानेरी उत्सव न केवल हमारी संस्कृति की पहचान को मजबूत करती हैं, बल्कि लोक कलाकारों को भी मंच प्रदान करती हैं। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार राजस्थान की विरासत और लोककलाओं को बढ़ावा देने के लिए ज़मीनी स्तर पर कार्य कर रही है, और इसके लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं, जिनका लाभ कलाकारों तक पहुँच रहा है। इस दौरान दिया कुमारी ने चांदबावड़ी की विजिट भी की और अधिकारियों को विशेष दिशा निर्देश दिए कि विरासत की इस धरोहर की सार संभाल का ध्यान रखा जाए । उन्होंने कहा कि ऐसे ऐतिहासिक स्थल का प्रचार प्रसार होना चाहिए क्योंकि यह हमारे लिए गर्व की बात है ।उन्होंने सभी से अपील कि सब बाहर की वस्तुओं को खरीदना बंद करे और स्वदेशी वस्तुओं की खरीदारी करे और भारत में बने प्रोडक्ट को प्राथमिकता दे।

बुलेट ट्रेन का सूरत-बिलिमोरा खंड 2027 में चालू हो जाएगा : रेल मंत्री

एजेंसी

सूरत। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि बुलेट ट्रेन परियोजना का पहला परिचालन खंड सूरत से बिलिमोरा के बीच 2027 में चालू हो जाएगा। उन्होंने सूरत में हाई स्पीड रेल परियोजना कार्य का जायजा लिया और परियोजना की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। वैष्णव ने मीडिया से बातचीत में बताया कि सूरत-बिलिमोरा के बीच काम तेजी से चल रहा है। स्टेशन का सिविल वर्क पूरा हो चुका है और फ़िनिशिंग व यूटिलिटी वर्क अभी चल रहा है। ट्रैक कार्यों में कई नई तकनीकों का उपयोग किया गया है, जो देश की किसी भी अन्य परियोजना में पहली बार अपनाई गई हैं। उन्होंने कहा कि बुलेट ट्रेन परियोजना में प्रयुक्त ये तकनीकें आने वाले समय में देश की अन्य रेल परियोजनाओं के लिए भी लाभकारी साबित होंगी। उन्होंने कहा कि सूरत स्टेशन पर पहला टर्नआउट सफलतापूर्वक स्थापित कर दिया गया है। टर्नआउट रेलवे ट्रैक का महत्वपूर्ण जंक्शन होता है। यह सुविधा हाई-स्पीड ट्रेनों के संचालन में सुगमता लाएगी। जब ट्रेनें 320 से 340

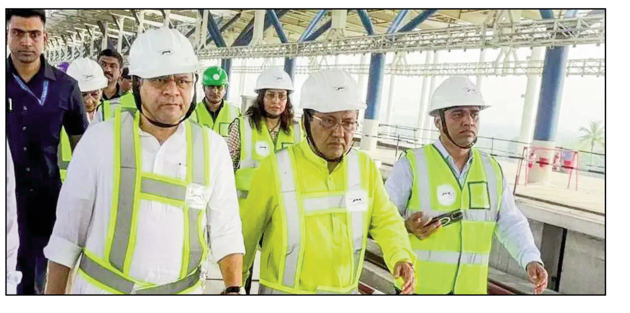

किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ती हैं और ट्रैक आपस में जुड़ते हैं, तो उसमें किसी भी प्रकार का गैप नहीं होना चाहिए। इस परियोजना में यह तकनीक सफलतापूर्वक अपनाई गई है। उन्होंने बताया कि पटरियों में रोलर बेयरिंग भी लगे हैं, जिससे बुलेट ट्रेन अधिक सुरक्षित और सुगमता से तेज़ गति से चल सकेगी। इसके अतिरिक्त, पटरियों पर स्लीपर कंक्रीट की बजाय मिश्रित सामग्री से बनाए गए हैं। इससे उच्च स्थायित्व, कम रखरखाव और तेज़ गति पर बेहतर प्रदर्शन सुनिश्चित होगा। यात्री सुविधा को और बेहतर बनाने एवं वातावरण में शोर को कम करने के लिए डैम्पर्स के रूप में एक कंपन अवशोषण तंत्र शुरू किया गया है। ये डैम्पर्स शोर और झटके को अवशोषित करेंगे। केंद्रीय मंत्री ने बताया कि इस परियोजना से हम सूरत से मुंबई एक घंटे में पहुंच सकेंगे। स्टेशन पुनर्विकास और ट्रैक बिछाने का काम लगातार जारी है। हाई-स्पीड रेल परियोजना अंततः कनेक्टिविटी में बदलाव लाएगी और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देगी। अहमदाबाद और मुंबई का पूरा खंड एक आर्थिक गलियारा बन जाएगा। यह परियोजना रेलवे प्रौद्योगिकी और यात्री अनुभव में भी नए मानक स्थापित करेगी। सूरत स्टेशन की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए रेल मंत्री ने बताया कि यहां सभी बुलेट ट्रेनें रुकेंगी। स्टेशन पर दो साइड ट्रैक और दो सेंट्रल ट्रैक के साथ दो प्लेटफॉर्म बनाए गए हैं–एक मुंबई की दिशा में और दूसरा अहमदाबाद की दिशा में। स्टेशन के मध्य में विशाल कंकर्स हॉल तैयार किया गया है, जिससे यात्री सुविधा और आवाजाही में सुगमता रहेगी।

बिहार के दो आर्द्रभूमि रामसर स्थलों में शामिल, देश में रामसर स्थलों की संख्या बढ़कर हुई 93

एजेंसी

नई दिल्ली। बिहार के दो आर्द्रभूमि को रामसर स्थलों की सूची में शामिल कर लिया गया। इनमें बक्सर जिले में गोकुल जलाशय (448 हेक्टेयर) और पश्चिम चंपारण जिले में उदयपुर झील (319 हेक्टेयर) शामिल है। इसके साथ रामसर स्थलों की संख्या बढ़कर 93 हो गई है। केन्द्रीय पर्यवरण मंत्री भूपेन्द्र यादव ने एक्स पर लोगों को बधाई देते हुए कहा बिहार के दो आर्द्रभूमि को रामसर स्थलों की सूची में शामिल कर लिया गया। इसमें बक्सर जिले में गोकुल जलाशय और पश्चिम

चंपारण जिले में उदयपुर झील शामिल है। इन दोनों के रामसर सूची में जुड़ने से आर्द्रभूमि संरक्षण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को और मज़बूत किया है। इससे कुल 93 रामसर स्थल हो गए हैं, जिनका क्षेत्रफल 13,60,719 हेक्टेयर है।उन्होंने कहा कि बिहार के दो आर्द्रभूमि को रामसर स्थलों की सूची में शामिल होना जैव विविधता, जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन और सतत आजीविका के लिए अपने समृद्ध आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा के प्रति भारत के संकल्प को दर्शाता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में, भारत कुल रामसर स्थलों की संख्या के मामले में एशिया में प्रथम और दुनिया में तीसरे स्थान पर बना हुआ है।

यूपी में 'आई लव मोहम्मद' विवाद के बाद पोस्टर वार तेज, योगी-मोदी के बैनरों पर सियासत

एजेंसी

रायबरेली/मुरादाबाद। उत्तर प्रदेश में 'आई लव मोहम्मद' पोस्टर विवाद से धार्मिक और राजनीतिक तनाव गहराता जा रहा है। लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के संसदीय क्षेत्र रायबरेली में भाजपा युवा मोर्चा के नेताओं ने काउंटर कैंपेन शुरू कर दिया है। शहर के प्रमुख चौराहों पर 'आई लव जय श्री राम', 'आई लव योगी आदित्यनाथ' और 'आई लव बुलडोजर' के बैनर लगाए गए हैं।

वहीं, दूसरी ओर मुरादाबाद में भी पोस्टरवार जारी है। लाजपत नगर स्थित श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर में कई लोग 'आई लव योगी', 'आई लव मोदी', 'आई लव महादेव' के पोस्टर हाथों में थामे हुए पहुंचे। कुछ लोगों ने तिरंगा लहराते हुए नारे लगाए। यह जुलूस 'आई लव मोहम्मद' विवाद के जवाब में निकाला गया, जहां लोग मंदिर में पूजा-अर्चना के बाद नारेबाजी करते नजर आए। स्थानीय हिंदू संगठनों ने इसे 'हिंदुत्व की विजय' का प्रतीक बताया। मुरादाबाद में पहले भी सांप्रदायिक तनाव की घटनाएं हो चुकी हैं, इसलिए पुलिस ने सतर्कता बरतते हुए भारी सुरक्षा व्यवस्था की है।

बता दें कि पूरा विवाद कानपुर के बारावफात जुलूस से शुरू हुआ था, जहां 'आई लव मोहम्मद÷ बैनर लगाने पर हंगामा मच गया। पुलिस ने बैनर हटाया तो मुस्लिम समुदाय ने विरोध

प्रदर्शन किया, जो बरेली, लखनऊ और अन्य शहरों तक फैल गया। अब हिंदू संगठनों ने जवाबी कार्रवाई में 'आई लव महादेव', 'आई लव राम' जैसे पोस्टर लगाए हैं।ये बैनर रतापुर, त्रिपुला समेत अन्य चौराहों पर प्रमुखता से नजर आ रहे हैं। भाजपा युवा मोर्चा के नि. मंडल अध्यक्ष विष्णु पद सिंह ने इन बैनरों को लगवाया। उन्होंने बात करते हुए कहा, 'हमने रायबरेली के कई चौराहों और अन्य कई स्थानों पर आई लव जय श्री राम, आई लव योगी आदित्यनाथ के पोस्टर लगवाए हैं। हमने ऐसा इसलिए किया, क्योंकि भगवान जय श्री राम हिंदू आस्था के प्रतीक हैं और योगी आदित्यनाथ उन्हीं के पदचिन्हों पर चलते हुए राम राज्य की स्थापना कर रहे हैं और गुंडे माफियाओं पर नकेल कस रहे हैं। सीएम योगी प्रदेश में हर जगह किसान, नौजवान, पीड़ित, शोषित, वंचित, पीड़ित और आदिवासी सभी के समान अवसर पैदा कर रहे हैं।

इंदौर के सीतलामाता बाजार में दिग्विजय सिंह के दौरे पर हंगामा, व्यापारियों ने किया विरोध

एजेंसी

इंदौर। मध्य प्रदेश के इंदौर शहर के सीतलामाता बाजार में उस समय राजनीतिक माहौल गरमा गया, जब कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह वहां पहुंचे। कुछ दिनों पहले इसी बाजार में भारतीय जनता पार्टी के विधायक मालिनी गौड़ के बेटे द्वारा मुस्लिम सेल्समैन को दुकानों से हटाने का मामला सामने आया था, जिसने शहर में बड़ा विवाद खड़ा कर दिया था।

हालांकि, थाने से बाहर निकलते ही स्थिति अचानक बदल गई। बड़ी संख्या में व्यापारी वहां मौजूद थे, जिन्होंने दिग्विजय सिंह का जमकर विरोध किया। नारेबाजी के बीच व्यापारियों ने उन्हें बाजार में प्रवेश न करने की चेतावनी दी। विरोध इतना तेज हो गया कि आक्रोशित लोगों ने मौके पर मौजूद डीसीपी की सरकारी गाड़ी पर चूड़ियां तक फेंक दीं। पुलिस को हालात काबू में करने के लिए कड़ी मशक्कत करनी पड़ी। घटना के बाद पुलिस प्रशासन ने अतिरिक्त बल तैनात कर दिया ताकि कोई अप्रिय स्थिति न बने। कांग्रेस पार्टी के नेताओं ने इस विरोध को भाजपा समर्थित साजिश बताया और कहा कि दिग्विजय सिंह केवल 'शांति और सौहार्द का संदेश' देने पहुंचे थे। वहीं, व्यापारियों

का कहना है कि वे बाहरी राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं चाहते और बाजार का मामला बाजार के लोग ही सुलझाएंगे। वहीं, इस घटना ने इंदौर की राजनीति में नया मोड़ ला दिया है। जहां कांग्रेस इसे संविधान और धर्मनिरपेक्षता से जोड़ रही है, वहीं विरोधी पक्ष इसे राजनीतिक लाभ उठाने का प्रयास बता रहा है। इसी मामले को लेकर दिग्विजय सिंह व्यापारियों से चर्चा करना चाहते थे, लेकिन पुलिस ने उन्हें रोक लिया और थाने ले गई। थाने में उन्होंने पुलिस अधिकारियों को एक शिकायती आवेदन सौंपते हुए इस पूरे प्रकरण को सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने की साजिश करार दिया और कार्रवाई की मांग की। उनका कहना था कि धर्म और जाति के आधार पर किसी भी तरह का भेदभाव न केवल संविधान के खिलाफ है बल्कि समाज के आपसी भाईचारे को भी तोड़ता है।

महाराष्ट्र के केरायगढ़ जिले और पुणे घाट क्षेत्र में बारिश के लिए रेड अलर्ट,अन्य आठ जिलों में ऑरेंज अलर्ट

एजेंसी

मुंबई। महाराष्ट्र के राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र ने बताया कि आगामी 24 घंटों के लिए रायगढ़ जिले और पुणे घाट क्षेत्र में रेड अलर्ट और अन्य आठ जिलों में ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। इनमें पालघर, ठाणे, मुंबई शहर, मुंबई उपनगर, रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग, नासिक और छत्रपति संभाजीनगर जिलों के साथ-साथ सातारा घाट और कोल्हापुर घाट क्षेत्र में शामिल हैं। इस सूचना से आपातकाल प्रबंधन विभाग ने प्रशासन को अलर्ट मोड पर रहने का निर्देश जारी किया है। आपातकाल प्रबंधन विभाग ने आज पत्रकारों को बताया कि सचेत एप के माध्यम से इन जिले के लोगों को अग्रिम चेतावनी दी जा रही है और केंद्रीय संगठन, भारत मौसम विज्ञान विभाग और राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र से लगातार संपर्क करके सभी जिलों में आगामी मौसम पूर्वानुमान की जानकारी प्रसारित की जा रही है। स्थानीय सूत्रों ने बताया कि सोलापुर जिले में, सीना नदी वडकबल में चेतावनी स्तर से ऊपर बह रही है। जबकि भीमा नदी टाकली में चेतावनी स्तर से ऊपर बह रही है। सीना नदी का जलस्तर बढने के कारण स्थानीय टीमों के साथ-साथ राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (एनडीआरएफ) की दो टीमों को तैनात किया गया है। आवश्यकतानुसार नागरिकों को निकालने के लिए एहतियाती कदम उठाए जा रहे हैं। प्रबंधन विभाग ने बताया कि अहिल्यानगर जिले के जामखेड तहसील में भारी बारिश हुई है और सुबह 9.30 बजे से खैरी बांध से 16,743 क्यूसेक पानी छोड़ा गया है। आवश्यकतानुसार नागरिकों को निकालने के लिए एहतियाती कदम उठाए जा रहे हैं। जामखेड तालुका में दर्दवाड़ी पुल के ऊपर से पानी बहने के कारण सुरक्षा उपाय के तौर पर जामखेड से खारदा तक यातायात बंद कर दिया गया है। धाराशिव जिले में, भारी बारिश के कारण परंदा और भूम में बाढ़ जैसे हालात बन गए हैं, इसलिए आवश्यकतानुसार लोगों को निकालने के लिए एहतियाती कदम उठाए जा रहे हैं। एहतियाती कदम के तौर पर, पुणे से एनडीआरएफ की दो टीमें भेजी गई हैं।

बीड जिले में, 20 हलकों में भारी बारिश (65 मिमी) दर्ज की गई है, इसलिए आवश्यकतानुसार लोगों को निकालने के लिए एहतियाती कदम उठाए जा रहे हैं। लातूर जिले में औसतन 75.3 मिमी बारिश दर्ज की गई है और अहमदपुर तहसील में बाढ़ की स्थिति पैदा हो गई है। चिल्खा बैराज पर चार लोगों को बचाने के लिए एक स्थानीय टीम की मदद से बचाव अभियान जारी है। एहतियात के तौर पर जिले में 60 सड़कें बंद कर दी गई हैं। साथ ही, राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल (एसडीआरएफ) की एक टीम नांदेड़ से लातूर, अहमदपुर भेजी जा रही है। पिछले 24 घंटों में राज्य में लातूर जिले में 75.3 मिमी, हिंगोली में 66.2 मिमी, परभणी में 54.9 मिमी, धाराशिव में 54.5 मिमी और गढ़चिरौली जिले में 53.5 मिमी बारिश दर्ज की गई है। साथ ही वर्धा जिले में बिजली गिरने से दो लोगों की मौत हो गई और नांदेड़ में आकाशीय बिजली से एक व्यक्ति की मौत हो गई है।

केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल की छवि धूमिल करने पर दो अधिकारी निलंबित

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा की राजधानी चंडीगढ़ में 25 सितंबर को भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रव्यापी स्वच्छता अभियान के दौरान पूर्व मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल के कार्यक्रम में कोताही के चलते यूटी प्रशासन ने दो अधिकारियों, कुलवीर और सुख प्रकाश शर्मा, को निलंबित कर दिया।बीती 25 सितंबर को स्वच्छता अभियान के दौरान केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल चंडीगढ़ के सेक्टर-22 की मार्केट में आयोजित कार्यक्रम में आए थे, जहां उन्होंने झाड़ू लगाकर सफाई की।

उसके बाद एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया, जिसमें दिखाई दे रहा था कि सफाई कर्मी प्रोग्राम से एक रात पहले सेक्टर-22 की मार्केट में गंदगी फैला रहे थे। अगले दिन सुबह मंत्री ने उसी गंदगी को साफ किया।चंडीगढ़ के किसी शख्स ने इसकी वीडियो अपने मोबाइल में बना ली और उसे सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया था।

जैसे ही सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल हुआ, उसके बाद यह मामला नगर निगम तक पहुंचा और निगम कमिश्नर अमित कुमार ने मामले में जांच के आदेश दिए। जांच में दो अधिकारी, कुलवीर और सुख प्रकाश शर्मा की भूमिका सामने आई, जिसके बाद कार्रवाई करते हुए दोनों को निलंबित कर दिया गया। जांच रिपोर्ट में कहा गया कि इससे न केवल केंद्रीय मंत्री की छवि खराब हुई है बल्कि चंडीगढ़ शहर की प्रतिष्ठा पर भी आंच आई है।

बरेली हिंसा : मौलाना तौकीर रजा समेत आठ लोग भेजे गए जेल, इंटरनेट बंद

एजेंसी

बरेली। उत्तर प्रदेश के बरेली में हुए बवाल के बाद पुलिस उपद्रवियों की धरपकड़ कर रही है। भड़काऊ भाषणों के आरोप में पुलिस ने मौलाना तौकीर रजा समेत आठ लोगों को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया। कोर्ट ने सभी को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। इलाके में पुलिस फोर्स तैनात करते हुए 48 घंटे के लिए इंटरनेट बंद कर दिया गया है। जिलाधिकारी अविनाश सिंह और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अनुराग आर्य ने प्रेसवार्ता में बताया कि जुमे की नमाज के बाद हुए बवाल को लेकर पुलिस की कार्रवाई जारी है। इस मामले में पुलिस ने मौलाना तौकीर रजा, सरफराज, मनीफुद्दीन, अजीम अहमद, मो. शरीफ, मो. आमिर, रेहान और मो. सरफराज को गिरफ्तार किया है। इसके अलावा 36 उपद्रवियों को हिरासत में लेकर पुलिस उनसे पूछताछ कर रही है। वीडियो फुटेज के आधार पर अन्य लोगों की भूमिका की भी जांच चल रही है। उन्होंने कहा कि मौलाना तौकीर का नाम वर्ष 2010 के दंगों में भी सामने आ चुका है और उसके खिलाफ कई

थानों में मुकदमे दर्ज हैं। बारादरी थाने में दो मामलों में 40 नामजद और 400 से अधिक अज्ञात आरोपितों का जिक्र है। पुलिस ने कहा कि इन मामलों में अब गुंडा एक्ट एवं गैंगस्टर एक्ट लगाने की भी तैयारी है। अदालत ने भी पहले मौलाना को भड़काऊ बयानों से बचने के निर्देश दिए थे। पिछले साल मार्च में भी जज रवि दिवाकर की कोर्ट ने उसे उपस्थिति के आदेश दिए थे। हालांकि आदेशों के बावजूद भड़काऊ बयान जारी होते रहे और हालिया घटनाक्रम के बाद अधिकारी प्रतिबद्ध हैं कि दबाव राजनीति को तवज्जो नहीं दी जाएगी। डीएम अविनाश सिंह ने स्पष्ट कहा कि शांति प्रिय नागरिकों की सुरक्षा और कानून-व्यवस्था सर्वोपरि है, जो लोग माहौल बिगाड़ने की कोशिश करेंगे, उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी। एसएसपी अनुराग आर्य ने कहा कि किसी भी हाल में शांति व्यवस्था को बाधित करने वाले लोगों को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। कानून ने अपना काम किया है।

नवी मुंबई में पेसो के संयुक्त मुख्य नियंत्रक सहित दो लोग रिश्वतखोरी में गिरफ्तार

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने नवी मुंबई में पेट्रोलियम एवं विस्फोटक सुरक्षा संगठन (पेसो) के संयुक्त मुख्य नियंत्रक राजेंद्र रावत और निजी व्यक्ति राहुल को रिश्वतखोरी के मामले में गिरफ्तार किया है। दोनों को विशेष सीबीआई न्यायालय, ठाणे ने पांच दिन की पुलिस हिरासत में भेज दिया। सीबीआई के मुताबिक, इस कार्रवाई में कुल लगभग 26 लाख रुपये की नकदी बरामद हुई, जिसमें नौ लाख रुपये रिश्वत की राशि, 7.5 लाख रुपये अज्ञात स्रोत की नकदी, आठ लाख रुपये एक एजेंट से और 1.5 लाख रुपये एक आर्किटेक्ट से मिले। तलाशी में आपत्तिजनक दस्तावेज और पेसो आवेदनों की सूचियां भी जब्त की गईं। एजेंसी को प्राप्त सूचना के आधार पर जाल बिछाया गया था। ऑपरेशन के दौरान एक निजी व्यक्ति को अधिकारी के घर पर पैकेज सौंपने के बाद पकड़ा गया, जिसने पूछताछ में स्वीकार किया कि उसने नौ लाख रुपये रिश्वत के रूप में अधिकारी की पत्नी को दिए।

तेलंगाना में बारिश से तबाही,राजधानी हैदराबाद में जनजीवन अस्त व्यस्त

एजेंसी

हैदराबाद। तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद और उसके आपपास के इलाकों में बारिश की वजह से चलते जगह-जगह जलभराव की स्थिति बन गयी है। हुई भारी बारिश ने जनजीवन अस्त-व्यस्त कर दिया। मूसलाधार बारिश के बाद शहर की जीवनरेखा मानी जाने वाली मूसी नदी खतरे के निशान से ऊपर बहने लगी है। राज्य सरकार की ओर से राहत और बचाव कार्य जारी है। तेज़ बारिश और मूसी नदी के उफान से हैदराबाद समेत तेलंगाना के कई हिस्सों में पानी घुस गया। अधिकारियों ने एहतियातन लगभग 1000 लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया और उन्हें राहत शिविरों में ठहराया। यहां प्रभावित परिवारों के लिए भोजन और जरूरी सामान की व्यवस्था की गई है। कई घर पानी में डूब गए हैं। शहर में भारी बारिश के कारण मूसी नदी ख़तरनाक स्तर पर बह रही है। हैदराबाद के दो जलाशय उस्मान सागर और हिमायत सागर के द्वार खुलने से नदी में पानी का प्रवाह बढ़ गया है। प्रभावित इलाकों की ओर यातायात रोक दिया गया है और अधिकारी निचले इलाकों से लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचा रहे हैं।

तेलंगाना राज्य सड़क परिवहन निगम का बस स्टैंड महात्मा गांधी बस

स्टेशन (एमजीबीएस) जलमग्न हो गया है। मूसी नदी पानी बस स्टैंड तक पहुंच गया है। मूसी नदी शहर के बीचों-बीच बह रही है। कल आधी रात के बाद से इसने विकराल रूप धारण कर लिया। एमजीबीएस से बस सेवा पूरी तरह ठप हो गई है। मूसी नदी के तेज़ बहाव के कारण पुराने शहर की कई बस्ती भी जलमग्न हो गयीं हैं। इसके कारण कई परिवार बाढ़ के पानी में फंस गए हैं। स्थानीय लोग बचाव अभियान का इंतज़ार कर रहे थे। पीड़ितों की जानकारी मिलने के बाद, अधिकारियों ने डीआरएफ टीमों के माध्यम से बचाव अभियान शुरू कर दिया है। बाढ़ में फंसे पीड़ितों को नावों के ज़रिए भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। पीड़ितों को बचाकर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है।

मुख्यमंत्री कार्यालय से जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया कि मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने बस स्टैंड में फंसे यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकालने के लिए पुलिस, हैदराबाद आपदा प्रबंधन एवं संपत्ति संरक्षण एजेंसी (हाइड्रा) और (नगरपालिका)जीएचएमसी अधिकारियों को सतर्क किया है। उन्होंने आधी रात को खुद स्थिति की समीक्षा की है। एक तरफ शहर में भारी बारिश हो रही थी, तो दूसरी तरफ दशहरा उत्सव में आने वाले श्रद्धालुओं और खरीदारों भीड़ के कारण शहर की सड़कों पर वाहनों की भीड़ उमड़ पड़ी। ऐसे में कई इलाकों में यातायात ठप हो गया। वाहन चालकों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। लगातार भारी बारिश के कारण साइबराबाद आईटी कॉरिडोर में अफरा-तफरी मच गई। लगभग 26 प्रमुख राजमार्गों पर बारिश का पानी जमा हो गया और सभी सड़कें जलमग्न हो गईं।

सदन में मान सरकार का बीजेपी के खिलाफ प्रदर्शन, केंद्र के राहत पैकेज को बताया जुमला

एजेंसी

चंडीगढ़। पंजाब को बाढ़ राहत के नाम पर केंद्र सरकार से मिला वादा एक बार फिर खोखला साबित हुआ है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बाढ़ प्रभावित पंजाब के लिए 1600 करोड़ के राहत पैकेज की घोषणा की थी, लेकिन यह वादा अभी तक अधूरा है। पंजाब विधानसभा के विशेष सत्र में एक ऐतिहासिक नजारा देखने को मिला, जहाँ मुख्यमंत्री भगवंत मान के नेतृत्व वाली AAP सरकार ने केंद्र की भाजपा सरकार को कड़ी चेतावनी दी। सरकार ने साफ किया कि पंजाब अब केवल वादों से संतुष्ट नहीं होगा, बल्कि उसे वास्तविक राहत चाहिए। वित्त मंत्री हरपाल सिंह चीमा ने केंद्र सरकार पर सीधा हमला करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री का पंजाब दौरा केवल फोटो खिंचवाने तक ही सीमित था। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री उस परिवार को सांत्वना तक नहीं दे पाए जिसने बाढ़ में अपने तीन सदस्यों को खो दिया। चीमा ने कांग्रेस पर भी निशाना साधा और आरोप लगाया कि संकट के समय कांग्रेस नेतृत्व ने पंजाब का साथ देने के बजाय भाजपा का ही समर्थन किया। जल संसाधन मंत्री ब्रिंदर कुमार गोयल ने भी विधानसभा में एक प्रस्ताव पेश करते हुए कहा, पंजाब ने 20,000 करोड़ की राहत मांगी थी, लेकिन केंद्र ने केवल 1,600 करोड़ का 'झुनझुना' थमा दिया। यह पंजाब के किसानों और बाढ़ पीड़ितों के साथ एक क्रूर मजाक है।÷उन्होंने बताया कि यह पैकेज प्रधानमंत्री ने 9 सितंबर को अपने दौरे के दौरान घोषित किया था, लेकिन अभी तक इसका कोई भी अंश जारी नहीं किया गया है। गोयल ने जोर देकर कहा कि केंद्र सरकार को पंजाब में हुई तबाही के असली पैमाने को समझना चाहिए और तुरंत कम से कम 20,000 करोड़ का विशेष पैकेज मंजूर करना चाहिए। साथ ही, यह भी मांग की गई कि प्रधानमंत्री द्वारा घोषित 1,600 करोड़ को तुरंत पंजाब आपदा राहत कोष में जारी किया जाए। 1600 करोड़ 'अपमान' और 'नाकाफी', राज्य के राजस्व मंत्री हरदीप सिंह मुंडियन ने इस वादे को 'पंजाब का अपमान' बताया। उन्होंने कहा कि मुख्य सचिव ने प्रधानमंत्री को नुकसान का विस्तृत ब्यौरा दिया था, जिसमें टूटी सड़कें, बर्बाद हुई फसलें (1.91 लाख हेक्टेयर), उजड़े घर और जमीनें शामिल थीं।

वैभव सूर्यवंशी ने तोड़ा बाबर का रिकॉर्ड, अब हसन रजा को चुनौती

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय अंडर-19 टीम के स्टार बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी ने यूथ क्रिकेट में फिर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। ऑस्ट्रेलिया दौरे पर खेले गए तीन मैचों की वनडे सीरीज में सूर्यवंशी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए टीम इंडिया को 3-0 की क्लीन स्वीप दिलाई। हालांकि तीसरे मैच में वह केवल 16 रन बनाकर आउट हुए, लेकिन इससे पहले के मैचों में उनके प्रदर्शन ने उन्हें रिकॉर्ड की किताबों में दर्ज करा दिया। वैभव ने कुल 556 रन बनाए हैं और इस दौरान पाकिस्तान के पूर्व कप्तान बाबर आजम का रिकॉर्ड तोड़कर दूसरे स्थान पर पहुंच गए हैं। अब उनकी नजरें पाकिस्तान के हसन रजा के 727 रन के रिकॉर्ड को तोड़ने पर टिकी हैं। यूथ वनडे में 16 या उससे कम उम्र में सर्वाधिक रन बनाने के मामले में सूर्यवंशी का नाम अब शीर्ष खिलाड़ियों की सूची में शुमार हो गया है।

सूर्यवंशी ने हाल ही में यूथ वनडे में सबसे अधिक छक्के लगाने का वर्ल्ड रिकॉर्ड भी अपने नाम किया। इससे पहले यह रिकॉर्ड भारत के उनमुक्त चंद के नाम था, जिन्होंने 38 छक्के लगाए थे। वैभव ने अब 43 छक्कों के साथ इस सूची में पहले पायदान पर कब्जा जमा लिया है। उनकी यह उपलब्धि भारतीय अंडर-19 टीम के लिए गर्व का क्षण है और युवा क्रिकेटरों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बन रही है। वैभव सूर्यवंशी ने अब तक 11 पारियों में 556 रन बनाए हैं, उनकी औसत 50.54 और स्ट्राइक रेट 151.91 रहा है। उनकी इस बेहतरीन फार्म को देखते हुए विशेषज्ञ मानते हैं कि उनका करियर यूथ क्रिकेट में कई रिकॉर्ड तोड़ने वाला साबित हो सकता है। उनके तकनीकी कौशल, आक्रामक खेल और दबाव में शांत रहना उन्हें अन्य खिलाड़ियों से अलग बनाता है।

अंडर-19 टीम के कोच और विशेषज्ञों का कहना है कि वैभव सूर्यवंशी का प्रदर्शन केवल रन बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि वह खेल के सभी पहलुओं में टीम के लिए अहम योगदान दे रहे हैं। उनका यह लगातार उत्कृष्ट खेल भारतीय क्रिकेट के भविष्य के लिए भी संकेत है। अब सभी की निगाहें 16 या उससे कम उम्र में सर्वाधिक रन के रिकॉर्ड पर टिकी हैं, जिसे हसन रजा ने 727 रन बनाकर अपने नाम किया था। अगर वैभव अपनी फॉर्म को ऐसे ही जारी रखते हैं, तो बहुत जल्द यह रिकॉर्ड भी उनके नाम हो सकता है। यूथ क्रिकेट में सूर्यवंशी की चमक से भारतीय क्रिकेट प्रेमियों में नई उम्मीदें जाग रही हैं।

विश्व तीरंदाजी पैरा चैंपियनशिप : आईईडी धमाके में पैर गंवाया, अब पैरा तीरंदाजी चैंपियन बने तोमन

नयी दिल्ली (एजेंसी)। दक्षिण कोरिया में आयोजित विश्व तीरंदाजी पैरा चैंपियनशिप के स्वर्ण पदक विजेता तोमन कुमार ने छत्तीसगढ़ में 2022 में एक नक्सल विरोधी अभियान के दौरान एक घातक द्धश्वष्ठ विस्फोट में अपना पैर गंवा दिया था लेकिन उन्होंने इसके बाद की चुनौतियों से पार पाते हुए सफलता की ओर कदम बढ़ाए।

CRPF (केंद्रीय आरक्षी पुलिस बल) के 30 वर्षीय कांस्टेबल ने अब तक अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय पैरा तीरंदाजी टूर्नामेंट में सात पदक जीते हैं। उन्होंने दक्षिण कोरिया के ग्वांगजू में आयोजित विश्व तीरंदाजी पैरा चैंपियनशिप में शनिवार को पुरुषों की कंपाउंड स्पर्धा का खिताब जीता।

तोमन CRPF की एक इकाई का हिस्सा थे जिसे देश के सबसे अधिक नक्सल हिंसा प्रभावित क्षेत्रों में से एक दक्षिण बस्तर क्षेत्र में नियुक्त किया गया था। फरवरी 2022 में CRPF और नक्सलियों के बीच भारी गोलीबारी के दौरान तोमन IED (इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस) विस्फोट में घायल हो गए।

CRPF के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि वह इसमें गंभीर रूप से घायल हो गए थे जिससे 12 फरवरी 2022 को उसका बायां पैर काटना पड़ा। उन्होंने कहा, 'तोमन कुमार 2017 में CRPF में शामिल हुए थे और जब वह मात्र 26 वर्ष के थे। लेकिन बस्तर में फरवरी में हुई इस मुठभेड़ में शरीर का एक अंग गंवाना पड़ा। लेकिन इसके बावजूद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।'

अधिकारी ने आगे बताया कि वह CRPF के एक विशेष सेंटर NCDE (राष्ट्रीय दिव्यांग सशक्तिकरण केंद्र) में शामिल हो गए जिसे 2020 में शारीरिक रूप से अक्षमता का सामना करने वाले जवानों के लिए खोला गया था। उन्होंने बताया कि तोमन ने नवंबर 2023 में पैरा तीरंदाजी का अभ्यास शुरू किया और एक साल बाद सितंबर 2024 में उन्हें सीआरपीएफ की केंद्रीय (मुख्य) टीम में शामिल किया गया। तोमन ने तीन राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के अलावा, ग्वांगजू सहित चार अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों में भाग लिया है।

हर्षवर्धन ने रच दिया इतिहास, बिहार क्रिकेट एसोसिएशन के सबसे युवा अध्यक्ष चुने गए

पटना (एजेंसी)। बिहार क्रिकेट एसोसिएशन (BCA) ने रविवार को अपने 2025 के पदाधिकारियों के चुनाव के नतीजों की घोषणा की, जिससे हर्षवर्धन का निर्विरोध अध्यक्ष चुना जाना तय हो गया। केवल 24 साल की उम्र में उन्होंने सबसे युवा BCA अध्यक्ष बनकर इतिहास रच दिया, जिससे BCA के नेतृत्व में एक पीढ़ीगत बदलाव आया और बिहार के शीर्ष क्रिकेट संगठन में नई ऊर्जा का संचार हुआ।

प्रिया कुमारी उपाध्यक्ष की भूमिका निभाएंगी, जबकि जियाउल आरेफिन सचिव होंगे। अभिषेक नंदन को कोषाध्यक्ष और रोहित कुमार संयुक्त सचिव के रूप में कार्य करेंगे। रविवार को घोषित परिणामों के साथ अन्य सभी पदाधिकारी भी निर्विरोध चुने गए। इसके अतिरिक्त राजेश कुमार को प्रबंध समिति (जिला प्रतिनिधि) का सदस्य और ज्ञानेश्वर गौतम को शासी परिषद का सदस्य नियुक्त किया गया।

चुनाव एम. मोदस्सिर (सेवानिवृत्त आईएएस) की देखरेख में हुए और उनकी घोषणा की गई जिन्होंने चुनाव अधिकारी के रूप में कार्य किया। बिहार क्रिकेट एसोसिएशन (BCA) ने एक बयान में कहा, 'बिहार क्रिकेट के सभी हितधारकों द्वारा दिखाए गए विश्वास और समर्थन से हम अभिभूत हैं। हमारी सामूहिक प्राथमिकता जमीनी स्तर पर क्रिकेट को मज़बूत करना, मजबूत बुनियादी ढांचा बनाना और राज्य भर में युवा व

महत्वाकांक्षी क्रिकेटरों के लिए अधिक अवसर पैदा करना होगा। हम सब मिलकर बिहार क्रिकेट को नई ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।'

इस बीच, बिहार क्रिकेट एसोसिएशन ने घोषणा की है कि पुरुष सीनियर और अंडर-23 टीमों के लिए चयन ट्रायल और तैयारी शिविर मंगलवार 30 सितंबर से पटना के मोइन-उल-हक स्टेडियम में शुरू होगा। खिलाड़ियों को 29 सितंबर को शाम 4:00 बजे तक स्टेडियम में रिपोर्ट करना होगा। BCA ने हाल ही में खिलाड़ियों की फिटनेस और चोट प्रबंधन पर एक फिजियोथेरेपी प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया था। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि बिहार के खिलाड़ी न केवल शारीरिक रूप से मज़बूत रहें, बल्कि चोट लगने की स्थिति में जल्दी मैदान पर वापसी भी कर सकें।

बीसीसीआई की जूनियर क्रिकेटरों पर सख्ती, आईपीएल में डेब्यू से पहले पास करनी होगी ये 'परीक्षा'

स्पोर्ट्स डेस्क। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (BCCI) ने युवा क्रिकेटरों के लिए नया नियम लागू कर सबको चौंका दिया है। अब कोई भी खिलाड़ी सीधे आईपीएल की चकाचौंध में छलांग नहीं लगा पाएगा। IPL में जगह बनाने से पहले उन्हें घरेलू क्रिकेट की 'परीक्षा' पास करनी होगी। यानी रणजी जैसे प्रथम श्रेणी मैच खेलना अब अनिवार्य कर दिया गया है। यह बदलाव न सिर्फ खिलाड़ियों को मजबूत बनाएगा बल्कि भारतीय क्रिकेट की जड़ों को भी और मज़बूत करेगा।

नियम में बदलाव:घरेलू अनुभव अनिवार्य

बीसीसीआई ने साफ़ कर दिया है कि अंडर-16 और अंडर-19 क्रिकेटर आईपीएल का हिस्सा तभी बन सकेंगे, जब वे कम से कम एक प्रथम श्रेणी मैच खेल चुके हों। पहले ऐसा कोई नियम नहीं था, और कई खिलाड़ी सीधे नीलामी या ट्रायल से आईपीएल में एंट्री ले लेते थे।

वैभव सूर्यवंशी का उदाहरण

इस बदलाव के महत्व को समझाने के लिए बीसीसीआई ने राजस्थान रॉयल्स के युवा बल्लेबाज़ वैभव

सूर्यवंशी का उदाहरण दिया। मात्र 13 साल 243 दिन की उम्र में 1.10 करोड़ रुपये में खरीदे गए वैभव ने डेब्यू से पहले ही बिहार के लिए रणजी ट्रॉफी में पारी खेली थी। यही वजह है कि वह आईपीएल में सबसे कम उम्र में शामिल होने के बावजूद तैयार नज़र आए। अब तक उन्होंने पाँच प्रथम श्रेणी मैचों में 100 रन बनाए हैं।

घरेलू क्रिकेट की अहमियत बढ़ी

बीसीसीआई का मानना है कि आईपीएल की ग्लैमर और प्रतिस्पर्धा का सामना करने से पहले घरेलू स्तर का अनुभव ज़रूरी है। इससे खिलाड़ियों का आत्मविश्वास बढ़ेगा और वे सीधे अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट की चुनौतियों के लिए भी बेहतर ढंग से तैयार होंगे।

ज्यादा घरेलू मैच, ज्यादा इनाम

नए नियम के साथ बीसीसीआई ने एक और बड़ा ऐलान किया है–जो खिलाड़ी सीज़न में ज्यादा घरेलू मैच खेलेंगे, उन्हें ज्यादा भुगतान मिलेगा। इसका मकसद है खिलाड़ियों को लगातार खेलते रहने के लिए प्रोत्साहित करना और घरेलू टूर्नामेंटों को गंभीरता से लेने की प्रेरणा देना।

नतीजा : भारतीय क्रिकेट को नई दिशा

यह कदम भारतीय क्रिकेट के भविष्य को सुरक्षित करने वाला माना जा रहा है। अब हर जूनियर खिलाड़ी के लिए आईपीएल तक का रास्ता घरेलू क्रिकेट से होकर गुज़रेगा। इसका सीधा असर रणजी और दूसरे टूर्नामेंटों की प्रतिस्पर्धा पर भी पड़ेगा, जिससे न केवल खिलाड़ियों बल्कि भारतीय क्रिकेट की जड़ों को भी मजबूती मिलेगी।

अब रणजी खेलने के बाद ही आईपीएल खेल सकेंगे युवा क्रिकेटर

मुम्बई। अब कोई भी क्रिकेटर सीधे इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) नहीं खेल पायेगा। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने एक नया नियम बनाय है जिसके तहत वही खिलाड़ी आईपीएल खेल सकता है जो रणजी ट्रॉफी खेला हुआ हो। बीसीसीआई का मानना है कि इस नये नियम से घरेलू क्रिकेट की उपेक्षा कोई क्रिकेटर नहीं कर पायेगा। बीसीसीआई ने ये भी स्पष्ट कर दिया है कि अंडर-16 और अंडर-19 क्रिकेटरों को भी आईपीएल खेलने से पहले जब वे कम से कम एक प्रथम श्रेणी मैच खेल खेलना होगा। वहीं अब तक ऐसे क्रिकेटर सीधे ही आईपीएल खेल लेते थे। बोर्ड के इस फैससे से घरेलू क्रिकेट का महत्व बढ़ेगा क्योंकि पिछले कुछ समय से देखने में आ रहा था कि क्रिकेटर घरेलू क्रिकेट में रुचि न लेते हुए मोटी रकम के लालच में सीधे आईपीएल खेलने का प्रयास कर रहे थे। वहीं बोर्ड का मानना है कि आईपीएल की ग्लैमर और प्रतिस्पर्धा का सामना करने से पहले घरेलू स्तर का अनुभव होना भीज़रूरी है। इससे खिलाड़ियों का आत्मविश्वास बढ़ेगा और वे अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट की चुनौतियों के लिए भी अच्छी तरह से होंगे। नए नियम के साथ बीसीसीआई ने घोषणा की है जो खिलाड़ी घरेल सत्र मे अधिक मैच खेलेंगे। उन्हें ज्यादा ईनाम मिलेगा।

रोहन जेटली बीसीसीआई इन्फ्रास्ट्रक्चर कमेटी के अध्यक्ष नियुक्त

मुंबई : दिल्ली एवं जिला क्रिकेट संघ (DDCA) के अध्यक्ष रोहन जेटली को भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) की इन्फ्रास्ट्रक्चर कमेटी का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। बोर्ड की रविवार को हुई 94वीं वार्षिक आम बैठक में यह फैसला किया गया। इस फैसले से डीडीसीए में हर्ष का माहौल व्याप्त हो गया है। उन्हें बधाई देते हुए कहा गया है कि यह प्रतिष्ठित नियुक्ति पूरे डीडीसीए परिवार के लिए गौरव का क्षण है। हम श्री जेटली को निरंतर सफलता के लिए शुभकामनाएँ देते हैं और उनके नेतृत्व में डीडीसीए को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने की आशा करते हैं।

नेपाल ने टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में वेस्टइंडीज को हराकर सबको हैरान किया

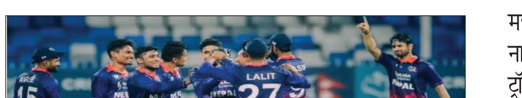

शारजाह। नेपाल क्रिकेट यहां खेले गये पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में विजेता को 19 रनों से हराकर सबको हैरान कर दिया। इस जीत से पता चलता है कि नेपाल क्रिकेट कितनी तेजी से आगे बढ़ रहा है। ये पहली बार है जब नेपाल की टीम ने किसी पूर्णकालिक सदस्य देश को हराया है। नेपाल की टीम ने इस जीत से दिखा दिया है कि उसके खिलाड़ी खेल को लेकर कितने गंभीर है और उनमे जुनून की कमी नहीं है। इस मैच मे पहले बल्लेबाजी करते हुए नेपाल की टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रहे और उसने शुरुआत में ही दो विकेट खो दिये पर इसके बाद कप्तान रोहित पौडेल ने 38 रन और कुशल मल्ला ने 30 रन बनाकर पारी को संभाला। वहीं इसके बाद गुलशन झा ने 22 और दीपेंद्र सिंह ऐरी ने 17 रन बनाये। इस प्रकार निर्धारित 20 ओवर्स में नेपाल ने 8 विकेट पर 148 रन बनाये। वेस्टइंडीज की ओर से जेसन होल्डर ने 4 विकेट लिए जबकि पहला मैच खेल रहे नवीन बिदाईसी ने भी 3 विकेट लिए। इसके बाद जीत के लिए मिले लक्ष्य का पीछा करते हुए वेस्टइंडीज की शुरुआत भी खराब रही। काइल मेयर्स केव 5 रन बनाकर पेवेलियन लौट गये। इसके बाद एकीम ऑगस्टे ने 15 जबकि आमिर जंगू ने 19 रन बनाये। कीसी कार्टी 16 और अंत में फैबियन एलन 19 व कप्तान अकील हुसैन 18 रन ही बना पाये। कैरिबियाई टीम 20 ओवर में 9 पर केवल 129 रन ही बना पायी। नेपाल की ओर से कुशल भुरतेल ने सबसे अधिक 2 विकेट जबकि रोहित पौडेल, ललित राजबंशी, करण केसी, दीपेंद्र ऐरी और नंदन यादव ने एक-एक विकेट लिया। इस जीत से जहां नेपाल टीम का मनोबल बढ़ा है , वहीं दो बार की विश्व विजेता रही वेस्टइंडीज के गिरते स्तर का अंदाजा होता है।

वेस्टइंडीज सीरीज में करुण नायर को जगह न मिलने पर कोच ने जताई नाराजगी

मुंबई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेटर करुण नायर को आगामी वेस्टइंडीज टेस्ट सीरीज के लिए 15 सदस्यीय टीम में जगह नहीं मिलने पर उनके बचपन के कोच विजय मद्यालकर ने अपनी नाराजगी व्यक्त की है। नायर ने इंग्लैंड के खिलाफ एंडरसन-तेंदुलकर ट्रॉफी में 8 पारियों में 205 रन बनाए थे, जिसमें सिर्फ एक अर्धशतक शामिल था, जिसके बावजूद उन्हें वेस्टइंडीज सीरीज से बाहर रखा गया। मद्यालकर ने कहा कि नायर आगामी सीरीज में अच्छा प्रदर्शन कर सकते थे और वह भारतीय परिस्थितियों के लिए पूरी तरह अनुकूल हैं। उन्होंने बताया, मुझे उसके लिए बहुत बुरा लगा। मुझे लगता है कि वह एक और मौके का हकदार था। इंग्लैंड जैसी कठिन परिस्थितियों में, जहाँ बल्लेबाजी आसान नहीं होती, उसने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया।

कोच ने आगे कहा कि चयनकर्ताओं का नजरिया अलग होता है और उनकी सोच का सम्मान करना पड़ता है। उन्होंने कहा, यह उनका फैसला है। वे अलग तरह से सोचते हैं। लेकिन

मैं व्यक्तिगत रूप से मानता हूं कि नायर ने इंग्लैंड में जो किया, वह पर्याप्त था। उन्होंने भारत में भी अच्छे रन बनाए थे और अब उन्हें घरेलू परिस्थितियों में मौका देना चाहिए था।

मद्यालकर का यह भी मानना है कि नायर की तकनीक और मानसिक मजबूती उन्हें भारतीय परिस्थितियों में विशेष रूप से प्रभावशाली बल्लेबाज बनाती है। भारत में विकेट और मौसम की परिस्थितियों के अनुसार नायर का खेल अधिक कारगर हो सकता है। इंग्लैंड में हालात हमेशा बल्लेबाजी के लिए आसान नहीं होते। ऐसे खिलाड़ी को मौका देने से टीम को फायदा ही होगा, उन्होंने कहा। 34 वर्षीय करुण नायर का नाम लंबे समय से भारतीय टेस्ट टीम में भरोसेमंद बल्लेबाज के रूप में लिया जाता रहा है। हालांकि इंग्लैंड में उनके स्कोर अपेक्षाकृत मध्यम रहे, फिर भी कोच मद्यालकर का मानना है कि उनकी तकनीक और अनुभव उन्हें घरेलू परिस्थितियों में बेहतर प्रदर्शन करने में सक्षम बनाते हैं।

इस निर्णय के बाद क्रिकेट प्रेमियों और विश्लेषकों के बीच भी चर्चा शुरू हो गई है कि क्या भारतीय परिस्थितियों में अनुभव और तकनीक रखने वाले खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय सीरीज में मौका दिया जाना चाहिए। करुण नायर की अगली चुनौती अब यह साबित करना होगी कि वह भारतीय परिस्थितियों में टीम के लिए महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

वेस्टइंडीज टेस्ट के लिए भारत की टीम: शुबमन गिल (कप्तान), यशस्वी जयसवाल, केएल राहुल, साई सुदर्शन, देवदत्त पडिक्कल, ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), रवींद्र जड़ेजा (उपकप्तान), वॉशिंगटन सुंदर, जसप्रित बुमरा, अक्षर पटेल, नितीश कुमार रेड्डी, नारायण जगदीसन (विकेटकीपर), मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा, कुलदीप यादव।

कोको गॉफ चीन ओपन के तीसरे दौर में पहुंची, लेला फर्नांडीज को हराया

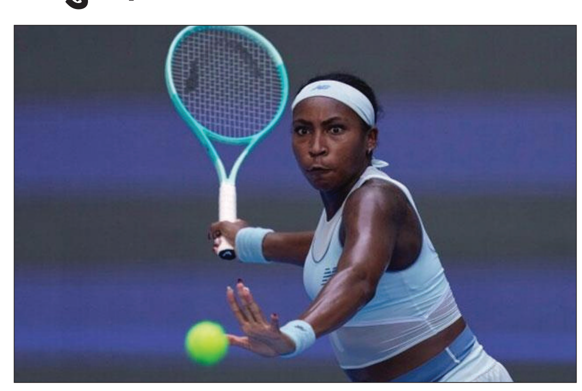

बीजिंग। फ्रेंच ओपन चैंपियन कोको गॉफ ने रविवार को यहां कड़े मुकाबले में लेला फर्नांडीज को तीन सेट में हराकर चीन ओपन टेनिस टूर्नामेंट के तीसरे दौर में प्रवेश किया। गत चैंपियन गॉफ ने दूसरा सेट गंवाने के बावजूद फर्नांडीज को 6-4, 4-6, 7-5 से शिकस्त दी। दूसरा सेट गंवाने के बाद गॉफ ने तीसरे और निर्णायक सेट के 12वें गेम में विरोधी खिलाड़ी की सर्विस तोड़कर जीत दर्ज की। गॉफ इस डब्ल्यूटीए 1000 सीरीज टूर्नामेंट के अगले दौर में 16वें नंबर की खिलाड़ी बेलिंडा बेनसिच और ऑस्ट्रेलिया की प्रिसकिला होन के बीच होने वाले मैच के विजेता से भिड़ेंगी। इससे पहले इवा लिस ने 10वें नंबर की खिलाड़ी एलेना रिबाकिना को 6-3, 1-6, 6-4 से हराया जबकि अमेरिका की मैकार्टनी केसलर ने बारबरा क्रेसिकोवा के 1-6, 7-5, 3-0 के स्कोर पर मुकाबले के बीच से हटने पर अगले दौर में जगह बनाई। महिला टूर्नामेंट के साथ चल रहे एटीपी 500 पुरुष टूर्नामेंट में लोरेंजो मुसेटी ने अनुभवी एड्रियन मनारिनो को दूसरे दौर के मुकाबले में 6-3, 6-3 से हराया। मुसेटी अगले दौर में लर्नर टिएन से भिड़ेंगे जिन्होंने फ्लावियो कोबोली को 6-3, 6-2 से हराया।

बंगलादेश ने अफगानिस्तान के खिलाफ टीम की घोषणा की, टी20 सीरीज से बाहर हुए कप्तान लिटन दास

ढाका। बंगलादेश के कप्तान लिटन दास एशिया कप के दौरान पेट की बाईं मांसपेशी में ग्रेड 1 खिंचाव के कारण अफगानिस्तान के खिलाफ आगामी टी20 सीरीज से बाहर हो गए हैं। दास की अनुपस्थिति में जैकर अली टीम की कप्तानी जारी रखेंगे। टीम के फिजियो बैजेदुल इस्लाम खान ने कहा, 'वह (दास) साइड स्ट्रेन के कारण एशिया कप के पिछले दो मैच नहीं खेल पाए थे। एमआरआई स्कैन से पेट की बाईं मांसपेशी में ग्रेड 1 खिंचाव का पता चला है। वह रिकवरी कर रहे हैं और टी20 सीरीज के लिए उपलब्ध नहीं होंगे। मेडिकल टीम उनके पुनर्वास का प्रबंधन और उनकी प्रगति पर नजर रखेगी।' यह 32 वर्षीय बल्लेबाज एशिया कप खेलने वाली बंगलादेशी टीम में शामिल एकमात्र खिलाड़ी हैं। शारजाह में खेली जाने वाली तीन मैचों की यह श्रृंखला 2 अक्टूबर से शुरू होगी।

बंगलादेशी टीम – जैकर अली (कप्तान), तंजीद हसन, परवेज हुसैन इमोन, सैफ हसन, तौहीद हृदॉय, शमीम हुसैन, नूरुल हसन, रिशाद हुसैन, महेदी हसन, नसुम अहमद, तस्कीन अहमद, तनजीम हसन साकिब, मुस्तफिजुर रहमान, शरीफुल इस्लाम, मोहम्मद सैफुद्दीन, सौम्या सरकार

फीफा इंटरकॉन्टिनेंटल कप 2025 के अंतिम चरण की मेजबानी करेगा कतर

दोहा। कतर फीफा इंटरकॉन्टिनेंटल कप 2025 के अंतिम तीन मैचों की मेजबानी करेगा। यह टूर्नामेंट सभी छह महाद्वीपों के क्लब चैंपियनों को वैश्विक मंच पर प्रतिस्पर्धा करने का मौका देता है। फाइनल 17 दिसंबर को होगा, जिसमें पेरिस सेंट-जर्मेन अपने प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ उतरेंगे। तीसरा मैच, जिसे 'फीफा डर्बी ऑफ द अमेरिकास' कहा गया है, 10 दिसंबर को खेला जाएगा। इसमें मैक्सिकन क्लब क्रूज अजुल, जो कॉनकाकाफ चैंपियंस कप 2025 के विजेता हैं, और कॉनमेबोल लिबर्टाडोरेस 2025 के विजेता का मुकाबला होगा। डर्बी विजेता टीम 13 दिसंबर को मिस्र की पिरामिड्स के खिलाफ फीफा चैलेंजर कप में उतरेगी। पिरामिड्स ने 23 सितंबर को जेद्दा में फीफा अफ़्रीकी-एशियाई-प्रशांत कप जीतकर अपनी जगह पक्की की थी। प्रतियोगिता का समापन 17 दिसंबर को पांचवें मैच के साथ होगा, जिसमें चैलेंजर कप विजेता टीम पेरिस सेंट-जर्मेन से भिड़ेगी। कतर इस साल फीफा अंडर-17 विश्व कप और फीफा अरब कप का भी आयोजन कर रहा है, जिसमें फीफा विश्व कप 2022 के लिए बनाए गए स्टेडियम और सुविधाओं का उपयोग किया जाएगा। तीसरा और चौथा मैच अहमद बिन अली स्टेडियम में होंगे, जबकि फाइनल स्थल की घोषणा बाद में की जाएगी। पिछले साल, रियल मैड्रिड ने नए टूर्नामेंट प्रारूप में लुसैल स्टेडियम में पचुका को हराकर शानदार जीत दर्ज की थी, जिसमें लगभग 70,000 दर्शक मौजूद थे। कतर की लगातार मेजबानी, विश्वस्तरीय फुटबॉल आयोजनों के लिए इसकी स्थायित्व और तैयारियों को उजागर करती है। इस साल का इंटरकॉन्टिनेंटल कप क्लब फुटबॉल प्रेमियों के लिए रोमांच और प्रतिस्पर्धा से भरपूर अनुभव साबित होगा।

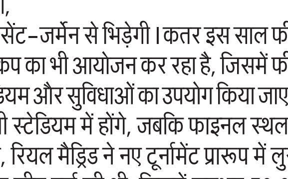

बुल्गारियाई पैरा खिलाड़ी ने रचा इतिहास, विश्व रिकॉर्ड तोड़कर जीता लगातार छठा स्वर्ण

स्पोर्ट्स डेस्क। खेलों की दुनिया में कुछ नाम सिर्फ जीतने के लिए नहीं, बल्कि इतिहास बदलने के लिए जाने जाते हैं। बुल्गारिया के पैरा शॉटपुट स्टार रुज़्दी ने ऐसा ही कमाल कर दिखाया। दुबई में हो रही विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप में उन्होंने न केवल लगातार छठा स्वर्ण पदक जीता, बल्कि अपने ही बनाए विश्व रिकॉर्ड को ध्वस्त कर नई ऊँचाई छू ली। उनका यह कारनामा खेल प्रेमियों के लिए प्रेरणा से कम नहीं।

छठा स्वर्ण और नया विश्व रिकॉर्ड

34 वर्षीय रुज़्दी रविवार को पुरुषों की शॉटपुट स्न55 स्पर्धा में उतरे तो सबकी निगाहें उन पर थीं। आखिरी और छठे प्रयास में उन्होंने 12.94 मीटर की शानदार थ्रो लगाई। यह दूरी उनके ही 2023 पेरिस विश्व चैंपियनशिप में बनाए 12.68 मीटर के रिकॉर्ड से कहीं आगे थी। इस उपलब्धि के साथ उन्होंने पैरा शॉटपुट में अपना दबदबा और मज़बूत कर दिया।

पदक तालिका

स्वर्ण: रुज़्दी (बुल्गारिया) - 12.94 मीटर

रजत: नेबोजसा ड्यूरिक (सर्बिया) - 12.52 मीटर

कांस्य: लेक स्टोल्टमैन (पोलैंड) - 12.02 मीटर

ड्यूरिक और स्टोल्टमैन ने भले ही व्यक्तिगत श्रेष्ठ प्रदर्शन किया हो, लेकिन रुज़्दी का जलवा उनके ऊपर भारी पड़ा।

एक ही दिन टूटे तीन रिकॉर्ड

दूसरे दिन सुबह के सत्र में रुज़्दी के अलावा भी तीन नए विश्व रिकॉर्ड बने।

मलेशिया के अब्दुल लतीफ रोमली ने पुरुषों की लंबी कूद ञ्20 में 7.67 मीटर की छलांग लगाकर स्वर्ण पदक जीता और अपनी हैट्रिक पूरी की।

यूक्रेन के वोलोडिमिर पोनोमारेंको ने शॉटपुट ञ्12 में 17.39 मीटर फेंककर नया रिकॉर्ड बनाया।

अल्जीरिया की नसीमा सैफी ने महिलाओं की डिस्कस थ्रो स्न57 स्पर्धा में 34.54 मीटर का थ्रो लगाकर लगातार छठा स्वर्ण अपने नाम किया।

रुज़्दी की संघर्ष गाथा

रुज़्दी की सफलता सिर्फ खेल की उपलब्धि नहीं, बल्कि इंसानी जज़्बे की कहानी है। एक कार दुर्घटना में उनके कमर से नीचे का

हिस्सा लकवाग्रस्त हो गया था। लेकिन उन्होंने हार मानने के बजाय खेल को अपनी नई पहचान बना लिया। 2015 दोहा से शुरू हुई उनकी स्वर्ण यात्रा अब तक हर संस्करण में जारी है। यह तीसरी बार है जब उन्होंने विश्व रिकॉर्ड के साथ स्वर्ण पदक अपने नाम किया।

विक्रांत मैसी ने श्रीश्री रविशंकर की फिल्म पर दिया अपडेट

71वें नेशनल फिल्म अवॉर्ड में बेस्ट एक्टर का अवॉर्ड पाने के बाद विक्रांत मैसी चर्चा में हैं। इस उपलब्धि से वह काफी खुश हैं। लेकिन असल में उनके लिए सफलता के मायने बिल्कुल अलग हैं। श्रीश्री रविशंकर के रोल को निभाने के बाद वह कैसा फील कर रहे हैं, इस बात का भी जिक्र विक्रांत मैसी ने किया है।

विक्रांत के लिए बदल गए सफलता के मायने दिल्ली में एएनआई से बातचीत करते हुए विक्रांत कहते हैं, '20 साल पहले जब मैंने शुरुआत की थी तो सफलता की परिभाषा अलग थी। आज मेरे लिए इसका मतलब है वो जिंदगी जीना जिसका मैंने हमेशा सपना देखा था। इसका मतलब यह नहीं कि अवॉर्ड जीत जाऊं या मशहूर हो जाऊं। बस वो जिंदगी जीनी है जो हमेशा से जीना चाहता था। परिवार साथ हो और चैन की नींद सो सकूं। अपने बच्चे की परवरिश कर पाऊं। दुनिया घूमने जाऊं। अपनी छोटी-छोटी ख्वाहिशों को पूरा कर कर सकूं। यही सफलता है।'

श्रीश्री रविशंकर की बायोपिक को लेकर क्या कहा

श्रीश्री रविशंकर की बायोपिक में काम करने के अपने एक्सपीरियंस को भी विक्रांत शेयर करते हैं। वह कहते हैं, 'यह एक बहुत ही खास फिल्म है। मैं गुरुदेव श्रीश्री रविशंकर जी का रोल निभा रहा हूं। यह फिल्म पूरी तरह से दक्षिण अमेरिका के कोलंबिया में सेट है और 52 वर्षों तक चले गृहयुद्ध पर बेस्ड है। यह फिल्म दिखाती है कि कैसे गुरुदेव रविशंकर जी ने अहिंसा और क्षमा के भारतीय मूल्यों के माध्यम से वहां शांति की शुरुआत की। इस फिल्म का मकसद लोगों को सशक्त बनाना और गुरुदेव के योगदान पर चर्चा करना है। इस रोल को लेकर बहुत दबाव में हूं। अभी तक निर्माता और निर्देशक की ओर से कोई शिकायत नहीं आई है। अभी तक सब कुछ अच्छा चल रहा है।'

क्या वह अपना टॉक शो लॉन्च कर रही हैं कावेरी कपूर?

कावेरी कपूर ने अपने एक सोशल मीडिया पोस्ट से अपने फॉलोअर्स को अटकलों के भंवर में डाल दिया है। इस दिलचस्प पोस्ट में वह एक आकर्षक, गुलाबी स्टूडियो जैसे सेटअप में बैठी दिख रही हैं, जहाँ पीछे वर्बल वॉमिट नाम की एक नीयॉन लाइट जल रही है। पोस्ट के कैप्शन में उन्होंने बस लिखा, कमिंग सुन... कैप्शन दिया, जिसने उनके अगले करियर स्टेप को लेकर सवालों की झड़ी लगा दी है। यह सेटअप किसी साधारण सोशल मीडिया कंटेंट से कहीं ज़्यादा प्रोफेशनल दिखता है, जिससे अंदाज़ा लगाया जा रहा है कि यह या तो एक टॉक शो होगा या फिर एक पॉडकास्ट सीरीज़। विभिन्न विषयों पर बेबाकी से बोलने की उनकी क्षमता और उनके स्वाभाविक आकर्षण से यह संकेत देते हैं कि इस प्रोजेक्ट का जो भी फ़ॉर्मेट हो, वह आज की युवा पीढ़ी से निश्चित रूप से जुड़ाव बना पाएगा, जो आज की क्यूरेटेड दुनिया में असलियत की तलाश कर रही है।
कावेरी ने खुद को इंडस्ट्री की सिर्फ एक और उभरती हस्ती से कहीं बढ़कर साबित किया है। वह एक ऐसी आवाज़ बन चुकी हैं, जिसे लोग सुनना चाहते हैं। जब वो सामने बैठ कर सवाल पूछेंगी और गहरी बातचीत का मंच देंगी, तो वर्बल वॉमिट एक ऐसा प्लेटफ़ॉर्म बन सकता है जहाँ से ईमानदार और विचारोत्तेजक संवाद शुरू होंगे। चाहे वो किसी हाई-प्रोफ़ाइल मेहमान से तीखे सवाल करें या ट्रेंडिंग टॉपिक्स पर अपनी बेबाक राय साझा करें—एक बात तो तय है- यह ल्ददृ्‌ स्टार हमें वह अनफ़िल्टर्ड कॉन्टेंट देने वाली है, जिसकी हमें ज़रूरत थी, लेकिन शायद हमें इसका अंदाज़ा भी नहीं था।
जहाँ उनका अगला प्रोजेक्ट सुर्खियाँ बटोर रहा है, वहीं कावेरी इन दिनों शेखर कपूर की मासूम 2 में व्यस्त हैं और साथ ही उनका अगला सिंगल, जिसे नॉटी बॉय ने प्रोड्यूस किया है, रिलीज़ के लिए तैयार है। कावेरी की छवि एक ऐसी युवा आवाज़ बन चुकी है जो बेबाक और बिना फ़िल्टर के अपनी बात रखती है। ऐसे में वर्बल वॉमिट उनके लिए एक परफ़ेक्ट प्लेटफ़ॉर्म हो सकता है, जहाँ वे अपनी पीढ़ी के अहम मुद्दों पर गहराई से बात कर सकें। चाहे यह एक स्टाइलिश टॉक शो के रूप में सामने आए या फिर एक निजी और ईमानदार पॉडकास्ट के रूप में, यह प्रोजेक्ट उन बेबाक और सच्ची बातचीतों का वादा करता है जो आज के समय में सावधानीपूर्वक तैयार किए गए मीडिया परिदृश्य में दुर्लभ होती जा रही है।

दिलजीत के एमी नॉमिनेशन पर डायरेक्टर इम्तियाज ने की पोस्ट

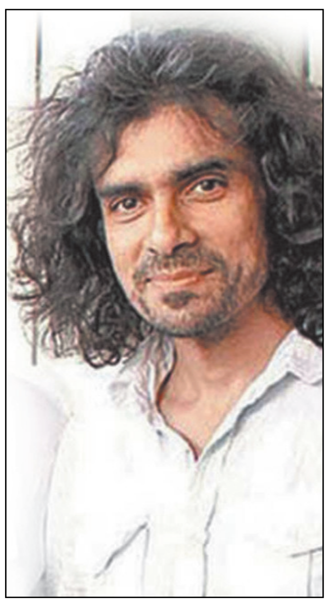

फिल्म 'अमर सिंह चमकीला' और एक्टर-सिंगर दिलजीत दोसांझ का नॉमिनेशन इंटरनेशनल एमी अवॉर्ड्स की अलग-अलग कैटेगरी में हुआ है। इस खबर को सुनकर दिलजीत के बाद डायरेक्टर इम्तियाज अली और अभिनेत्री परिणीति चोपड़ा ने भी सोशल मीडिया पर पोस्ट साझा की है। दिलजीत दोसांझ की करियर में एक बड़ी उपलब्धि जुड़ गई है। इंटरनेशनल एमी अवॉर्ड्स की बेस्ट एक्टर कैटेगिरी में फिल्म 'अमर सिंह चमकीला' के लिए उनका नॉमिनेशन हुआ है। दिलजीत की खुशी में फिल्म 'अमर सिंह चमकीला' के इम्तियाज अली और एक्ट्रेस परिणीति चोपड़ा भी शामिल हुए। दोनों ने दिलजीत के नॉमिनेशन की बात को अपने सोशल मीडिया पेज पर साझा किया है। सिंगर, एक्टर दिलजीत दोसांझ ने फिल्म 'अमर सिंह चमकीला' में लीड रोल किया था, फिल्म के निर्देशक इम्तियाज अली हैं। इम्तियाज ने दिलजीत के इंटरेशनल एमी नॉमिनेशल वाले पोस्टर को अपने इंस्टाग्राम के स्टोरी सेक्शन में पोस्ट किया है। बताते चलें कि फिल्म 'अमर सिंह चमकीला' के लिए दिलजीत दोसांझा का नॉमिनेशन इंटरनेशनल एमी अवॉर्ड्स की बेस्ट एक्टर कैटेगरी में हुआ है। वहीं इस फिल्म को टीवी फिल्म/मिनी सीरीज कैटेगरी में भी जगह मिली है।

साई पल्लवी को मिलेगा कलैमामणि अवॉर्ड

तमिलनाडु सरकार ने कला और संस्कृति में योगदान देने के लिए भरतियार, एमएस सुब्बुलक्ष्मी और कलैमामणि पुरस्कारों की घोषणा की। ये अवॉर्ड साल 2021, 2022 और 2023 के लिए कलाकारों को दिए जाएंगे। इसमें सिंगर केजे येसुदास को संगीत में उनके योगदान के लिए एमएस सुब्बुलक्ष्मी पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। वहीं अभिनेत्री साई पल्लवी ने कलैमामणि पुरस्कार अपने नाम किया।

साई पल्लवी और एसजे सूर्या को मिला कलैमामणि पुरस्कार

साल 2021 के लिए अभिनेत्री साई पल्लवी, अभिनेता एसजे सूर्या, निर्देशक लिंगुसामी, सेट डिजाइनर एम जयकुमार और स्टंट कोरियोग्राफर सुपर सुब्बारायण को कलैमामणि पुरस्कार दिए जाने की घोषणा की गई। वहीं टेलीविजन अभिनेता पीके कमलेश को भी यह प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

संगीतकार अनिरुद्ध को भी मिलेगा कलैमामणि

जबकि साल 2023 के लिए अभिनेता मणिकंदन, जॉर्ज मेरीन, संगीतकार अनिरुद्ध रविचंदर, गायिका श्वेता मोहन, कोरियोग्राफर सैंडी उर्फ संतोषकुमार, जनसंपर्क अधिकारी और निक्किल मुरुकन को कलैमामणि पुरस्कार दिए जाने की घोषणा की गई है। इसी क्रम में टेलीविजन अभिनेता एनपी उमाशंकर बाबू और अजगन तमिजमनी को भी कलैमामणि पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

अक्तूबर में दिए जाएंगे अवॉर्ड

ये पुरस्कार तमिलनाडु सरकार के कला एवं संस्कृति निदेशालय की संस्था तमिलनाडु इयाल इसाई नाटक मंद्रम द्वारा प्रदान किए जाते हैं। आज इन पुरस्कारों की घोषणा हुई है। ये पुरस्कार अक्तूबर में मुख्यमंत्री एमके स्टालिन द्वारा प्रदान किए जाएंगे। सरकार ने एक बयान में बताया कि प्रत्येक विजेता कलाकार को तीन स्वर्ण पदक और एक प्रमाण पत्र दिया जाएगा।

हर जगह होती है राजनीति, इसके लिए आपको खुद को तैयार करना होगा

अमृता राव हाल ही में अक्षय कुमार-अरशद वारसी की फिल्म 'जॉली एलएलबी 3' में नजर आईं हैं। अमृता ने साल 2003 में शाहिद कपूर के साथ फिल्म 'इश्क विश्क' से अपने करियर की शुरुआत की थी। यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर हिट रही थी और अमृता रातोंरात स्टार बन गई थीं। हालांकि, अब अमृता ने बताया कि पहली फिल्म हिट होने के बाद वो इंडस्ट्री की पॉलिटिक्स का शिकार हुईं। एक्ट्रेस ने अपने साथ हुए पुराने घटनाक्रमों को याद किया।
बातचीत के दौरान एक्ट्रेस ने बताया, 'मुझे याद है जब इश्क विश्क रिलीज हुई थी, तब शाहिद और मैंने फेस ऑफ द ईयर, सुपरस्टार ऑफ टुमॉरो या ऐसा ही कोई अवॉर्ड जीता था। उस मैगजीन के कवर पेज के लिए एक फोटोशूट होना था। मैं अवॉर्ड के साथ बैठी थी। शाहिद मेरे पीछे अवॉर्ड के साथ खड़े थे। दोनों तरफ दो सुपरस्टार अभिनेत्रियां बैठी थीं। एक और बहुत ही मशहूर अभिनेता और एक अभिनेत्री थीं, जो बहुत ही मशहूर थीं। कवर पेज का लेआउट कुछ ऐसा ही था। हम बहुत खुश और रोमांचित थे। मैं सोच रही थी, मेरा पहला कवर यहां आने वाला है। लेकिन जब मैंने कवर देखा तो सब कुछ फोटोशॉप किया हुआ था। मुझे बैकग्राउंड में ले जाया गया था और कोई अन्य फोरग्राउंड में था।'
एक्ट्रेस ने आगे कहा कि यह कवर देखकर मैं हैरान थी। क्योंकि कवर बिल्कुल भी ऐसा नहीं दिखना चाहिए था। ऐसी चीजें पहले भी हो चुकी हैं। इसके अलावा भी बहुत सी ऐसी चीजें होंगी, जिनके बारे में मुझे पता भी नहीं होगा। अमृता ने कहा कि पहले मुझे बहुत बुरा लगता था। मैं पूछती थी कि मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है। लेकिन अब मैं कह सकती हूं कि राजनीति हर जगह है। स्कूलों में, कॉलेजों में, यहां तक कि आपकी सोसाइटी की बैठकों में भी। इसलिए आपको खुद को राजनीति से निपटने के लिए तैयार करना होगा। बाहर की दुनिया हमेशा आपको नीचे गिराने की कोशिश करती रहती है।

पतले होने पर उड़ाया गया मजाक

इस दौरान अभिनेत्री ने एक और किस्से को याद करते हुए बताया कि जब मैंने इंडस्ट्री में कदम रखा था, तो मुझे बहुत पतली होने के लिए डांटा जाता था। अमृता ने अपनी मौसी की सलाह याद की कि जब वह पतली थीं तो उनका मजाक उड़ाया जाता था, लेकिन जब उनका वजन बढ़ा, तो उसके लिए भी उनका मजाक उड़ाया गया। जब उनका वजन आदर्श था, तब किसी ने उनकी तारीफ नहीं की।

हिम्मत का मतलब निडरता नहीं...

जब भारत में मी टू आंदोलन शुरू हुआ था तब मैं उन चुनिंदा कलाकारों में थी जिन्होंने हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में इस मुद्दे पर खुलकर बात की। उस समय मैं एक टीवी शो की जज थी और 18 एपिसोड शूट कर चुकी थी। जैसे ही मैंने आवाज उठाई मुझे बहिष्कृत कर दिया गया। उस शो से मेरी जगह चली गई। मुझे कई साल कोई बड़ा काम नहीं मिला, लेकिन यह सब करना जरूरी था। मेरी आवाज ने उस चर्चा को जन्म दिया, जो लंबे समय से जरूरी थी। इसके बाद महिलाओं के लिए काम करने की जगहें अधिक सुरक्षित और बेहतर बनीं। मेरी मेहनत और संघर्ष का महत्व साफ हो गया।

मेरी आवाज ने बदलाव की शुरुआत की

अपने कॉलेज के दिनों का एक अनुभव साझा करूंगी। मैं एक बस में सफर कर रही थी। उसी बस में एक आदिवासी जोड़ा भी सफर कर रहा था। कंडक्टर ने उन्हें धोखा देकर ज्यादा किराया वसूलने की कोशिश की। मैंने बीच में दखल दिया तो उसने मुझे धमकाया कि बीच हाईवे पर ही उतार देगा। उस समय मैंने हिम्मत जुटाकर उसे बेवकूफ बनाया कि मैं एक पत्रकार हूं और बड़े लोगों से मेरा संपर्क है। आखिरकार मामला सुलझ गया। उस दिन मुझे यह समझ आया कि हिम्मत का मतलब निडर होना नहीं, बल्कि सही समय पर सही बात के लिए खड़ा होना है। खासतौर पर तब, जब किसी और की इज्जत दांव पर लगी हो।

साहस रोजाना की मेहनत में है

साहस का मतलब है हर दिन अपनी सच्चाई के साथ खड़ा रहना, चाहे वह मुश्किल या असुविधाजनक ही क्यों न हो। हर दिन खुद को दिखाना, मेहनत करना और डटे रहना..यही मेरी प्रेरणा है। मुझे खुशी है कि मेरा काम, मेरे कई गाने और प्रदर्शन समाज में विचारों को जागृत करने का जरिया बने। मुझे क्या बेचेगा रुपैया ने महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए सशक्तिकरण का संदेश दिया। रंगाबती ने ओडिशा की लोककला को वैश्विक मंच पर पहुंचाया। बेखौफ ने महिलाओं को अपनी आजादी और जगह फिर से हासिल करने के लिए प्रेरित किया। मेरे लाइव शो ने यह दिखाया कि संगीत, नृत्य और कहानी के माध्यम से समाज में संवाद और बदलाव संभव है। मेरे लिए सच्ची खुशी केवल गायिका बनने में नहीं, बल्कि एक कलाकार बनने में है, जिसकी कला समाज के विचारों को चुनौती देती है और समय की झलक दिखाती है। मैंने तीन ओरिजिनल लाइव फॉर्मेट्स बनाए हैं - लाल परी मस्तानी, और सोना तराशा। मैंने ये तय किया कि बॉलीवुड पर निर्भर न रहकर अपनी अलग इंडिपेंडेंट राह बनाऊं। मैंने देखा है कि संगीत, डांस और कहानी कहने का तरीका सोच बदल सकता है और नए संवाद खोल सकता है। भारत में औरतों को हमेशा सिर्फ खूबसूरत परफॉर्मर के रूप में देखा गया है, कभी प्रोड्यूसर की कुर्सी पर नहीं। मैं अपने इन शोज के जरिए ये कर रही हूं और दूसरों के लिए भी नए मौके बना रही हूं।

अपनी आवाज पर भरोसा रखें

अंत में महिलाओं को बस यही संदेश देना चाहूंगी कि सही समय का इंतजार मत करें। आपकी आवाज आज भी महत्वपूर्ण है। हां, प्रतिरोध आएगा और हां, आपको कुछ खोना पड़ सकता है, लेकिन चुप रहना लंबे समय में कहीं ज्यादा महंगा है। अपने भीतर की आवाज पर भरोसा रखें और लगातार प्रयास करते रहें। हर बार जब आप खड़े होते हैं, आप दूसरों के लिए रास्ता आसान बनाते हैं। यही असली बदलाव है।

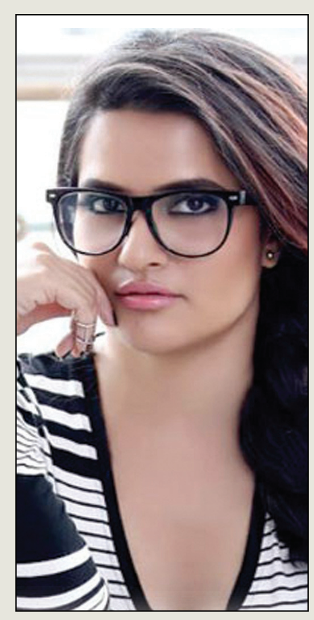

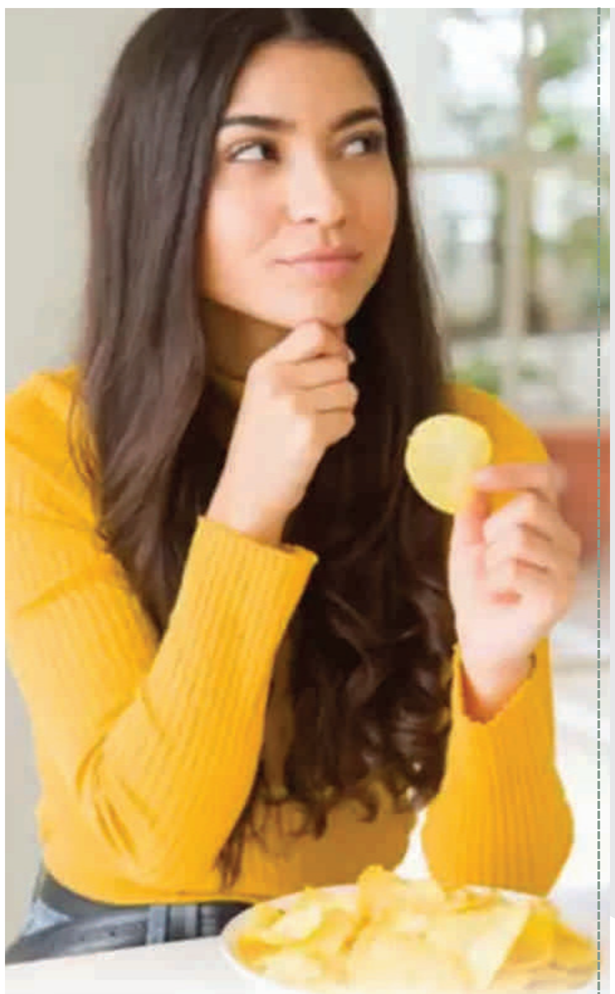

नवरात्र में व्रत रखने के साथ-साथ सेहत का ध्यान रखना भी जरूरी

नवरात्र में नौ दिन के व्रत में सामान्यतः फलाहार लिया जाता है। कुछ लोग केवल एक वक्त खाते हैं और कुछ फलाहार के चलते सामान्य दिनों के मुकाबले अधिक असंतुलित आहार लेने लगते हैं। इससे शरीर को पोषण तो नहीं मिलता, लेकिन कैलोरी, वसा और शर्करा की मात्रा ज़रूर बढ़ जाती है। इसी तरह लंबे अंतराल के बाद जब कुछ खाते हैं तो

कि किन खाद्यों के सेवन से आप अपने व्रत को स्वास्थ्य की दृष्टि से भी सार्थक बना सकते हैं...

पर्याप्त तरल पदार्थ

व्रत के दौरान शरीर को हाइड्रेटेड रखना भी ज़रूरी है। पर्याप्त मात्रा में पानी तो पीना ही है, साथ में अन्य तरल पदार्थ जैसे नींबू का जूस या शिकंजी और नारियल पानी भी पिएं। फलों का रस ले सकते हैं लेकिन छाने बिना यानी कि जिसमें फल के रेशे भी हों। फलों के रस के साथ-साथ फाइबर भी मिलेगा जो कि भोजन को पचाने के लिए बहुत ज़रूरी है। तरल पदार्थ से शरीर को ज़रूरी विटामिन और खनिज मिलेंगे। फाइबर युक्त भोजन लेने की दूसरी वजह यह भी है कि व्रत के दरमियान कम भोजन ग्रहण करने से कब्ज़ की समस्या हो सकती है। इसलिए

लोग ले सकते हैं जिन्हें फल खाना पसंद नहीं या चबा नहीं सकते। यह भी ध्यान रखें कि जूस घर का बना ही पीना है।

खानपान की सलाह

कम होती है और पोषक तत्वों की मात्रा अधिक होती है। इसी तरह कम वसा युक्त दही, लस्सी और छाछ ले सकते हैं। तेल की बहुत कम मात्रा में भुनी हुई मूंगफली, कुट्टू के आटे की रोटियां ले सकते हैं। कम तेल या घी में बने हुए फलाहारी आलू, साबूदाना खिचड़ी या टिक्की ले सकते हैं। तेल में तली हुई टिक्कियां खाने से बचें। आलू के बजाय लौकी की सब्ज़ी और हलवा (कम घी में) ले सकते हैं। सबसे ज़रूरी बात, व्रत के दौरान घर का बना शुद्ध भोजन ही खाएं।

फल-सब्जियां लें

व्रत में फल और सब्ज़ियों के सलाद का सेवन कर सकते हैं। एक या

पर्याप्त मात्रा में ले सकते हैं। गैर मौसमी फल, जैसे तरबूज़, खरबूज़, संतरे आदि का सेवन बिल्कुल न करें। वहीं सब्ज़ियों में खीरा, टमाटर, चुकंदर, हरा धनिया और शकरकंद आदि पर सेंधा नमक और काली मिर्च पाउडर डालकर खाया जा सकता है।

थोड़ा-थोड़ा खाएं

ऐसे कई लोग हैं जो व्रत के दौरान दिनभर कुछ नहीं खाते, और जब खाते हैं तो भूख से अधिक खा लेते हैं, जैसे कि एक प्लेट भरकर फलाहारी आलू, सिंघाड़े का हलवा, थोड़े-से आलू के चिप्स और एक गिलास दूध। इससे स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचेगा और वज़न भी बढ़ेगा। एक-साथ खाने के बजाय बेहतर है कि आप दिनभर में तीन-चार बार थोड़ा-थोड़ा खाएं।

शरीर को आराम दें

इस दौरान खानपान में बदलाव होने के कारण आपके दिमाग़ और शरीर को खानपान के पैटर्न को समझने में समय लगेगा। इस स्थिति में थोड़ा आलस्य महसूस हो सकता है या चिड़चिड़ाहट हो सकती है। बेहतर होगा कि समय-समय पर आराम करें। रात को जल्दी सोएं और भरपूर नींद लें। यदि दफ़्तर में हैं तो दिमाग़ और शरीर को अधिक मेहनत न कराएं।

दिवाली की तैयारी कई महीनों पहले से ही शुरू हो जाती है। अमूमन महिलाएं दिवाली से पहले अपने घर के कोने-कोने की सफाई कंप्लीट कर लेना चाहती हैं। यूं तो हम सभी अपने घर को समय-समय पर साफ करते हैं, लेकिन दिवाली के अवसर पर घर के हर कोने को साफ किया जाता है।

दिवाली पर आपकी क्लीनिंग को बेहद आसान बनाएंगे ये गैजेट्स

दिवाली वर्ष में एक बार आने वाला ऐसा त्योहार होता है, जिसकी तैयारी कई महीनों पहले से ही शुरू हो जाती है। अमूमन महिलाएं दिवाली से पहले अपने घर के कोने-कोने की सफाई कंप्लीट कर लेना चाहती हैं। यूं तो हम सभी अपने घर को समय-समय पर साफ करते हैं, लेकिन दिवाली के अवसर पर घर के हर कोने को साफ किया जाता है। अगर आप दिवाली की सफाई बिना किसी परेशानी के बेहद ही आसान तरीके से करना चाहती हैं तो इन गैजेट्स की मदद ले सकती हैं। हालांकि, ऐसा करने में बहुत अधिक समय व मेहनत खर्च करना पड़ता है। कई बार महिलाओं का बहुत अधिक समय दिवाली की सफाई करने में ही खर्च हो जाता है। लेकिन अगर आप अपने समय व मेहनत को बचाना चाहती हैं तो कुछ गैजेट्स को खरीद सकती हैं। यह क्लीनिंग गैजेट्स आपके घर की सफाई के काम को ना केवल आसान बनाते हैं, बल्कि इससे आपको अधिक बेहतर रिजल्ट भी मिलते हैं।

खरीदें स्क्रीन क्लीनिंग ब्रश

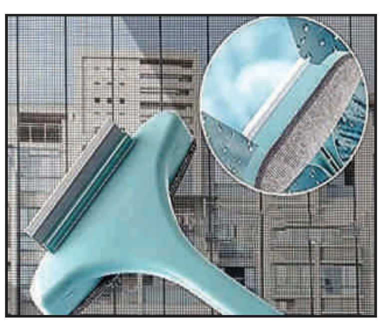

यह एक मल्टीफ़ंक्शनल स्क्रीन ब्रश होता है, जिसकी मदद से आप ग्लॉस, खिड़कियों, काउंटरटॉप आदि कई जगहों की बेहद आसानी से सफाई कर सकती हैं। आप इसे लिंट ब्रश के रूप में भी उपयोग कर सकती हैं और अपने कपड़े, सोफे आदि से धूल और बालों को हटा सकते हैं। इसकी खासियत यह है कि इसे गीला व व सूखा दोनों तरह से इस्तेमाल किया जाता है। धूल हटाने की सफाई इसे सूखा उपयोग करें, वहीं विंडो क्लीन करने के लिए इसे गीला इस्तेमाल करें।

खरीदें माइक्रोफाइबर फैन क्लीनिंग डस्टर

यह एक बेहद ही काम का प्रोडक्ट है, जो दिवाली की क्लीनिंग के दौरान आपके बेहद ही काम आने वाला है। यह वास्तव में एक फैन क्लीनिंग डस्टर है, लेकिन आप इससे सिर्फ फैन ही नहीं, बल्कि अपने घर के कई कोनों को आसानी से साफ कर सकती है। फर्श की सफाई करने से लेकर आप झूमर, दीवारें व कई ऐसी जगहों को क्लीन कर सकती हैं, जिसे हाथों की मदद से साफ करना काफी कठिन है। माइक्रोफाइबर फैब्रिक के उपयोग के कारण आपको अधिक बेहतर रिजल्ट मिलता है।

खरीदें शॉवर हेड क्लीनिंग ब्रश

दिवाली की सफाई के दौरान बाथरूम को साफ करना काफी मुश्किल होता है और इसमें काफी वक्त भी लगता है। मसलन, अगर आप शॉवर हैड को क्लीन करते हैं तो उसके छोटे-छोटे छेदों को साफ करना यकीनन एक टफ टास्क है। ऐसे में आप शॉवर हेड क्लीनिंग ब्रश का इस्तेमाल करें। इसके ब्रश ऐसे होते हैं जो उन छोटे छेदों को अनक्लॉग करके उसे अच्छी तरह साफ करने में आपकी मदद करते हैं। हालांकि, इस ब्रश की मदद से आप शॉवर हेड के अलावा अपना फोन या घर की टैप आदि को भी साफ कर सकती हैं।

खरीदें इलेक्ट्रिक स्पिन स्क्रबर

दिवाली पर जब महिलाएं अपने घर को साफ करना शुरू करती हैं तो वह हर कोने को साफ करने के लिए उसे अच्छी तरह रगड़ती हैं। जिसके कारण उनके हाथों से लेकर कमर तक में दर्द हो जाता है। लेकिन अगर आप इस दिवाली इलेक्ट्रिक स्पिन स्क्रबर खरीदती हैं तो आपको अपने घर को रगड़ने की मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। आप अपने फर्श से लेकर दीवारों, शॉवर, बाथटब, किचन आदि जगहों पर इस इलेक्ट्रिक स्पिन स्क्रबर का इस्तेमाल करें। यह कुछ ही मिनटों में उस जगह को एकदम से चमका देगा।

बाजार से परफ्यूम क्यों खरीदना? बस इन एसेंशियल ऑयल का करें इस्तेमाल

गुलाब के फूलों की खुशबू से बेहतर दूसरी खुशबू शायद ही कोई और हो। इसलिए आप रोज एसेंशियल ऑयल को बतौर परफ्यूम इस्तेमाल करें। इसकी महक काफी तेज होती है, इसलिए आपको इस तेल का उपयोग विवेकपूर्ण तरीके से करना चाहिए। एक बूंद आपको प्यारी महक देगी।

हम सभी अपनी डे टू डे लाइफ में तरह-तरह के परफ्यूम का इस्तेमाल करना पसंद करते हैं। इनकी महक आपको एक फील गुड देता है। लेकिन कई लोगों को परफ्यूम के इस्तेमाल के कारण परेशानी होती है। ऐसे में सबसे अच्छा तरीका है कि आप एसेंशियल ऑयल को ही परफ्यूम की तरह इस्तेमाल करें। यह ना केवल आपको पूरा दिन महकाने में मदद करेंगे, बल्कि आपको अन्य भी कई लाभ मिलेंगे। कई परफ्यूम में फ़्थेलेट्स जैसे हानिकारक सिंथेटिक तत्व होते हैं, वहीं दूसरी ओर एसेंशियल ऑयल सिंथेटिक नहीं होते हैं और इनमें वास्तव में उपचार गुण हो सकते हैं।

जैसमीन एसेंशियल ऑयल

जैसमीन एसेंशियल ऑयल एक ऐसा ऑयल है, जिसे परफ्यूम के रूप में आसानी से इस्तेमाल किया जा सकता है। यह महंगा है, लेकिन किसी खास अवसर के लिए इसे इस्तेमाल किया जा सकता है। इस तेल में एक मीठी, फूलों की सुगंध है जो आपको ऐसा महसूस कराएगी कि आप चमेली के बगीचे से गुजर रहे हैं। चमेली के तेल में अपनी मादक सुगंध के अलावा चिंता को कम करने की क्षमता भी होती है। तो ऐसे में आप खुद को तनावमुक्त रखने के लिए भी इसके इस्तेमाल पर विचार कर सकते हैं।

रोज एसेंशियल ऑयल

गुलाब के फूलों की खुशबू से बेहतर दूसरी खुशबू शायद ही कोई और हो। इसलिए आप रोज एसेंशियल ऑयल को बतौर परफ्यूम इस्तेमाल करें। इसकी महक काफी तेज होती है, इसलिए आपको इस तेल का उपयोग विवेकपूर्ण तरीके से करना चाहिए। एक बूंद आपको प्यारी महक देगी।

इलंग इलंग एसेंशियल ऑयल

इलंग इलंग एसेंशियल ऑयल इलंग इलंग फूलों से बनाया जाता है। इसकी सुगंध काफी आनंददायक होती है। यह आपको एक खुशनुमा अहसास करवाती है। अगर आप चाहें तो इसे भी बतौर परफ्यूम इस्तेमाल करने पर विचार कर सकते हैं। इसकी खुशबू काफी रोमांटिक होती है। इंडोनेशिया में तो नवविवाहितों के पलंगों के ऊपर इलंग इलंग के फूल बिछाए जाते हैं।

फलाहार के नए स्वाद

स्टफ्ड साबूदाना बड़ा, मीठे में पान की मिठाई और फलों का श्रीखंड बनाएं

नवरात्र में व्रत के दौरान फलाहार को लेकर अक्सर असमंजस बना रहता है कि हर रोज़ ऐसा क्या बनाएं, जो स्वाद में नयापन लिए हो और सेहत के लिहाज़ से भी ठीक हो। आपकी इस मुश्किल को दूर करने के लिए हम नौ दिनों के लिए नौ ख़ास रेसिपी यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। इन्हें तैयार करने में समय भी कम लगेगा और व्रत में नया फलाहार भी मिलेगा।

स्टफ्ड साबूदाना वड़ा

क्या चाहिए

दही- 5 बड़े चम्मच (हंग कर्ड), जीरा पाउडर- 1/2 छोटा चम्मच, आलू- 4 मध्यम आकार के उबले हुए, साबूदाना- 1 कप (6-8 घंटे पानी में

मूंगफली- 1/2 कप दरदरी पिसी, हरा धनिया- आवश्यकतानुसार, सेंधा नमक- स्वादानुसार, काली मिर्च पाउडर- 1/2 छोटा चम्मच। भरावन के लिए- दही- 5 बड़े चम्मच (हंग कर्ड), जीरा पाउडर- 1/2 छोटा चम्मच, सेंधा नमक- स्वादानुसार।

ऐसे बनाएं

बोल में आलुओं को मसल लें। इसमें साबूदाना, हरी मिर्च, हरा धनिया, सेंधा नमक, काली मिर्च पाउडर, अमचूर पाउडर और मूंगफली डालकर गूंध लें। अलग बोल में भरावन की सामग्री मिला

भरावन भरें। वड़े को बंद करके गर्म तेल में सुनहरा भूरा होने तक तल लें। साबूदाना वड़े को चटनी के साथ परोसें।

पान की मिठाई

क्या चाहिए

मिल्क पाउडर- 6 बड़े चम्मच, आइसिंग शुगर- 1 बड़ा चम्मच, खाने वाला नारियल तेल- 5 बड़े चम्मच, गुलकंद- 1 बड़ा चम्मच, पान का

लिए- फूल के आकार का सिलिकॉन सांचा।

ऐसे बनाएं

मिक्सिंग जार में मिल्क पाउडर, आइसिंग शुगर, नारियल तेल, गुलकंद और पान का पत्ता डालकर पीस लें। अब सांचे में पहले 4-5 टूटी फ्रूटी डालें फिर थोड़ा पिसा हुआ मिश्रण डालकर अच्छी तरह से दबा दें। मिश्रण भरे सांचे को फ्रिज में रखें और आधे घंटे बाद निकालें। अब हल्के हाथों से सांचे को दबाते हुए मिठाई को बाहर निकाल लें। इसे सामान्य तापमान में लाकर या ठंडा ही सर्व करें।

समा चावल फिरनी

क्या चाहिए

समा के चावल- 1/4 कप, दूध- 500 मिली, शक्कर- स्वादानुसार, बादाम और काजू- 1/2-1/2 बड़ा चम्मच कटे हुए, पिस्ता- 1 छोटा चम्मच कटा हुआ, इलायची पाउडर- 1/4 छोटा चम्मच, अनन्नास के टुकड़े- 1/4 कप, केसर- 5-6 धागे।

ऐसे बनाएं

कड़ाही में दूध उबलने रखें। एक-दो उबाल आने पर समा के चावल

जब तक कि वो गाढ़ी न हो जाए। चावल पकने के बाद आख़िर में

काजू, पिस्ता और इलायची पाउडर डालकर मिलाएं। फिरनी को ठंडा करके अनन्नास के टुकड़े डालकर परोसें।

पनीर-केला रोल्स

क्या चाहिए

पनीर- 200 ग्राम, हरी मिर्च- 3 बारीक कटीं, नमक- स्वादानुसार, काली मिर्च- 1/4 छोटा चम्मच, हरा धनिया- ज़रूरत के अनुसार। लपेटने के लिए- कच्चे केले- 1-2, लौंग- 8-10, तेल- 2 बड़े चम्मच। सलाद के लिए- गाजर- 2 किसी हुई, ऑलिव ऑयल- 1 बड़ा चम्मच, तिल- 1/2 छोटा चम्मच, काली मिर्च पाउडर- 1/4 छोटा चम्मच, नमक- स्वादानुसार।

ऐसे बनाएं

कच्चे केले को छीलकर उसकी लंबी स्लाइस काट लें। इन स्लाइस को पैन में एक चम्मच तेल डालकर शैलो फ्राय करें। इन्हें टिशू पेपर

लें फिर इसमें हरी मिर्च, हरा धनिया, नमक और काली मिर्च पाउडर मिला दें। पनीर की छोटी-छोटी बॉल्स बना लें और केले की स्लाइस से लपेटकर उनमें लौंग लगा दें, ताकि ये खुलें नहीं। अब इन पनीर रोल्स को पैन में एक चम्मच तेल डालकर दोनों तरफ़ से सुनहरा होने तक शैलो फ्राय करें। सलाद बनाने के लिए कद्दूकस की हुई गाजर में नमक, काली मिर्च पाउडर, तिल और ऑलिव ऑइल मिलाएं। प्लेट में गाजर का सलाद और पनीर-केला रोल्स रखकर परोसें।